Table of Contents

[redacted]
[redacted]
[redacted]
[redacted]
[redacted]
[redacted]
1. [redacted]
2. [redacted]
3. [redacted]
4. [redacted]
5. [redacted]
6. [redacted]
7. [redacted]
8. [redacted]
9 [redacted]
10 [redacted]
11 [redacted]

नौ नरभक्षी और एक बदमाश

□□ □□□□□□□□
□□
□□ □□□□□

□□□□□ □□□□□□□

Rupa . Co

टाइपसेटिंग का कॉपीराइट © रूपा एंड कंपनी, 2010

2010 में प्रकाशित
रूपा पब्लिकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड
7/16, Ansari Road, Daryaganj,
नई दिल्ली 110 002

बिक्री केंद्र:

इलाहबाद बेंगलुरु चंडीगढ़ चेन्नई Hyderabad Jaipur Kathmandu
Kolkata Mumbai

सर्वाधिकार सुरक्षित।
इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशकों की पूर्व अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से पुनरुत्पादित, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

लेखक इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने के नैतिक अधिकार का दावा करता है।

टाइपसेट द्वारा
माइंडवेज़ डिज़ाइन
1410 चिरंजीव टावर
43 नेहरू प्लेस
नई दिल्ली 110 019

भारत में मुद्रित
बी.बी. प्रेस.
सी-243, सेक्टर 4
डीएसआईडीसी, बावाना
दिल्ली-110 039

दक्षिण भारत के जंगलों, उनके पक्षियों और जानवरों, विशेष रूप से हाथी और तेंदुआ, और उनके वनवासियों चेनसू, शोलागा, करुम्बा और पुजारी की स्मृति में, मैं गर्व और कृतज्ञता के साथ यह पुस्तक समर्पित करता हूं, उन पच्चीस वर्षों के नितांत आनंद के बदले जो उन्होंने मुझे उनके साथ परिचय बनाने और उसे बनाए रखने में दिए हैं।

□□□□□□□□□□

□□□□□

1. □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□
2. □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□
3. □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□
4. □□□□□□□□□□-□□□□□□□□□□ □□□□□□□□
5. □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□
6. □□□□□ □□ □□□□□□□□
7. □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□
8. □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□
9. □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□
10. □□□□□ □ □□□□□□□
11. □□□□□□□□ □□ □□□

परिचय
आदमखोर बाघ एक अपवाद है, क्योंकि सामान्य परिस्थितियों में भारतीय जंगलों का राजा एक सज्जन और नेक स्वभाव का होता है। वह केवल भोजन के लिए ही शिकार करता है, कभी भी अंधाधुंध नहीं, और उसका शिकार जंगल के जंगली जानवर होते हैं, या जब प्रलोभन मिलता है, तो सरकारी अभ्यारण्यों में चरने के लिए भेजे गए गाँव के मवेशी भी होते हैं।
कभी-कभी एक बाघिन अपने अधेड़ शावक या शावकों को शिकार को मारने का तरीका सिखाती है, जैसे बाघ को मारना चाहिए - गर्दन की रीढ़ तोड़कर। ऐसी विशेष परिस्थितियों में, शावकों को अभ्यास कराने के लिए एक साथ तीन या चार मवेशियों को मारा जा सकता है, लेकिन ऐसा वध कोई भी बाघ केवल मारने के आनंद के लिए जानबूझकर नहीं करता। एक बाघिन आमतौर पर एक बार में दो शावकों को जन्म देती है - हालाँकि मैंने व्यक्तिगत रूप से चार शावकों को भी देखा है - और ऐसा कहा जाता है कि नर बाघ बच्चों के जन्म के तुरंत बाद उनमें से आधे को खाकर प्रजाति को नियंत्रित करता है।
शिकारियों के बीच अक्सर इस बात पर बहस होती रही है कि बाघ अपने शिकार की गर्दन तोड़ने में कितना कुशल है, जबकि तेंदुए और पैंथर अपने शिकार का गला घोंटकर मारते हैं। दरअसल, हमला करते समय बाघ अपने शिकार के बगल में खड़ा हो जाता है, आमतौर पर अपना एक पंजा उसके कंधे पर रखता है और जानवर के आकार के अनुसार उसकी गर्दन या गले के पिछले हिस्से को पकड़कर उसके सिर को ज़मीन पर दबा देता है। फिर वह पंजे का इस्तेमाल एक लीवर की तरह करता है जिससे शिकार खुद ही गिर जाता है, जबकि बाघ उसका सिर दबाए रखता है। इस प्रकार, जानवर के शरीर का वजन ही गर्दन तोड़ने का कारण बनता है, न कि बाघ द्वारा उसे मरोड़ने की कोई क्रिया, हालांकि मेरा व्यक्तिगत मत है कि इसमें बाघ की भी कुछ भूमिका होती है। बाघ अपने जबड़े बहुत चौड़ा खोल सकता है, इसलिए कभी-कभी यह तय करना मुश्किल होता है कि शिकार को उसकी गर्दन के पिछले हिस्से से पकड़ा गया था या गले से, क्योंकि दांतों के निशान इस तरह से स्थित होते हैं कि दोनों में से कोई भी हो सकता है।
पैंथर और तेंदुआ व्यावहारिक रूप से एक ही जानवर हैं, हालांकि इनके आकार में भारी अंतर को लेकर काफी विवाद रहा है। इनमें से एक है 'थेंदू' या जंगली पैंथर, जो बाघ की तरह गर्दन तोड़कर शिकार करता है और कभी-कभी उसे बाघ समझ लिया जाता है। वहीं दूसरी ओर, गांवों के बाहरी इलाकों में रहने वाला छोटा तेंदुआ बकरियों और कुत्तों का गला घोंटकर उन्हें मारता है, और यहां तक कि चूहों और घरेलू मुर्गियों का भी शिकार करता है। पैंथर बाघ की तुलना में काफी कम शक्तिशाली जानवर है, आमतौर पर डरपोक स्वभाव का होता है, फिर भी यह भारतीय प्रायद्वीप, एशिया और अफ्रीका के जंगलों के सबसे आकर्षक निवासियों में से एक है।
दोनों प्रकार के आदमखोर जीव आम तौर पर मानव हस्तक्षेप के कारण ही पैदा हुए हैं। कभी-कभी कोई बाघ या तेंदुआ राइफल या गोली लगने से इतना घायल हो जाता है कि वह जंगल के जंगली जानवरों—या यहाँ तक कि मवेशियों—का शिकार करने और उन्हें मारने में असमर्थ हो जाता है, जो आमतौर पर उसका शिकार होते हैं। इसलिए, मजबूरीवश वह मनुष्य को मारने पर उतर आता है, जो सबसे कमजोर और दुर्बल प्राणी है और निहत्था होने पर अपना बचाव करने में पूरी तरह असमर्थ है। यही असमर्थता कभी-कभी आकस्मिक चोट के कारण भी हो सकती है, जैसे कि पैर में साही का कांटा चुभ जाना; और कभी-कभी नरभक्षी बनने की आदत बाघिन अपने शावकों को दे देती है। कभी-कभी जंगल में फेंके गए शवों को खाने से तेंदुओं में मानव मांस का स्वाद विकसित हो जाता है, जैसा कि उन क्षेत्रों के गांवों में महामारी फैलने पर होता है, हालांकि यह बहुत ही दुर्लभ है। ऐसे उदाहरण भी उतने ही दुर्लभ हैं जहाँ इनमें से कोई भी परिस्थिति इस प्रवृत्ति का कारण नहीं बनती।
आदमखोर बाघ या तेंदुआ, जब भी मौजूद होता है, तो पूरे इलाके के लिए आतंक और दहशत का कारण बनता है। ग्रामीण बेबस हैं और मानो अपनी किस्मत को स्वीकार कर चुके हैं। नियमित रूप से शिकार होते रहते हैं, अगर हत्यारा बाघ हो तो दिन और रात दोनों समय, और अगर तेंदुआ हो तो केवल रात में। बाघ अक्सर एक ही इलाके में बार-बार चक्कर लगाता है। मरने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है, लेकिन अंधविश्वास और मनोबल में कमी ग्रामीणों को अपने दुश्मन के खिलाफ कोई संगठित और सुनियोजित कार्रवाई करने से रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सड़कें सुनसान हैं, गांवों में यातायात रुक गया है, वन कार्य,

1

जोवलागिरी का नरभक्षी
जो लोग उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों और जंगलों में जा चुके हैं, उन्हें पहाड़ियों और घाटियों पर चांदनी की सुंदरता के बारे में बताने की आवश्यकता नहीं होगी, जो जंगल की घासों और विशाल पेड़ों के प्रत्येक पत्ते को जीवंत रूप से उजागर करती है, और नीचे की गहरी छायाओं को और भी रहस्यमय बना देती है, जहां चंद्रमा की किरणें नहीं पहुंच पाती हैं, शायद किसी शिकारी जानवर, चौकस हिरण या घात लगाए बैठे सरीसृप को, सभी व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से भोजन की तलाश में।
जोवलागिरी वन क्षेत्र में सब कुछ शांत प्रतीत हो रहा था, लेकिन फिर भी हर तरफ खतरा मंडरा रहा था और हत्याएं होने वाली थीं। तीन शिकारी, जिनके पास दो पुरानी बंदूकें थीं, मांस का शिकार करने के लिए निकले थे। उन्होंने एक जलकुंड के ढलान वाले किनारे पर चतुराई से एक छिपने की जगह बनाई थी और सूर्यास्त से ही उसमें बैठे हुए, हिरणों का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे, जो देर-सवेर अपनी प्यास बुझाने के लिए जरूर आएंगे।
समय बीतता गया। पूर्णिमा का चाँद आसमान के मध्य तक पहुँच चुका था और चारों ओर दिन के उजाले जैसा उजाला था। अचानक, बाईं ओर सदाबहार पेड़ों की घनी झाड़ियों से पत्तों के ज़ोर से सरसराने और गहरी गुर्राहट की आवाज़ सुनाई दी। वहाँ क्या हो सकता है? निश्चित रूप से जंगली सूअर! एक स्वादिष्ट भोजन, और साथ ही मांस जिसे बेचा जा सकता है! शिकारी इंतज़ार करते रहे, लेकिन जानवर, चाहे जो भी हों, बाहर नहीं निकले। अधीर होकर, तीनों में से कुशल निशानेबाज़ मुनियाप्पा ने गोली चलाने का जोखिम उठाने का फैसला किया। अपनी बंदूक उठाकर, उसने तब तक इंतज़ार किया जब तक कि आसपास के वातावरण से भी गहरी एक काली छाया स्पष्ट न हो जाए, और फिर गोली चला दी। एक गुर्राहट और झाड़ियों के फड़फड़ाने की आवाज़ आई, उसके बाद खाँसी की कई आवाज़ें आईं और फिर सन्नाटा छा गया।
सूअर नहीं, बल्कि बाघ! तीनों शिकारी डरते हुए और चुपचाप अपने गांव की ओर तेजी से भागे, और वहां उन्होंने अपनी इस हरकत के परिणाम को लेकर चिंता में पूरी रात बिताई।
लेकिन सुबह के समय सब कुछ ठीक निकला, क्योंकि एक जवान नर बाघ मरा पड़ा था, प्राचीन बंदूक से निकली गोली सीधे उसके दिल में जा लगी थी। इस तरह मुनियाप्पा और उसके दोस्त उस दिन गाँव के गुमनाम और दबी आवाज़ में मनाए जाने वाले नायक बन गए।
लेकिन अगली रात कहानी कुछ और ही थी। सूर्यास्त के साथ ही एक बाघिन की तीव्र, क्रोधित पुकार सुनाई दी, जो अपने मृत साथी को खोज रही थी। क्योंकि यह प्रजनन का मौसम था, और यह बाघिन, जो पिछली रात ही अपने साथी को ढूंढने में सफल हुई थी, उसकी अचानक अनुपस्थिति से बेहद नाराज थी, जिसका कारण उसने बिल्कुल सही ही मनुष्यों के हस्तक्षेप को बताया।
एक सप्ताह तक रात-दर-रात वह बेचैन होकर इधर-उधर घूमती रही, दिन में जंगल की गहराई से पुकारती और अंधेरे में लगभग गांव के बाहरी इलाके में दहाड़ती हुई सुनाई देती।
युवा जैक लियोनार्ड, जो एक ट्रॉफी हासिल करने के लिए उत्सुक था और जिसे एक अत्यावश्यक पत्र द्वारा गाँव बुलाया गया था, आठवें दिन की सुबह पहुँचा और स्थिति का जायजा लिया। उसे बताया गया था कि बाघिन हर जगह घूमती है, और जंगल के बंगले की ओर जाने वाले सुनसान रास्ते पर उसके कई पदचिह्न देखकर, उसने उसी शाम अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया और शाम पाँच बजे तक रास्ते के किनारे बने एक चींटी के टीले के पीछे छिप गया।

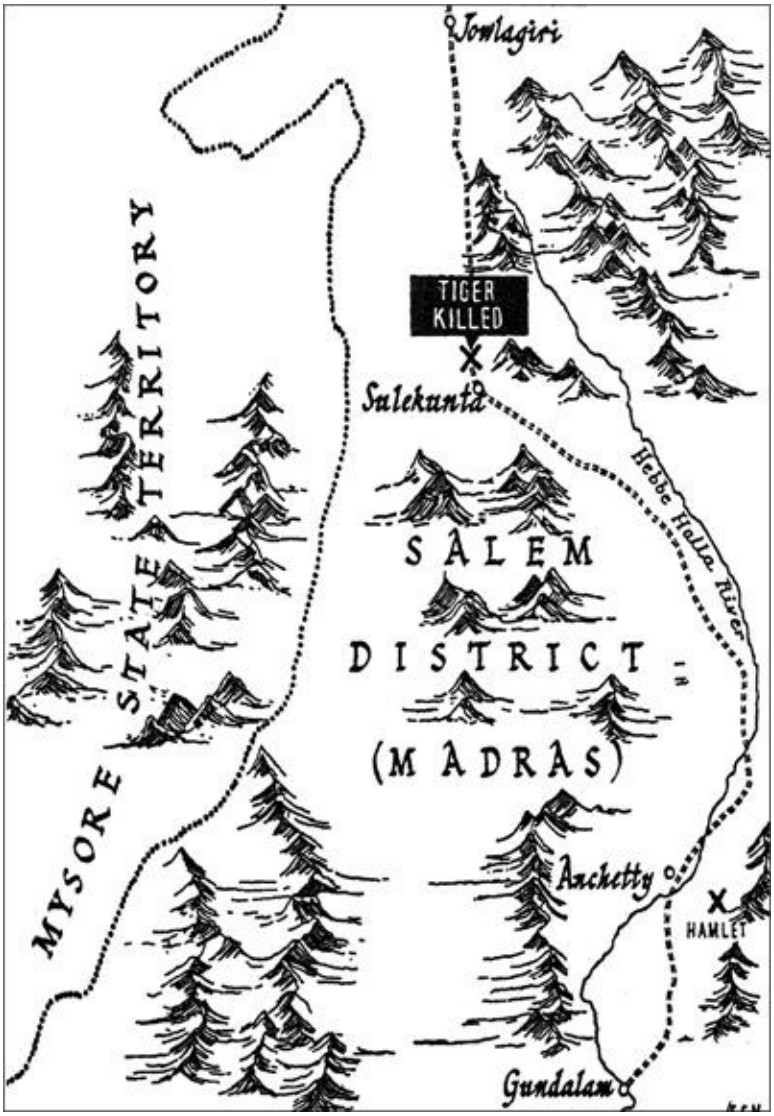
Jowlagiri
TIGER KILLED
Salekunta
Hebbe Halla River
SALEM DISTRICT
(MADRAS)
MYSORE STATE TERRITORY
Anchetty
HAMLET
Gundalam

[illegible]

[illegible] 6:15 [illegible] [illegible] [illegible]

xxxxx xx xxx xxxxx xx xx xxx xxx xx, xxxxx xx xxxxx xxxxxx xx xxxxxx xxxxxx x xx, xx xxxxxxx xx xxxxxx xx xxx xxxxx xxx xxxxxxx xx xx-xxx xxxxx xxxxx xxx xxxxxxxxx xxxxxxx xxx xxx xx, xxxxx xxx xxx xxxxxxxxxx x xxxxx xxxxxxxxx xxxxxxx xxxxx xxxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx xx xxx xxx xxxxx xx xxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxxxx xx xxxxx x xx xxxxx xxxxxxxx xx xxx xxxxx xxxxx, xxxxx xx xxxxx xx xxxxxx xxx xxxxx xx, xxxxxxxx xxx xx xxxxxxxx xxx xxx xxxxx xxxxxxxx xxxxxxx xxxxx xxxxxxx, xxxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xx xx xxxxxxxxxxxx xxxxxx xxxxxxxxx xxxxxx 3 xxxx xx xxx xxxxx xxx xx xxxxxx xxx xx xx xx xxx xxxxx xxxxxxx xxx xxx xxxxxxx xxxxxxxx xxxxx xxx xx xx xx xxxxx xxxxx xxxxx xxx xx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxx xxxxxxxx xxxxx xxxxxxx

xxxxxx xxxxx-xxxxx xxxxxx xx, xxxxxxxxxx xxx xx xxxxxx xxxxx xxxxx xxxxxxx xx xxx xxx xx xx xxxxx xxxxxx xx xx xx xxx xxx xxxxx xxx xxxxxx xx xxxxxx xx xx xxx xxxxx xx xx xxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxxxxxxx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxx xxxxxxx xxxxx xx xxx xxx xxxxxxxx xx xxxxxxxxxxx xx xxxxx xx xx xxxxx xx xx xxxxxx xx xxx xxxxxxx xxx xx xx xxxxx xxxxx xxxxxxx xx xxxxx xxxxxx xx, xx xxxxx xx xxxxx xxx xxx xxx xxx xxxxx 5 xxx xx xxxxx xx xxx xxxxx xx xxxxxxx xxxxx-xxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxxxxxxx xxxxxx xxxxxx xxxxxx xxxxxx xxxxx xxx xx xxxxx xxxxxx xx xx xxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx xxxxx xxx xxxxxx xxx xx xxx xxxxxxx xx xxx xxxxxxxxxx xx xxxxxxx xxxxx xx xx xx xxxxx xx xxx xxx xxxxx xxxxx xx-xx xxxxx xxx xx xx xx xx xxxxxxxxxx xxx xxxxx xxx xx xxxxx xx xxxxxxx xxxxxx xx xxx xxxxxx xx xx, xx xxx xx xxxxxx xxxxx xx xxxxxxxx xx xxxxxxx xxx xx xxxxxx xxx xxx xxxxx xxxxxx xxxxxxx xxxxxx xxxxxxx xx xxxxxx xxxxx xxxxxx xxxxxxx xxx xxxxx xxxx, xxxxx xxxxx xxx xx xxxxxx xx xxx xx, xx xxx xx xxxxx xx xx xxx xx xxxxx 'xxx' xx xxxxx xxxxxx xxx xxxxxx xx xxxxx xx xxxxxxx xxxxx, xxxxxxxx xxx xxxxxx xx xx xxxxx xxxxx xxx xxx xx xxxxxxx xxxxx xxxxxxx xxx xxxxx xx xxxxx xx xxx xx xxxxxx xx xxx xx xx xx xxxxx xxxxxx xxxxx xx xxxxxx xx xxx xxx x xxx xx, xx xxx xxxxx xxx xxxxxx xxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxx xxx xxxxxx xxx xxxxx xxx, xxx xxxxx xxxxxx xx xxx xxx xxx xx xxxxx xxx xx xxx xx xxx xx xxx

xxxxxxxx xx, xxxxx xx xxxxx xxxxx xxxxx xx xx xxxxx xxxxxx xxxxx xxx xx xxxxx xxxxxxx xxxxxx-xxxxx xxxxx x xxx xxx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxxxxx xxx xx xxxxx xx xx xxxxx xxx xxx xx xxxxxxxxx xx xx xx xxx xxxxx xxx xxxxxxxx xxxxxxxxx xx xxxxxxx 'xx-xx-xx' xx xxxxxx xxxxx xxx xx, xxxxxxxx xxx xx xx xxxxxxxx xxxxxxxxxx xxxxx xxxxxxxx xx xxxxx xxxxxx-xxxxxxx xx xxxxxx xxx xxx xxx xxx xxx xx xxx xxx xx xxx xxxxxx xx xxxxxxxx xx xxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxxx xx xxxxx xxxxx xxx xx xx xxxxx xxxxxx, xxxxxxxx xxxxxx, xxxxx xx xxxxx xxx xxxxx xx xxx xx xxx xxxxx xxxxx xxxxxxxx xx xxxxx xxxxxx xxx, xxx xxx xxxxx xx xxx xxxxxx xxxxxx xx xxx xx xx xxxxx xxxxx xxxxx xx xxx xxxxxx xxx xxxxxx xxx xx, xxxxxx xxx xxxxxx xx xx xxxxxx xxxxxxx xx xxxxx xxx xxx, xxxxx xxxxxx xx xxxxxx xxxxx xxxxx xxx

xxxxxx xx xxxxxx xxxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxxxxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xxx xxxxx xxx xxx xxx xx xxxxxxx xxxxx xx xxxxxxx xxx xxxxxx xxx xxxxxxxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxx xxxxxx xx xx xxxxx xxx xxxxxx 'xxxxxx-xxxxx, xxxxxx-xxxxx' xxxxxx xx xxxxxxxxxx xxxxx xxxxx xxx, xx xxxxxx xxx xxxxxxxx xxx xxx-xxx x xxx xxx xxxxxx xxxxx xx xxxxx xx xx xxxxxx xxxxxxxxx xx xxx xxxxx xxxxx xx xxxxxxxxxxxx xx xxxxxx xxxxxx xxxxx xxxxx, xxxxx xx xxxxxxx xxxxxxxx xx xxxxx xxxxxxxx xxxxx xxxxxxx xx xxxxxxx xx xx xxx xxxxxx xx xx xxxxxx xxx x xxx xx xx xxx xxx xxxxx xxx xxx

xxx xxxxx-xxxxx xxxxxxx xxxxx xxx xxxxx xxxxx xxxxx xx xx xxxxxx xxxxx xxxxxx xxxxxx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxx xxxxx xx xx xx xx-xxx xx xxx xxxxxx xxxxx xxxxxxxx xxxxx xx xxxxxx xxx xxxxx xx xxxxx xxx, xx xxx xx xxx xx, xxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxx xxxxxxx xxxxxx xx xxxxxx xxxxx xx xxxxxxx xxx xxxxxx xxx xxxxx xxxxx xxx xxxxx xxx, xxx xxxxx xxxxx xx xxxxxxx xxxxxxx xxx xxx xxxxxx xx xxx xxx, xxxxxxx xxxxxxxxx xxxxx xx xx xxx xxxx xx, xxxxxx xxxxx; xxxxxx xx xx xxxxx xxxxx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxxx xxx xxx xxx xx xxxxx xx xxxxx xxx xxx xxxxxxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxxxxx

xx xxx xxxxxx xxx xx xxxxxx xxxxx xx xxxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxx xxxxx xx xx xxx, xx xxxxxxxxx xxx xxxxxxx, xx xx xxx xxx xxxxx xx xxxxxx xxx xx xxx xxxxxxx xx xxxxx xxx, xxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxxxx xxxxxxxx xxx xxxxx xx xxxxxxxxx xx xxxxxx xxxxx xxx xx xxx xxxxx xxx xx xxxxxx xxxxx xx xx xxxxx xxx,

किया गया था और फिर उसे खा जाने के लिए इस स्थान पर लाया गया था। बाघ ने पहले ही अपना भोजन शुरू कर दिया था और दुबली छाती का कुछ हिस्सा खा चुका था, तभी तीर्थयात्रियों के समूह ने उसे परेशान कर दिया।
मैंने विशेष रूप से यह जानने की कोशिश की कि क्या मेरे सूचनादाता या उसके साथियों ने बाघ के कानों में कुछ असामान्य देखा था, लेकिन जाहिर है कि वे सभी इतने भयभीत थे कि किसी भी दोष पर ध्यान नहीं दे पाए।
मैं अपने तीन साथियों के साथ जल्दी से सुलेकुंटा के लिए रवाना हुआ और शाम ढलने के करीब पहुंचा; मुझे यह स्वीकार करना होगा कि यात्रा के अंतिम दो मील बहुत असुविधाजनक रहे, क्योंकि हमें दो खड़ी ढलान वाली पहाड़ियों के बीच की घाटी से गुजरना पड़ा जो घनी बांस से ढकी हुई थी। लेकिन हमें अचानक एक अकेले हाथी की चिंघाड़ के अलावा कुछ भी सुनाई या दिखाई नहीं दिया, जो कुछ समय से इन इलाकों में रह रहा था और तीर्थयात्रियों के लिए काफी परेशानी का सबब बना हुआ था, जिन्हें वह छोटे समूहों में होने पर दौड़ाना पसंद करता था। लेकिन यह एक अलग कहानी है।
ठीक से शिविर लगाने का समय नहीं था, इसलिए हमने मंदिर के सुनसान सामने वाले हिस्से में ही सोने का फैसला किया। सामान्य परिस्थितियों में तो मैं और मेरे साथी ऐसा बिल्कुल नहीं करते। लेकिन रात होने और आदमखोर भालू के पास होने से सारे संशय और सिद्धांत धराशायी हो जाते हैं। मैं भरी हुई राइफल लेकर पहरा दे रहा था, जबकि मेरे तीनों साथी पास में पड़ी झाड़ियाँ और सड़ी हुई लकड़ियाँ तेज़ी से इकट्ठा कर रहे थे ताकि आग जला सकें, जिससे हमें गर्मी और सुरक्षा मिल सके, क्योंकि उस समय चाँद नहीं था और जल्द ही अंधेरा होने वाला था। ऐसी स्थिति में, मंदिर के पास से आदमखोर भालू के गुजरने की उम्मीद में जागते रहना बेहद खतरनाक और व्यर्थ होता।
जल्द ही हमारे पास एक तेज़ आग जल रही थी, जिसके अंदर की तरफ हम बैठे थे, घने जंगल की रात से दूर, जहाँ हमारे बिना किसी को पता चले, हत्यारा दो फीट की दूरी पर आसानी से छिपा हो सकता था। ध्यान से सुनते हुए, हमें कभी-कभी सांभर की गहरी गड़गड़ाहट सुनाई देती थी, और मैं हिरण की कर्कश आवाज भी पहचान सकता था, लेकिन ये आवाजें लगातार नहीं आ रही थीं, जिससे पता चलता है कि भारतीय जंगल के राजा जैसे किसी बड़े दुश्मन से जानवर बहुत ज्यादा भयभीत नहीं हुए थे। आधी रात के बाद हमने दो-दो के समूह में, एक बार में तीन घंटे के लिए पहरा देने का इंतजाम किया, और मैंने अपने एक साथी के साथ पहली बारी ली। बाकी दोनों जल्द ही सो गए। हालांकि, कुछ भी अप्रिय नहीं हुआ, सिवाय इसके कि अकेला हाथी, जो आग की अचानक झलक पाने के लिए काफी करीब आ गया था, एक बार फिर चिंघाड़ा और भाग गया। रात करीब 2 बजे एक ककुर (भोंकने वाला हिरण) ने तीखी आवाज निकाली, लेकिन चूंकि यह आवाज जारी नहीं रही, इसलिए मैंने अनुमान लगाया कि किसी भटकते हुए तेंदुए ने उसे परेशान किया होगा। तीन बजते ही मैंने सो रहे दोनों आदमियों को जगाया और खुद भी गहरी नींद में सो गया। मेरी नींद एक भूरे रंग के जंगली मुर्गे की तेज आवाज से खुली, जो उगते सूरज को प्रणाम कर रहा था।
पास के कुएँ के पानी से बनी गर्म चाय और कुछ भोजन ने हमें नई ऊर्जा और हिम्मत दी, जिसके बाद मैं विशाल पीपल के पेड़ के पास गया और बूढ़े पुजारी के अवशेषों का निरीक्षण किया। दिन में गिद्धों और रात में लकड़बग्घों और सियार ने उनका बुरा हाल कर दिया था, क्योंकि अब केवल कुछ साफ-सुथरी हड्डियाँ ही बची थीं। उन्हें देखकर मैं उस बूढ़े व्यक्ति को याद करने लगा जिसने पिछले चालीस वर्षों से इस मंदिर की देखभाल की थी, जो प्रतिदिन उसी दृश्य को देखता था जिसे मैं अब देख रहा था, वही सांभर, काकुर और हाथी की रात की आवाज़ें सुनता था जो मैंने उस रात सुनी थीं, और अब वह केवल कुछ हड्डियाँ बनकर उस पुराने पीपल के पेड़ की दरारों में सिमट कर पड़ा था।
अगले एक घंटे तक हमने इस उम्मीद में छानबीन की कि हमें जानवरों के पैरों के निशान मिल जाएं और शायद हत्यारे की पहचान हो जाए, लेकिन हालांकि हमें कुछ पुराने निशान दिखे, मैं निश्चित रूप से यह नहीं कह सकता था कि वे मेरी बाघिन द्वारा बनाए गए थे।
सुबह 9 बजे हम गुंडालम के लिए 23 मील की लंबी यात्रा पर निकल पड़े, जहाँ हम शाम 5 बजे के कुछ देर बाद पहुँचे। यहाँ, हाल ही में हुई हत्या के बारे में पूछताछ करने पर, मुझे हत्यारे के बारे में पहली पुख्ता जानकारी एक चरवाहे से मिली, जो उसी जलसंभर पर अपने मवेशियों की देखभाल कर रहा था जहाँ मैंने अपनी पिछली यात्रा में भैंस का चारा बाँधा था। उस व्यक्ति ने बताया कि उसका एक साथी था जिससे वह बात

2

गुम्मलपुर का चित्तीदार शैतान
तेंदुआ लगभग सभी उष्णकटिबंधीय जंगलों में पाया जाता है, और बाघ के विपरीत, यह भारत के जंगलों का मूल निवासी है; जबकि यह स्थापित हो चुका है कि बाघ ठंडे उत्तरी क्षेत्रों से अपेक्षाकृत हाल ही में आया है, वहीं अभिलेखों और अवशेषों से पता चलता है कि तेंदुआ—या पैंथर, जैसा कि इसे भारत में बेहतर जाना जाता है—प्राचीन काल से ही प्रायद्वीप में रहता आया है।
अपने छोटे आकार और अपेक्षाकृत कमज़ोर ताकत के साथ-साथ मनुष्यों के प्रति जन्मजात भय के कारण, पैंथर को अक्सर उपहास का पात्र माना जाता है, और कभी-कभी तो इसके प्रति आश्चर्यजनक लापरवाही भी दिखाई जाती है। इन्हीं दो कारणों से साहसी लेकिन सतर्क बाघ शिकारियों पर हमले हुए हैं और कभी-कभी उनकी मौत भी हो गई है। यहां तक कि किसी इंसान पर हमला करते समय भी पैंथर शायद ही कभी मारता है, बल्कि अपने छोटे लेकिन नुकीले पंजों से तेज़ी से काटने और खरोंचने तक ही सीमित रहता है; दूसरी ओर, बाघ के हमले का शिकार होने के बाद शायद ही कोई जीवित बचता है।
इस सामान्य नियम का एक भयावह अपवाद है, और वह है आदमखोर पैंथर। हालांकि ऐसे जानवरों के उदाहरण अपेक्षाकृत दुर्लभ हैं, लेकिन जब वे दिखाई देते हैं तो पैंथर अपने कहीं अधिक विशाल चचेरे भाई, बाघ के बराबर ही विनाशकारी शक्ति के रूप में सामने आता है। अपने छोटे आकार के कारण वह ऐसी जगहों पर छिप सकता है जहां बाघ नहीं छिप सकता, उसे पानी की आवश्यकता बहुत कम होती है, और अपनी शैतानी चालाकी और साहस के साथ-साथ आत्मरक्षा की अद्भुत क्षमता और खतरे के समय चुपके से गायब हो जाने की क्षमता में उसका कोई सानी नहीं है।
ऐसा ही एक जानवर था गुम्मलपुर का आदमखोर तेंदुआ। इस तेंदुए ने लगभग बयालीस इंसानों की हत्याओं का रिकॉर्ड बनाया था और अपनी असाधारण चालाकी के लिए ख्याति अर्जित की थी, जो लगभग मानवीय बुद्धि से भी कहीं अधिक थी। उससे जुड़ी कुछ भयानक कहानियाँ प्रचलित थीं, लेकिन यह निश्चित था कि लगभग 250 वर्ग मील के उस क्षेत्र में, जिस पर उसका निर्विवाद वर्चस्व था, उस तेंदुए का खौफ बना रहता था। सूर्यास्त से पहले, इस क्षेत्र के प्रत्येक गाँव की हर झोपड़ी का दरवाजा बंद कर दिया जाता था, कुछ दरवाजों को बक्सों या बड़े पत्थरों के ढेर से मजबूत किया जाता था, जिन्हें इसी उद्देश्य से रखा जाता था। अगली सुबह सूरज पूरी तरह से निकल आने तक डरपोक निवासी बाहर निकलने की हिम्मत नहीं करते थे। इस स्थिति का असर घरों की स्वच्छता पर तेजी से दिखने लगा, जिनमें से अधिकांश में किसी भी प्रकार के शौचालय नहीं थे, इसके लिए आस-पास की बंजर भूमि का उपयोग किया जाता था।
जब पैंथर को पता चला कि उसका मानव भोजन मिलना दिन-प्रतिदिन कठिन होता जा रहा है, तो वह और भी साहसी हो गया। दो बार उसने छोटी झोपड़ियों की छप्पर की दीवारों में छेद करके अपना रास्ता बनाया और अपने चीखते हुए शिकार को उसी रास्ते से बाहर खींच लाया, जबकि पूरा गाँव बंद दरवाजों के पीछे काँपते हुए जागता रहा और शिकार की चीखें सुनता रहा। एक बार, खुरदुरे तख्तों से बनी दीवारों में छेद करके अंदर आने में असफल होने पर, पैंथर ने छप्पर की छत से अंदर घुसने का अनोखा तरीका अपनाया। इस बार वह अपने शिकार को बनाए गए छेद से वापस नहीं ले जा सका, इसलिए क्रोध में आकर उसने झोपड़ी के चारों निवासियों
- एक आदमी, उसकी पत्नी और दो बच्चों - को मार डाला और फिर अपने पंजों से खरोंचते हुए बाहर अंधेरे में भाग गया और सुरक्षित हो गया।
ग्रामीणों को केवल दिन के समय ही कुछ राहत मिलती थी। तब भी वे बड़े-बड़े सशस्त्र समूहों में घूमते थे, लेकिन अब तक दिन के उजाले में तेंदुए के हमले की कोई घटना सामने नहीं आई थी, हालांकि उसे अक्सर भोर में गांव की सीमा के भीतर देखा गया था।
जब मैं जिला मजिस्ट्रेट जेप्सन के निमंत्रण पर गुम्मलापुर पहुँचा, तो वहाँ यही स्थिति थी। मुझे उनके क्षेत्र को इस विपत्ति से मुक्त करने का आदेश दिया गया था। कुछ निवासियों से प्रारंभिक बातचीत से पता चला कि वे बेहद निराश थे और पूर्वी नियतिवाद के अनुरूप उन्होंने यह मान लिया था कि यह

शैतान, जिससे उन्हें मुक्ति असंभव लगती थी, तब तक उनके साथ रहेगा जब तक कि उनमें से प्रत्येक का वध न हो जाए या उनके पास जिले से भाग जाने के अलावा कोई विकल्प न बचे।
जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि मुझे ग्रामीणों से न के बराबर सहयोग मिलेगा, क्योंकि उनमें से कई खुलेआम कहते थे कि अगर उन्होंने मेरी मदद करने की हिम्मत की तो शैतान को इसकी खबर लग जाएगी और वह उनका अंत कर देगा। दरअसल, वे दबी आवाज़ में बात करते थे, मानो उन्हें डर हो कि ज़ोर से बोलने पर पैंथर उन्हें सुन लेगा और उनसे बदला लेगा।
उस रात, मैं गाँव के बीचोंबीच एक कुर्सी पर बैठा था, मेरी पीठ उस इकलौते घर की ओर थी जिसकी दीवार बारह फुट ऊँची थी। मैंने एहतियात के तौर पर छत को काँटों और झाड़ियों की मोटी परत से ढक दिया था, ताकि अगर कोई तेंदुआ पीछे से मुझ पर कूद पड़े तो मैं उसे देख सकूँ। वह चाँद रहित रात थी, लेकिन साफ आसमान में अनगिनत तारे थे जिनसे मुझे तेंदुए के पास आने पर उसे देखने की पर्याप्त रोशनी मिलने की उम्मीद थी।
शाम छह बजे, निवासी अपने दरवाजों पर ताला लगाए हुए थे, जबकि मैं अपनी कुर्सी पर अकेला बैठा था, मेरी राइफल मेरी गोद में रखी थी, भरी हुई और तैयार, पास में गर्म चाय की एक थर्मस, एक कंबल, एक पानी की बोतल, कुछ बिस्कुट, एक टॉर्च, और निश्चित रूप से मेरा पाइप, तंबाकू और माचिस ही मेरा एकमात्र सहारा थे, जब तक कि सुबह नहीं हो जाती, तब तक लंबे इंतजार के दौरान।
सूर्य अस्त होते ही तीव्र चिंता का दौर शुरू हो गया, क्योंकि तारे अभी तक इतने चमकीले नहीं थे कि दृश्य को हल्का सा भी रोशन कर सकें। इसके अलावा, गाँव के ठीक पश्चिम में दो खड़ी पहाड़ियाँ थीं, जिन्होंने उस धुंधली अनिश्चितता को और बढ़ा दिया जो हाल ही में अस्त हुए सूर्य के कुछ परावर्तन से कम हो सकती थी।
मैंने अपनी राइफल को कसकर पकड़ा और चारों ओर देखा, मेरी आँखें सुनसान गाँव की गली के हर कोने पर दौड़ रही थीं। उस समय मैं जंगल में होना चाहता था, जहाँ जानवरों और पक्षियों की चेतावनी भरी आवाज़ों से मुझे पैंथर के आने की सूचना मिल जाती। यहाँ सन्नाटा पसरा था, और पूरा गाँव मानो वीरान था, क्योंकि उन अनेक निवासियों में से किसी की भी आवाज़ नहीं आ रही थी, जो मुझे पता था कि बंद दरवाजों के पीछे सुन रहे थे, और उस चीख का इंतज़ार कर रहे थे जो मेरी मौत और पैंथर के एक और शिकार का संकेत देगी।
समय बीतता गया और एक-एक करके तारे दिखने लगे, शाम 7:15 बजे तक उनकी हल्की रोशनी इतनी फैल गई कि मैं पूरे गाँव की सड़क को देख पा रहा था, हालाँकि सब कुछ थोड़ा धुंधला दिख रहा था। मेरा आत्मविश्वास लौट आया और मैं तेंदुए को अपनी ओर आकर्षित करने का कोई तरीका सोचने लगा, अगर वह आस-पास हो। मैंने बीच-बीच में ज़ोर से खांसने की कोशिश की और फिर खुद से बातें करने लगा, इस उम्मीद में कि मेरी आवाज़ तेंदुए तक पहुँच जाएगी और वह जल्दी से मेरे पास आ जाएगा।
मुझे नहीं पता कि मेरे पाठकों में से किसी ने कभी किसी कारण से, चाहे किसी आदमखोर तेंदुए को आकर्षित करने के लिए ही क्यों न हो, ज़ोर-ज़ोर से खुद से बात करने की कोशिश की है या नहीं। मुझे लगता है कि ऐसे लोग बहुत कम होंगे, क्योंकि मैं जानता हूँ कि खुद से बात करने वाले व्यक्ति की क्या छवि बन जाती है। मुझे यकीन है कि गाँव वालों के बीच मेरी भी यही छवि बन गई थी, जिन्होंने उस रात अपने बंद दरवाजों के पीछे से मेरी बातें सुनीं। लेकिन यकीन मानिए, घंटों तक ज़ोर-ज़ोर से खुद से बात करना और साथ ही किसी खूंखार शिकारी के चुपके से आने पर नज़र रखना कोई आसान काम नहीं है।
रात के 9 बजे तक मैं थक गया था और गाँव की गलियों में टहलने का मन हुआ। कुछ देर सोचने के बाद मैंने ऐसा ही किया, खुद से बातें करते हुए मैं सावधानी से एक गली से दूसरी गली में जाता रहा और बार-बार पीछे मुड़कर देखता रहा। लेकिन जल्द ही मुझे एहसास हुआ कि मैं खुद को बहुत बड़े खतरे में डाल रहा हूँ, क्योंकि पैंथर किसी भी कोने से, कूड़े के ढेर के पीछे से या किसी भी झोपड़ी की छत से मुझ पर हमला कर सकता था। अचानक बातें बंद करके मैं अपनी कुर्सी पर लौट आया, जिंदा वापस आने पर शुक्रगुजार था।
समय बहुत धीरे-धीरे और नीरसता से बीत रहा था, मानो घंटे भारी पहियों पर चल रहे हों। आधी रात हो गई और मुझे ठंड लगने लगी, क्योंकि पास के जंगल से, जो दो छोटी पहाड़ियों के पार शुरू होता था, एक तेज़ हवा चलने लगी थी। मैंने कंबल को अपने चारों ओर कसकर लपेट लिया और ज़रूरत से ज़्यादा तंबाकू का सेवन

करने लगा। रात के 2 बजे तक मुझे नींद आने लगी। गर्म चाय और बिस्कुट खाने के बाद, बोतल से ठंडा पानी मुंह पर छिड़का और कुर्सी से आधा दर्जन बार जल्दी-जल्दी उठने-बैठने से थोड़ी राहत मिली, और फिर जागते रहने के लिए मैं खुद से बातें करने लगा।
सुबह 3:30 बजे एक ऐसी घटना घटी जिसने मुझे अगले दो घंटों तक असहनीय परेशानी में डाल दिया। तेज़ हवा के साथ घने बादल उमड़ते चले आए और जल्द ही उन्होंने आसमान को ढक लिया और तारों को भी छिपा दिया, जिससे अंधेरा घना हो गया और एक गज की दूरी पर खड़े पैंथर को देखना लगभग नामुमकिन हो गया था। मैंने खुद को निस्संदेह एक मुश्किल स्थिति में डाल दिया था और अगर वह मुझ पर हमला करने का फैसला करता तो मैं पूरी तरह से उसके रहमो-करम पर था। मैं हर आधे मिनट में गली के एक छोर से दूसरे छोर तक टॉर्च की रोशनी चमकाने लगा, जो बहुत ज़रूरी था अगर मैं पैंथर के आस-पास होने पर अपनी जान बचाना चाहता था, हालाँकि मुझे लग रहा था कि मैं उस जानवर को गोली मारने का मौका गँवा रहा हूँ, क्योंकि टॉर्च की तेज़ रोशनी से वह शायद डरकर भाग जाएगा। फिर भी, एक संभावना थी कि वह रोशनी से न डरे, अगर मैं उसे देख पाता और एक भाग्यशाली निशाना लगा पाता, लेकिन ऐसा नहीं हुआ, क्योंकि सुबह होने पर भी मैं रात भर की व्यर्थ कोशिश के बाद टॉर्च की रोशनी चमका रहा था।
मैंने कुछ घंटों की नींद ली और दोपहर होते ही गाँव वालों से फिर पूछताछ करने लगा। उस सुबह मुझे ज़िंदा पाकर—जो उनकी उम्मीदों के बिल्कुल विपरीत था—और शायद मुझे आत्माओं से बात करने की शक्ति देने का श्रेय देते हुए, क्योंकि उन्होंने मुझे अपने गाँव में घूमते हुए बातें करते सुना था, वे मुझसे ज़्यादा बात करने लगे और मुझे उस जानवर के बारे में कुछ और जानकारी दी। ज़ाहिर है, तेंदुआ अपने इलाके में बहुत घूमता था, अनियमित रूप से और एक-दूसरे से काफ़ी दूर जगहों पर शिकार करता था, और जैसा कि मुझे पहले ही पता चल चुका था, कभी भी एक ही गाँव में लगातार शिकार नहीं करता था। पिछले तीन हफ़्तों में गुम्मलपुर में किसी इंसान की हत्या नहीं हुई थी, इसलिए इधर-उधर भटकने और तेंदुए को ढूंढने की उम्मीद करने के बजाय, जहाँ मैं था वहीं रहना ज़्यादा फ़ायदेमंद लग रहा था। भटकने के खिलाफ़ एक और कारण यह था कि यह जानवर दिन में शायद ही कभी दिखाई देता था, और इसलिए उससे मिलने की कोई संभावना नहीं थी, जैसा कि आदमखोर बाघ के मामले में हो सकता था। यह बताया गया था कि जानवर के दाहिने अगले पैर में चोट लगी थी, क्योंकि उसे पंजे को बगल की ओर रखने की आदत थी, एक ऐसा तथ्य जिसकी पुष्टि मैं बाद में तब कर पाया जब मुझे वास्तव में जानवर के पदचिह्न मिले।
दोपहर के भोजन के बाद, मैंने उस रात के लिए एक नई योजना बनाई, जिससे मुझे पिछली रात हुई भारी असुविधाओं से निश्चित रूप से मुक्ति मिल जाती। योजना यह थी कि मैं एक झोपड़ी का दरवाज़ा थोड़ा खुला छोड़ दूँ और उसके अंदर एक इंसान की हूबहू दिखने वाली पुतली रख दूँ; इस बीच, मैं उसी झोपड़ी के एक कोने में बक्सों की आड़ में छिपा रहूँगा। इससे मुझे उस दरवाज़े से जानवर के दिखाई देने पर या पुतली पर हमला करने पर भी उसे मारने का मौका मिल जाएगा, जबकि मैं अपनी आड़ में अपेक्षाकृत सुरक्षित और गर्म रहूँगा।
मैंने ग्रामीणों को योजना समझाई, और मुझे आश्चर्य हुआ कि उन्होंने उत्साहपूर्वक इसमें भाग लिया। एक झोपड़ी मुझे उस झोपड़ी के ठीक बगल में दी गई, जिसकी छत से तेंदुआ घुसकर चारों लोगों को मार डाला था। पुआल, एक पुराने तकिए, एक जैकेट और एक साड़ी से एक बहुत ही सजीव दिखने वाला पुतला तैयार किया गया। इसे झोपड़ी के दरवाजे के अंदर बैठने की मुद्रा में रखा गया, और दरवाजा आधा खुला रखा गया। मैं बक्सों की एक नीची दीवार के पीछे बैठ गया, जिसे झोपड़ी के दूसरे छोर पर तिरछे रखा गया था। झोपड़ी का फर्श लगभग 12 फीट लंबा और 10 फीट चौड़ा था। इतनी कम दूरी से, मुझे पूरा भरोसा था कि जैसे ही तेंदुआ दरवाजे पर दिखाई देगा, मैं उसे मार गिराऊंगा। इसके अलावा, अगर वह छत से या छप्पर की दीवारों से अंदर आने की कोशिश करता, तो मेरे पास उससे निपटने के लिए पर्याप्त समय होता। मामले को और भी यथार्थवादी बनाने के लिए, मैंने आस-पास की दोनों झोपड़ियों के निवासियों, विशेष रूप से महिलाओं को, निर्देश दिया कि वे रात में जितना संभव हो सके धीमी आवाज़ में बात करने का प्रयास करें, ताकि हत्यारे को उस क्षेत्र की ओर आकर्षित किया जा सके।
तुरंत आपत्ति उठाई गई कि कहीं तेंदुआ मेरी झोपड़ी के दरवाजे पर रखे पुतले पर हमला करने के बजाय उनकी किसी झोपड़ी में न घुस जाए। यह डर तभी दूर हुआ जब मैंने उनसे वादा किया कि अगर उन्हें जानवर के अंदर आने की कोशिश की आवाज सुनाई दे तो मैं उनकी मदद के लिए आऊंगा। संकेत के तौर पर मैं मदद के लिए

मैंने टॉर्च जलाई और झट से खड़ा होकर बक्सों की बाड़ को पार किया और खुले दरवाजे की ओर भागा, बाहर निकलने के लिए दौड़ा और रास्ते में पड़े पुतले से टकराते-टकराते बचा। मैंने टॉर्च की रोशनी दोनों दिशाओं में डाली, लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया। यह सोचकर कि शायद पैंथर अभी भी आसपास ही कहीं छिपा हो, मैंने टॉर्च की रोशनी हर कोने में डाली और धीरे-धीरे गांव की गली में चला गया, उसके मोड़ को सावधानी से पार किया और अचानक हमले के डर से कांपते हुए अगली गली में वापस आ गया। लेकिन हालांकि रोशनी ने गली के हर कोने, हर छत और हर संभावित छिपने की जगह को रोशन कर दिया था, मेरे दुश्मन का कहीं कोई निशान नहीं था। तभी मुझे इस जानवर की शैतानी चालाकी की प्रतिष्ठा का असली महत्व समझ में आया। जैसे मेरी छठी इंद्री ने खतरे के समय मुझे नींद से जगाया था, वैसे ही एक छठी इंद्री ने तेंदुए को चेतावनी दी थी कि यह कोई साधारण इंसान नहीं है, बल्कि एक ऐसा इंसान है जो उसे खत्म करने पर तुला हुआ है। शायद टॉर्च की तेज रोशनी ने ही उसे आखिरी क्षण में विचलित कर दिया था; लेकिन, कारण चाहे जो भी हो, आदमखोर जानवर चुपचाप, पूरी तरह से और प्रभावी ढंग से गायब हो गया था, क्योंकि हालांकि मैंने उस रात गुम्मलपुर की सभी गलियों में उसकी तलाश की, लेकिन वह उतनी ही रहस्यमय तरीके से गायब हो गया था जितनी रहस्यमय तरीके से वह आया था।
नींद में सो जाने की निराशा और खुद पर झुंझलाहट पर काबू पाने के लिए मैंने किसी भी कीमत पर इस दरिंदे से बदला लेने का दृढ़ निश्चय कर लिया।
अगली सुबह, जिस जगह से तेंदुए ने गाँव में प्रवेश किया था और एक कीचड़ भरे नाले को पार किया था, वहाँ उसके पदचिह्न स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। वहीं मैंने पहली बार शिकारी के पदचिह्न और उसके दाहिने अगले पैर का विशिष्ट निशान देखा, जिसका पंजा पदचिह्न के रूप में स्पष्ट नहीं था, बल्कि धुंधला सा था, क्योंकि जानवर की आदत थी कि वह अपने पंजे को किनारे पर रखता था। इस प्रकार मुझे यह स्पष्ट हो गया कि तेंदुए के पैर में कभी चोट लगी थी, जिसके कारण वह आदमखोर बन गया था। बाद में मुझे स्वयं घायल पैर देखने का अवसर मिला, और शायद आदमखोर बनने की उसकी प्रवृत्ति के कारण के बारे में मेरा अनुमान गलत था; क्योंकि मुझे बाद में पता चला कि जानवर को उन शवों को खाने की आदत पड़ गई थी जिन्हें उस क्षेत्र के लोग पिछले वर्ष हैजा महामारी के बाद रीति-रिवाज के अनुसार जंगल में ले जाकर गिद्धों के लिए छोड़ देते थे। आसानी से मिलने वाले इन भोजनों ने पैंथर को मानव मांस का स्वाद चखा दिया था, और उसके पैर में लगी चोट, जिसने सामान्य शिकार और तेज गति से चलने में कठिनाई पैदा कर दी थी, उसे एक भारतीय गांव के लिए सबसे खतरनाक खतरे - एक आदमखोर पैंथर - में बदलने का निर्णायक कारक बन गई थी।
मुझे यह भी एहसास हुआ कि, भले ही पैंथर में लगभग मनुष्यों जैसी अनुमान लगाने की शक्ति थी, लेकिन पिछली रात टॉर्च की रोशनी से उसका पीछा करते हुए मैंने उसे जो डराया था, उसके बाद वह लंबे समय तक गुम्मलपुर में फिर से दिखाई नहीं देगा।
इसलिए यह स्पष्ट था कि मुझे अपने कार्यक्षेत्र को बदलना होगा, और इसलिए, काफी सोच-विचार के बाद, मैंने देवराबेट्टा गांव की ओर बढ़ने का फैसला किया, जो वन पहाड़ियों की एक श्रृंखला के पार तिरछे में स्थित था और लगभग अठारह मील दूर था, जहां पैंथर पहले ही पांच शिकार कर चुका था, हालांकि वहां एक महीने से कोई नहीं गया था।
इसलिए, मैंने उसी दिन सुबह XXX बजे से पहले, जल्दी दोपहर का भोजन करने के बाद, अपना सफर शुरू किया। रास्ता कठिन था, क्योंकि यह दो पहाड़ियों से होकर गुजरता था। उनके बीच स्थित घाटी में एक छोटी सी जंगली धारा बह रही थी, और उसके किनारे मैंने एक बड़े नर बाघ के ताज़े पदचिह्न देखे, जो लगभग 200 गज तक जलधारा का पीछा करने के बाद दूसरी ओर चला गया था। जाहिर है, वह उस सुबह जल्दी ही वहाँ से गुजरा था, जैसा कि नदी की रेत से रिसकर पदचिह्नों में आई नमी की सूक्ष्म बूंदों से स्पष्ट था, जो सुबह की धूप में वाष्पित नहीं हो पाई थीं। हालाँकि, अपने काम पर दृढ़ रहते हुए, मैंने बाघ का पीछा नहीं किया और शाम 5 बजे के ठीक बाद देवराबेट्टा पहुँच गया।
जब मैं वहाँ पहुँचा, तब निवासी अपनी झोपड़ियों में बंद होने की तैयारी कर रहे थे और उनके पास मुझसे बात करने का समय या इच्छा नहीं थी। हालाँकि, मुझे यह समझ में आया कि वे इस बात से सहमत थे कि आदमखोर का आना किसी भी दिन संभव है, क्योंकि उसके आखिरी बार आने के बाद से पूरा एक महीना बीत चुका था और वह इतने लंबे समय तक कभी दूर नहीं रहा था।

समय कम होने के कारण, मैंने जल्दी से सबसे ऊँची दीवार वाली झोपड़ी की तलाश की, जिसके सामने मैं उसी तरह बैठ गया जैसे गुम्मलापुर में अपनी पहली रात बैठा था। मैंने छत पर कुछ सूखी कांटेदार झाड़ियाँ जल्दी से बिछा दीं ताकि पीछे और ऊपर से होने वाले हमले से बचाव हो सके। ये कांटे गाँव से सटे एक खेत की बाड़ से लाए गए थे, और मुझे उन्हें लाने वाले आदमखोर सांप के जल्दी प्रकट होने के डर से अपनी राइफल के साथ उनके साथ जाना पड़ा था।
देवराबेट्टा, गुम्मलपुर की तुलना में काफी छोटा गाँव था और जंगल के बहुत करीब स्थित था, यह एक ऐसा तथ्य था जिसका मैंने स्वागत किया क्योंकि इससे मुझे जंगल के जानवरों और पक्षियों द्वारा दी जाने वाली चेतावनी भरी आवाजों के माध्यम से मांसाहारी जानवरों की गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने में मदद मिलेगी, बशर्ते मैं उनकी सुनने की सीमा के भीतर रहूँ।
रात बड़ी तेज़ी से छा गई, हालाँकि इस बार आकाश में अमावस्या का पतला सा चाँद दिखाई दे रहा था। पास के जंगल से आती हुई मुर्गे की कभी-कभार सुनाई देने वाली बांग और मोर की धीमी आवाज़ से मुझे पता चल रहा था कि सब ठीक है। और फिर रात हो गई, धुंधली तारों की रोशनी में देवराबेट्टा की मुख्य सड़क, टेढ़ी- मेढ़ी और गंदी गली, मानो किसी सपने में हो, मुश्किल से दिखाई दे रही थी। रात 8:30 बजे जंगल से एक सांभर हिरणी की रंभा सुनाई दी, और अपनी तेज़ आवाज़ के बाद लगातार कई चेतावनी भरी चीखें मारीं। निस्संदेह कोई शिकारी जानवर आसपास था और उसे चौकस हिरणी ने देख लिया था, जो जंगल के बाकी लोगों को अपनी जान बचाने के लिए आगाह कर रही थी। क्या वह तेंदुआ था या कोई बड़ा मांसाहारी जानवर? समय ही बताएगा, लेकिन कम से कम मुझे चेतावनी तो मिल गई थी।
हिरनी ने गुर्राना बंद कर दिया, और लगभग पंद्रह मिनट बाद, जिस दिशा में उसने पहली बार चेतावनी दी थी, उसी दिशा से मुझे एक बाघ की धीमी कराह सुनाई दी, जो लगातार दो बार दोहराई गई, फिर सब कुछ शांत हो गया। यह मिलन की पुकार नहीं थी, बल्कि जंगल के राजा की भोजन की तलाश में की गई सामान्य पुकार थी, जो जंगल के निवासियों को याद दिला रही थी कि उनका स्वामी शिकार की तलाश में निकला है, और उस रात उसकी प्रचंड भूख को शांत करने के लिए उनमें से किसी एक को मरना होगा।
समय बीतता गया, और फिर गली में मुझे कुछ हलचल दिखाई दी। मैंने अपनी राइफल उठाकर उस वस्तु पर निशाना साधा, जो धीरे-धीरे मेरे पास आ रही थी और गली के बीचोंबीच चल रही थी। क्या यह वही पैंथर था, और क्या वह इस तरह खुलेआम, गली के बीचोंबीच, बिना छुपने की कोशिश किए चल रहा था? अब वह लगभग तीस गज दूर था और फिर भी वह निडरता से आगे बढ़ रहा था, बिना किसी आड़ लेने या किसी वस्तु के किनारों पर रेंगने की कोशिश किए, जैसा कि तेंदुआ अपने शिकार का पीछा करते समय करता है। इसके अलावा, वह एक कमजोर और दुबला- पतला जानवर लग रहा था, क्योंकि अब मैं उसे काफी स्पष्ट रूप से देख पा रहा था। बीस गज की दूरी पर मैंने अपनी टॉर्च का बटन दबाया, जिसे मैंने उस रात अपनी राइफल से बांध रखा था।
जैसे ही प्रकाश की शक्तिशाली किरण उस खाली जगह को पार कर गई, उसने एक ग्रामीण कुत्ते को रोशन कर दिया, जिसे भारत में आमतौर पर 'अछूत कुत्ता' के नाम से जाना जाता है। भूखा और अकेला, वह इंसानी साथ की तलाश में आया था; वह तेज रोशनी की किरण को निश्चिंत होकर देखता रहा, और अपनी पतली पूंछ को धीरे से हिलाकर मित्रता का स्पष्ट संकेत दे रहा था।
एक साथी का स्वागत करते हुए, भले ही वह अकेला कुत्ता ही क्यों न हो, मैंने बत्ती बंद कर दी और अंगूठे और उंगली के इशारों से उसे अपने पास बुलाया। वह दबे पांव, अपनी अजीब सी पूंछ हिलाते हुए मेरे पास आया। मैंने उसे कुछ बिस्कुट और एक सैंडविच खिलाया, और तारों से जगमगाते धुंधले आसमान में उसकी आंखें मुझे उस थोड़े से भोजन के लिए कृतज्ञता से देख रही थीं जो मैंने उसे दिया था, शायद पिछले दो दिनों में उसके पेट में पहली बार कुछ गया था। फिर वह मेरे पैरों के पास सिकुड़कर सो गया।
समय बीतता गया और आधी रात हो गई। जंगल के किनारे से एक विशाल सींग वाले उल्लू ने उदास स्वर में 'हू- हू' की लंबी, रहस्यमयी आवाज निकाली, मानो यह किसी मृत्यु की घंटी हो, या रात के उस भयावह हिस्से का पूर्वाभास हो जब अशांत आत्माएं अपने सांसारिक कर्मों के स्थल पर लौट आती हैं, और उन कर्मों को बार-बार दोहराती हैं जो उन्हें धरती से बांधते हैं।
एक बजना, दो बजना और फिर तीन बजना नीरसता में बीत गए, जबकि मैं अपनी थकी और दर्द से भरी आँखों और कानों को हलचल या आवाज़ सुनने के लिए तरसता रहा। सौभाग्य से रात साफ थी और आसमान में बिखरे अनगिनत

तारों की चमक से दृश्यता अपेक्षाकृत अच्छी थी, ऐसा नज़ारा हमारे धूल भरे कस्बों या शहरों में देखने को नहीं मिलता।
फिर अचानक, गाँव के ठीक बाहरी इलाके में स्थित कीचड़ भरे तालाब से एक प्लोवर पक्षी, जिसे भारत में 'क्या तुमने किया' पक्षी के नाम से जाना जाता है, की घबराहट भरी चीख सुनाई दी। 'क्या तुमने किया, क्या तुमने किया, क्या तुमने किया, क्या तुमने किया', वह लगातार तेज़ आवाज़ में पुकार रहा था। निस्संदेह पक्षी उत्तेजित और विचलित था, या उसने कुछ देख लिया था। मेरे पैरों के पास बैठा कुत्ता हिला, अपना सिर उठाया, फिर नीचे झुका लिया, मानो उसे दुनिया की कोई परवाह ही न हो। कुछ मिनट बीत गए, और फिर अचानक कुत्ता पूरी तरह जाग गया। उसके कान, जो उदासी में लटके हुए थे, खड़े हो गए, वह मेरे पैरों से बुरी तरह कांपने लगा, और उसके गले से एक धीमी, लंबी गुर्राहट निकली। मैंने देखा कि वह तालाब के पास से गाँव की ओर जाने वाली गली की ओर देख रहा था।
मैंने उस दिशा में टकटकी लगाकर देखा। काफी देर तक मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया, और फिर ऐसा लगा जैसे कुछ दूरी पर, गली के उसी तरफ एक इमारत के कोने पर कोई परछाई हिली हो। मैंने अपनी नज़रें उस जगह पर टिका दीं, और कुछ सेकंड बाद फिर से एक हल्की-सी हलचल देखी, लेकिन इस बार थोड़ी और करीब।
टॉर्च जलाने वाले बटन पर अपना बायां अंगूठा रखकर मैं सांस रोककर चुपचाप इंतजार करने लगा। कुछ मिनट बीते, ज़्यादा से ज़्यादा पांच या दस मिनट, और फिर मैंने देखा कि एक लंबा-सा शरीर तेज़ी से और बिना आवाज़ किए लगभग बीस गज दूर एक झोपड़ी की छत पर कूद गया। संयोग से, सारी झोपड़ियाँ इस जगह पर एक-दूसरे से सटी हुई थीं, और मैंने अंदाज़ा लगाया कि पैंथर ने खुलेआम मेरा पीछा करने के बजाय, इन सटी हुई झोपड़ियों की छतों पर चलकर पीछे से मुझ पर हमला करने का फैसला किया होगा।
मैं झट से खड़ा हो गया और दीवार से पीठ टिका ली। इस स्थिति में, मेरे सिर के ऊपर छत का किनारा लगभग अठारह इंच तक मेरे ऊपर से गुज़रकर उस सड़क पर जा रहा था जहाँ मैं बैठा था। मैंने राइफल तैयार रखी, उंगली ट्रिगर पर थी, और बाएँ अंगूठे से टॉर्च का स्विच मेरी बगल में दबा हुआ था और ऊपर की ओर इशारा कर रहा था।
कुछ ही सेकंड बाद मुझे हल्की सरसराहट सुनाई दी, जैसे तेंदुआ छत पर सावधानी से बिछाए गए कांटों को पार करने की कोशिश कर रहा हो। जाहिर तौर पर वह इसमें नाकाम रहा, क्योंकि फिर से सन्नाटा छा गया। अब मुझे पता नहीं था कि वह कहाँ है।
अगले पंद्रह मिनट भयानक चिंता में बीत गए, मैं तेंदुए के हमला करने से पहले उसे ढूंढने की कोशिश में हर दिशा में देखता रहा, और ईश्वर का धन्यवाद करता रहा कि रात साफ थी। तभी वह कुत्ता, जो मेरे पैरों के पास बेचैनी से रो रहा था, अचानक गली के बीचोंबीच आ गया, उस झोपड़ी के कोने की ओर मुड़ा जिसके सहारे मैं छिपा हुआ था और जोर-जोर से भौंकने लगा।
इस चेतावनी ने मेरी जान बचा ली, क्योंकि पाँच सेकंड के भीतर ही पैंथर कोने से निकलकर मुझ पर झपटा। मेरे पास टॉर्च का स्विच दबाने और कमर से गोली चलाने का ही समय था, जो सीधे उसके चौड़े खुले, गुर्राते मुँह के ऊपर चमकती आँखों में जा लगी।.405 की गोली सीधे निशाने पर लगी, लेकिन हमले की वजह से जानवर मेरी ओर दौड़ पड़ा। मैं फुर्ती से एक तरफ कूद गया, और जैसे ही पैंथर झोपड़ी की दीवार से टकराया, मैंने मैगज़ीन से दो और गोलियाँ उसके खूंखार, धब्बेदार शरीर पर दाग दीं।
वह गिर पड़ा और स्थिर हो गया, सिवाय उसके खुले हुए जबड़ों और लंबी, फैली हुई पूंछ के रुक-रुक कर हिलने के। और फिर मेरा दोस्त, वह कुतिया, अपने नए मालिक के प्रति अटूट निष्ठा के साथ, दौड़ा और अपने कमजोर दांत उस मरे हुए राक्षस के गले में गड़ा दिए।
और इस तरह गुम्मलपुर का 'चित्तीदार शैतान' गुजर गया, एक ऐसा पैंथर जिसकी घातक चालाकी के बारे में मैंने पहले कभी नहीं सुना था और उम्मीद करता हूँ कि मुझे उससे दोबारा कभी सामना न करना पड़े। अगली सुबह जब मैंने जानवर की खाल उतारी, तो पाया कि दाहिने पंजे पर लगी चोट, जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था, किसी पिछली गोली के घाव से नहीं, बल्कि साही के दो कांटों से लगी थी जो उंगलियों के बीच एक-दूसरे से एक इंच की दूरी पर घुस गए थे और फिर टूट गए थे। यह काफी समय पहले हुआ होगा, क्योंकि पैर के अंदर हड्डियों के बीच बनी एक उपास्थि ने कांटों को ढक लिया था। निस्संदेह, जानवर को सामान्य तरीके से अपना पंजा जमीन पर रखने में दर्द होता था, और उसने किनारे पर चलने की आदत डाल ली थी।

[illegible]

3

चमाला घाटी का धारीदार आतंक
चमाला घाटी मद्रास प्रेसीडेंसी के चित्तूर जिले के उत्तर-पूर्वी छोर का हिस्सा है, जहाँ यह उत्तर में कडप्पा जिले से सटी हुई है। यह अपेक्षाकृत छोटी घाटी है, जिसका मुख्य भाग उत्तर की ओर लगभग सात मील लंबा और पाँच मील चौड़ा है, और इसके अंत में दो शाखाएँ हैं, जो 'Y' अक्षर की तरह उत्तर-पश्चिम और उत्तर-पूर्व की ओर क्रमशः फैली हुई हैं, मुख्य घाटी की तुलना में कुछ संकरी हैं और प्रत्येक लगभग चार मील लंबी है। ये शाखाएँ कडप्पा की दक्षिणी सीमा बनाने वाली एक विशाल चट्टानी ढलान के नीचे समाप्त होती हैं।
कल्याणी नदी उत्तर-पूर्वी घाटी से होकर बहती है, जिसके दो स्रोत ढलान के ठीक नीचे, घने जंगलों से घिरे गुंडलपेंटा और उम्बालमेरु नामक घाटियों में स्थित हैं। इन घाटियों में गर्मियों के सबसे गर्म महीनों में भी पारदर्शी, बर्फीले ठंडे पानी के कुंड हमेशा मौजूद रहते हैं। कल्याणी नदी फिर मुख्य घाटी से होते हुए दक्षिण की ओर बहती है और अंततः नागपतला गांव में एक कृषि क्षेत्र में प्रवेश करती है, जहां एक प्राचीन झील है। चंद्रगिरि के राजाओं और बाद में सर्वविजयी मुस्लिम नायक टीपू सुल्तान ने भीषण गर्मी के महीनों में सूखे ग्रामीण इलाकों को पानी देने के लिए इस झील पर बांध बनाने का प्रयास किया था। वन विभाग ने झील के दक्षिणी किनारे पर, प्राचीन जलसेतु के पास, एक मजबूत लेकिन आरामदायक वन बंगला बनाया है। अरेपल्ली रंगमपेट का शांत गांव लगभग डेढ़ मील दूर स्थित है और यह लगभग हाल ही में बसा है।
चामाला घाटी पूरी तरह से वनों से आच्छादित है और ब्रिटिश शासनकाल में एक वन्यजीव अभ्यारण्य हुआ करती थी। पश्चिम में बखरपेट वन क्षेत्र और पूर्व में तिरुपति वन श्रृंखला स्थित है, जो भारत भर में प्रसिद्ध तिरुपति के महान तीर्थस्थलों पर समाप्त होती है। दक्षिण में प्राचीन शहर चंद्रगिरी स्थित है, जिसमें सदियों पुराना किला है, जो अपने पूर्व राजाओं की महिमा का मूक प्रमाण है। चंद्रगिरी के पास से एक मीटर गेज रेलवे लाइन तिरुपति और रेनिगुंटा की ओर जाती है, जहाँ यह मद्रास से बॉम्बे जाने वाली मुख्य ब्रॉड गेज लाइन से जुड़ जाती है। चंद्रगिरी रेलवे स्टेशन से लगभग साढ़े तीन मील तक रंगमपेट तक एक संकरा बैलगाड़ी मार्ग जाता है; फिर यह डेढ़ मील उत्तर की ओर नागपतला की ओर मुड़ता है, जहाँ से यह और उत्तर की ओर बढ़ता है और चमाला घाटी के पूरे सात मील तक वन विभाग का मार्ग बन जाता है, जब तक कि यह पुलिबोनू नामक स्थान पर नहीं पहुँच जाता, जिसका अर्थ है बाघ का पिंजरा, जहाँ यह अचानक समाप्त हो जाता है। वन विभाग द्वारा इस स्थान पर दो समतल, वर्गाकार, सीमेंटेड शिविर स्थल और पीने के पानी की निरंतर आपूर्ति के लिए एक कुआँ बनाया गया है।
यह घाटी और इसकी शाखाएँ बेहद खूबसूरत हैं, और जब मैंने अठारह साल पहले पहली बार यहाँ का दौरा किया था, तब यह वन्यजीवों का स्वर्ग था। चीतलों के बड़े-बड़े झुंड मुख्य घाटी में विचरण करते थे, जिनमें से कुछ नर चीतलों के सींग इतने विशाल थे कि मैंने दक्षिण भारत में कहीं और नहीं देखे। पश्चिम में बखरपेट पर्वतमाला और पूर्व में तिरुपति पर्वतमाला की तलहटी, साथ ही पूरे उत्तरी ढलान के निचले हिस्से में शानदार आकार और सींगों वाले सांभर पाए जाते थे। काले भालू हर जगह मौजूद थे, लेकिन ढलान के नीचे घने जंगल में इनकी संख्या विशेष रूप से अधिक और खतरनाक थी। काकर, जिसे 'मंटजैक' या बार्किंगडियर के नाम से भी जाना जाता है, भी बहुतायत में थे। मुख्य घाटी और उसका उत्तर-पूर्वी भाग बाघों का नियमित मार्ग था, जो बखरपेट पर्वतमाला से आते, घाटियों से होते हुए ढलान पार करते, कुड्डापाह के जंगलों में प्रवेश करते, फिर मामंदुर पर्वतमाला और आगे सेट्टीगुंटा की ओर बढ़ते। पैंथर हर जगह दिखाई देते थे, और इस क्षेत्र में मोर, कुटिया और धूसर जंगली मुर्गे बहुतायत में थे, जिनमें से धूसर मुर्गे विशेष रूप से बड़ी संख्या में थे। यह दक्षिण भारत का एकमात्र ऐसा जंगल था जहाँ मैंने जंगली मुर्गों को दोपहर में भी, और नियमित रूप से रात 2 बजे और लगभग 4:30 बजे बांग देते हुए देखा, बेशक सूर्योदय और सूर्यास्त के समय उनके सामान्य गायन के अलावा।

सन् 1937 की शुरुआत में, एक दिन इस शांत इलाके में एक खूंखार धारीदार बाघ आया, जिसके बारे में मैं आपको बताने जा रहा हूँ। वह सामान्य आकार का बाघ था, और उसके पदचिह्नों से ऐसी कोई विकृति नहीं दिखती थी जिससे मानव मांस खाने की उसकी प्रवृत्ति का पता चलता। वह अचानक प्रकट हुआ, किसी को नहीं पता था कि वह कहाँ से आया, और न ही आस-पास के किसी भी जंगल में, चाहे वह दूर हो या पास, किसी आदमखोर बाघ की गतिविधियों की कोई अफवाह फैली थी। उसका अचानक और अप्रत्याशित आगमन जितना विचित्र था, जल्द ही यह बात सबको पता चल गई कि एक आदमखोर बाघ घाटी में घुस आया है, क्योंकि उसने गुंडलपेंटा के तालाबों के पास एक बांस काटने वाले को मार डाला और पूरा खा गया। इसके तीन दिन बाद, उसने चौथे मील के पत्थर के पास नागपतला-पुलीबोनू वन मार्ग पर एक यात्री को लगभग पूरी तरह से खा लिया।
इसके बाद उसकी हत्याएं छिटपुट और अनियमित हो गईं, जो तीनों घाटियों में फैली हुई थीं, जहां उसने लगभग छह महीनों के अंतराल में कुल सात लोगों को मार डाला और खा लिया, या आंशिक रूप से खा लिया।
एक दिन बखरपेट के वन रेंज अधिकारी, जिनके क्षेत्र में चमाला घाटी शामिल है, अपने निरीक्षण दौरों के दौरान नागपतला स्थित वन बंगले में रहने के लिए जा रहे थे। वे बैलगाड़ी से यात्रा कर रहे थे, जिसमें वे नागपतला में दो सप्ताह के प्रवास के लिए राशन, निजी सामान और अन्य आवश्यक वस्तुएं भी ले जा रहे थे।
शाम के पाँच बज रहे थे और बैलगाड़ी अपनी मंज़िल से मुश्किल से दो मील ही दूर थी कि एक बाघ गाड़ी के सामने सड़क पर आ गया। मुझे आपको बताना चाहिए था कि बखरपेट से नागपतला जाने वाली यह सड़क लगभग पूरी लंबाई में आरक्षित वन से होकर गुज़रती है, और आखिरी दो मील चमाला घाटी की शुरुआत से होकर जाते हैं। सामने सड़क पर बाघ को देखकर, बैलगाड़ी चालक ने अपनी गाड़ी रोक दी और अपने साथ मौजूद रेंज अधिकारी और वन रक्षक को आवाज़ दी। चूंकि गाड़ी ढकी हुई थी और वे अंदर बैठे थे, इसलिए उनमें से किसी ने भी सड़क पर बाघ को नहीं देखा था।
तीनों आदमी चिल्लाने लगे, तभी सड़क के किनारे बने खुले मैदान में चलता हुआ बाघ गाड़ी के पास से गुजरा और अंदर बैठे दोनों आदमियों की नजर में आ गया। इसी क्षण, बिना किसी समझ में आने वाले कारण के, वन रक्षक गाड़ी से कूद गया और जानवर को डराने के लिए हाथ हिलाने और चिल्लाने लगा। हालांकि, उसने खुद ही अपनी जान जोखिम में डाल ली, क्योंकि लगातार छोटी-छोटी दहाड़ों के साथ जानवर ने उस पर हमला किया, उसे अपने जबड़ों में जकड़ लिया और छिपने के लिए जंगल में वापस भाग गया। यह घटना इतनी अप्रत्याशित और अचानक हुई थी कि रेंज अधिकारी को कुछ भी करने का मौका नहीं मिला, हालांकि वह जो कुछ कर सकता था वह भी मुश्किल था, क्योंकि वह खुद निहत्था था।
इसके बाद गाड़ी को बड़ी जल्दबाजी में नागपटला ले जाया गया, लेकिन अगली सुबह तक ही बंदूकों, कुल्हाड़ियों और लाठियों से लैस एक बड़ा समूह इकट्ठा हो सका, ताकि दुर्भाग्यपूर्ण वन रक्षक को, या यों कहें कि उसके बचे हुए अवशेषों को खोजने का प्रयास किया जा सके।
अंततः अवशेष सड़क से एक फर्लांग से भी कम दूरी पर एक खाई में मिले; केवल सिर, हाथ और पैर, और उसकी खून से सनी और क्षत-विक्षत खाकी वर्दी और हरी पगड़ी ही कहानी बयां करने के लिए बची थी, पगड़ी वहीं पड़ी थी जहां बाघ अपने शिकार को लेकर सड़क के किनारे वाले खुले मैदान को पार करते समय गिरा था।
इस त्रासदी को सरकार की ओर से काफी तवज्जो मिली और देशभर के अखबारों में इसकी खबर छपी। सरकार ने आदमखोर को मारने के लिए इनाम की घोषणा की और मद्रास और स्थानीय इलाकों से कई साहसी शिकारी उस जानवर को मारने के लिए घाटी में पहुंचे। लेकिन आखिरी शिकार के बाद, मानो उसे एहसास हो गया हो कि उसने बहुत ज्यादा ध्यान आकर्षित कर लिया है, कुछ समय के लिए उसका आतंक पूरी तरह गायब हो गया और घाटी में कहीं भी उसका कोई सुराग नहीं मिला। अनुमान लगाया गया कि वह या तो ढलान पार करके उत्तर की ओर कडप्पा जिले में चला गया होगा, या फिर बखरपेट या तिरुपति ब्लॉक में भटक गया होगा। पूरा इलाका सतर्क हो गया था, लेकिन अगले दो महीनों तक उस जानवर के बारे में कोई खबर नहीं मिली।

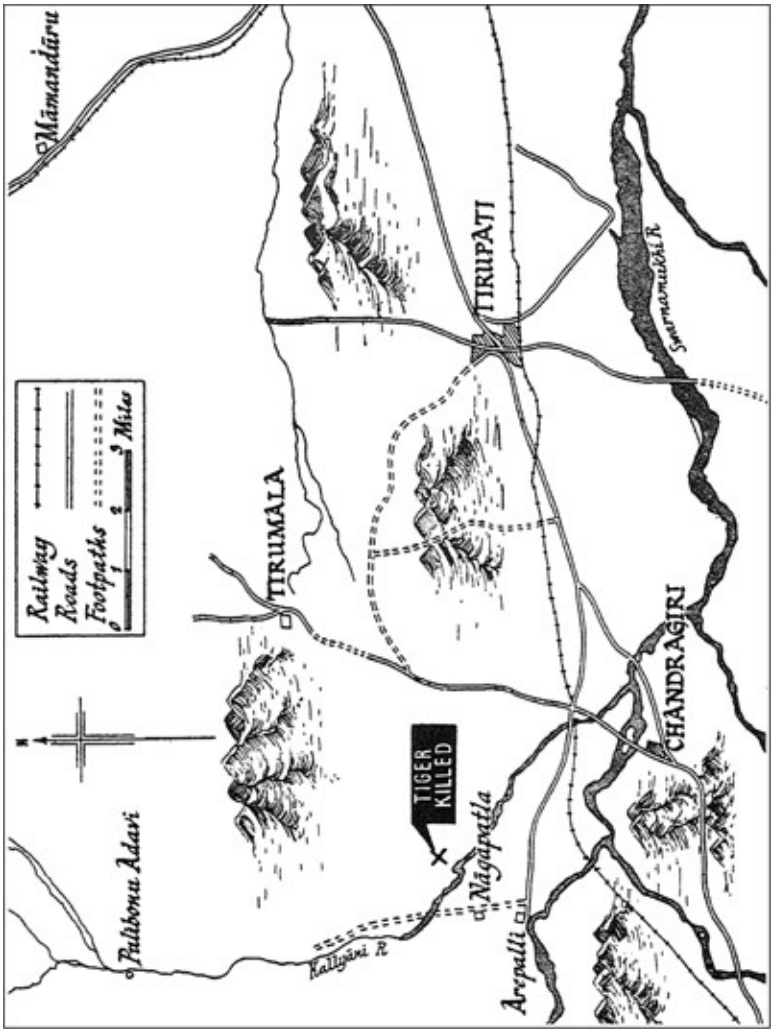

चामाला घाटी के धारीदार आतंक की कहानी में उल्लिखित स्थानों का रेखाचित्र मानचित्र।

फिर एक दिन, मद्रास-मुंबई मुख्य मार्ग पर स्थित मामंदुर स्टेशन के पास ब्रॉडगेज रेलवे ट्रैक पर गश्त कर रहा एक रेलवे कर्मचारी, जो चमाला घाटी से लगभग अठारह मील उत्तर-पूर्व में पहाड़ियों से घिरे एक विस्तृत, घने जंगलों वाले पठार में स्थित है, अपनी गश्त के अंतिम बिंदु पर नहीं पहुंचा। एक-दो दिन तक उसकी अनुपस्थिति पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया, क्योंकि पूर्वी भारत में मामूली कारणों से अचानक अनुपस्थिति आम बात है; लेकिन जब उसके बाद भी वह व्यक्ति नहीं आया, तो मामले को गंभीरता से लिया गया और उसे खोजने के लिए एक दल भेजा गया।
रेलवे ट्रैक के किनारे चलते हुए, लापता व्यक्ति के भाग्य का पहला सुराग वह बड़ा हथौड़ा था जिसका वह इस्तेमाल कर रहा था, जो पटरी के किनारे पड़ा मिला। गैंगर्स को ऐसे हथौड़े इसलिए दिए जाते हैं ताकि वे रेल की पटरियों को उनके सपोर्ट (जिन्हें चेयर कहा जाता है) से टिकाने के लिए इस्तेमाल होने वाले लकड़ी के ब्लॉकों को अपनी जगह पर रख सकें। कठोर, धूप से तपती ज़मीन पर किसी संघर्ष का कोई निशान नहीं था, लेकिन थोड़ी दूर पर खून की कुछ बूँदें थीं जो एक ढलान से नीचे उतरकर पास के जंगल में जा रही थीं। इस निशान का पीछा करते हुए, दल को लापता गैंगर द्वारा पहनी जाने वाली एक अजीब सी चप्पल मिली, साथ ही झाड़ियों की पत्तियों पर खून के धब्बे भी मिले। थोड़ा आगे बढ़ने पर वे सूखी, मुलायम रेत की एक पट्टी पार कर गए, जिस पर चलते हुए उन्हें स्पष्ट रूप से बाघ के पदचिह्न दिखाई दिए।

इससे यह साबित हो गया कि लापता व्यक्ति को बाघ ले गया था। पिछले कुछ महीनों में चमाला घाटी के आदमखोर बाघ की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल चुकी थी, और स्वाभाविक रूप से यह निष्कर्ष निकाला गया कि इस जानवर का ही इस ताज़ा त्रासदी के लिए हाथ था। संयोगवश, बाघ के अवशेष कभी नहीं मिले।
इसके बाद, अगले महीनों में दो बार हत्याएं हुईं। पहली घटना मामंदुर से n मील उत्तर-पश्चिम में स्थित सेट्टिगुंटा में और दूसरी घटना उम्बालमेरु में हुई, जो कि, जैसा कि आपको याद होगा, कल्याणी नदी के चमाला घाटी में प्रवेश करने से पहले उसके दो मुख्य स्रोतों में से एक था।
उस समय मैं मद्रास के व्यावसायिक दौरे पर था और सलेम जिले में स्थानीय शिकारियों की गतिविधियों के खिलाफ मैंने जो शिकायत दर्ज कराई थी, उसके संबंध में मुख्य वन संरक्षक से मिलने का अवसर मिला। मुख्य वन संरक्षक से बात करते समय उन्होंने बाघ की गतिविधियों का जिक्र किया—जिसके बारे में मैंने प्रेस में काफी कुछ पढ़ा था—और मुझे उस जानवर का शिकार करने का प्रयास करने का सुझाव दिया। सौभाग्य से, मैंने पिछले वर्ष विशेषाधिकार अवकाश का लाभ नहीं उठाया था, और चूंकि मेरे पास कुछ महीने शेष थे, इसलिए मैंने उनमें से एक महीने का उपयोग इस कार्य में करने का निर्णय लिया। बैंगलोर लौटकर, मैंने अगले कुछ दिन इस कार्य के लिए आवश्यक सभी चीज़ें जुटाने में बिताए और दस दिन बाद मैं नागपतला वन बंगले में था, जिसे मैंने चमाला नामक आदमखोर सांप के खिलाफ अभियान चलाने के लिए अपना मुख्यालय बनाने का निर्णय लिया था।
सबसे पहले, स्थानीय स्तर पर व्यापक पूछताछ करना, चमाला घाटी में उन स्थानों का दौरा करना जहाँ शिकार हुए थे, और विभिन्न घटनाओं के घटित होने के स्थानों में एक क्रम स्थापित करने का प्रयास करना आवश्यक था, ताकि संभव हो तो बाघ के नियमित मार्ग का पता लगाया जा सके। मैं इसमें पूरी तरह असफल रहा; यह स्पष्ट हो गया कि यह विशेष जानवर एक घुमंतू था, जो कुछ समय के लिए घाटी में आता था, जहाँ भी अवसर मिलता था, किसी मानव को अपना शिकार बना लेता था, और मामंदुर या कडप्पा जिले की ओर ढलान पर चढ़ जाता था।
काफी कठिनाई के बाद, मैंने चार युवा भैंसें खरीदीं। मैंने इन्हें अलग-अलग स्थानों पर बांध दिया; एक गुंडलपेंटा में, दूसरी उम्बालमेरु में, तीसरी नागपटला-पुलिबोनू वन सड़क के चौथे मील के पत्थर के पास नरसिम्हा चेरुवु नामक एक जलकुंड पर, और आखिरी रागिमनकोनार नामक एक पथरीली धारा पर, जो कल्याणी नदी की एक सहायक नदी है और सड़क से लगभग दो मील पूर्व तिरुपति ब्लॉक की पथरीली पहाड़ियों से निकलती है।
दूसरे दिन नरसिम्हा चेरुवु में लगाए गए चारे को एक जानवर ने मार डाला, लेकिन जांच से पता चला कि यह किसी बाघ का काम नहीं था, जैसा कि मैंने उम्मीद की थी, बल्कि एक बड़े तेंदू (जंगली तेंदुआ) का काम था। चूंकि चारा महंगा होता है और मैं उसे दखल देने वाले तेंदुओं के हाथों खोने का जोखिम नहीं उठा सकता था, इसलिए मैं पानी के गड्ढे के पास इस जानवर का इंतजार करता रहा, और सौभाग्य से शाम 6:45 बजे तक, जब वह शिकार पर लौटा, तब तक दिन का उजाला रहते हुए, मैंने उसे पकड़ लिया।
फिर मैंने पैंथर द्वारा मारे गए चारे की जगह दूसरा चारा खरीदा और उसे नरसिम्हा चेरुवु में उसी स्थान पर बांध दिया।
अगला सप्ताह जंगल के बंगले में आलस में बीता, सिवाय हर सुबह और शाम जंगल में चारों दिशाओं में लंबी सैर करने के, इस उम्मीद में कि शायद संयोग से बाघ दिख जाए। नौवें दिन की सुबह, जब मैं अपनी स्टडबेकर कार में पुलिबोनू की ओर जा रहा था, जहाँ से मैं जंगलों में एक और सैर शुरू करने वाला था, तो मुझे एक बाघ के पदचिह्न मिले जो छठे मील के पत्थर पर सड़क पर आया था और पुलिबोनू से आगे तक सड़क के बीचोंबीच चला गया था। आदमखोर बाघ के पदचिह्नों में अब तक कोई खास बात नहीं देखी गई थी, इसलिए यह बताना असंभव था कि इन ताजा पदचिह्नों को बनाने वाला जानवर वही शिकारी बाघ था जिसकी मुझे तलाश थी, या बस एक भटकता हुआ बाघ। ये पदचिह्न कहीं-कहीं सड़क के किनारे की नरम रेत में बहुत स्पष्ट थे, और मैं उन्हें बारीकी से देख सका; लेकिन इससे केवल इतना पता चला कि ये एक औसत आकार के नर बाघ के थे, इसके अलावा कोई और खास बात या पहचान चिह्न नहीं मिला।
पुलिबोनू में कार छोड़कर, मैं उत्तर-पूर्वी घाटी में पैदल चला। वन मार्ग कल्याणी नदी को बार-बार पार करता था, जहाँ मैंने देखा कि बाघ मुझसे कुछ दूरी तक आगे निकल चुका था। उस दिन मैंने गुंडलपेंटा और उम्बालमेरु दोनों स्थानों का दौरा किया, इस उम्मीद में कि मेरे चारे में से कोई एक बाघ खा गया

मैंने भारतीय रीति से अपने पैर क्रॉस की तरह मोड़ लिए और राइफल को सामने वाली शाखा पर टिका दिया। इस स्थिति से मुझे बाईं ओर शिकार साफ दिखाई दे रहा था, फिर सामने वाली शाखा से दृश्य बाधित हुआ, फिर दूसरा दृश्य, फिर एक शाखा, फिर मेरे दाहिने कंधे के ऊपर से एक ऐसे कोण से दृश्य दिखाई दिया जहाँ से गोली चलाना असंभव था, और अंत में वह शाखा जिस पर मेरी पीठ टिकी थी। इससे पीछे का दृश्य बिल्कुल भी दिखाई नहीं दे रहा था। साथ ही मैं जमीन से लगभग पंद्रह फीट ऊपर था और बाघ के हमले से सुरक्षित था। मुझ तक पहुँचने के लिए उसे पेड़ की पहली शाखा को पार करना पड़ता, जहाँ वह लगभग बिल्कुल करीब होता। दोपहर के 12:50 बज रहे थे, और मैं उस रात के लिए तैयार हो गया जिसे मैं अपने पूरे शिकारी करियर की सबसे ठंडी और असहनीय रातों में से एक मान रहा था।
मैं अपने पाठकों को यह बताकर उबाऊ नहीं बनाऊंगा कि शाम 6:30 बजे तक घंटे कैसे धीरे-धीरे बीतते गए, जब जंगल के पक्षी और दिन के पक्षी अपने घोंसलों में चले गए थे, और लंगूर अपने दो दुश्मनों, बाघ और मनुष्य की घृणास्पद उपस्थिति से बहुत पहले ही दूर चले गए थे। मैं अकेला था, सिवाय कभी-कभार चहचहाते हुए मेरे पेड़ के आसपास उड़ने वाले एक चिड़िया के। शाम 6:45 बजे लगभग अंधेरा हो चुका था। चिड़िया अब मेरे नीचे बैठ गई थी, और 'चुकू-चुकू-चुकू' की अपनी चहचहाहट शुरू कर दी थी, तभी मुझे उन विचित्र अनुभवों में से एक का सामना करना पड़ा जो कभी-कभी, लेकिन बहुत कम ही, भारतीय जंगलों में घूमने वाले किसी व्यक्ति के साथ होते हैं।
मैंने जंगल में रहने वाले लोगों से कहानियां सुनी थीं और पढ़ा भी था कि बाघ, कुछ खास इलाकों में ही, सांभर की नकल करते हैं और हिरण की आवाज निकालते हैं, शायद अपनी ही प्रजाति के दूसरे जानवरों, खासकर मादा हिरणों को लुभाने के लिए। मैंने इस कहानी पर कभी ज्यादा भरोसा नहीं किया था और न ही मैंने खुद कभी ऐसा अनुभव किया था। उस शाम, 6.45 के कुछ ही देर बाद, ढलते सूरज की रोशनी में, झाड़ियों के बीच से अचानक एक सांभर हिरण की अकेली 'धंक' की आवाज गूंजी। यह आवाज उस जगह से आई जो अभी भी उस डाल के बीच दिखाई दे रही थी जिस पर मेरी राइफल टिकी हुई थी और ठीक दाईं ओर वाली डाल से। और लगभग उसी समय, उसी झाड़ी से बाघ बाहर निकला।
उस झाड़ी में बाघ के साथ या ठीक आगे कोई सांभर नर हिरण नहीं हो सकता था, क्योंकि भागते समय मुझे उसके खुरों की आहट सुनाई दी थी। कोई सांभर वहां खड़ा होकर बाघ को अपने पास से गुजरने नहीं देता। उस एक 'धंक' की आवाज के अलावा कोई और आवाज नहीं थी, और जैसा कि मैंने कहा, बाघ खुले में आ गया, और इसमें कोई संदेह नहीं था कि वह आवाज बाघ ने ही निकाली थी। उसने ऐसा क्यों किया, यह एक रहस्य है, क्योंकि वह शिकार नहीं कर रहा था। उसने उस सुबह भरपेट भोजन किया था और अब दूसरे भोजन के लिए लौट रहा था, इसलिए उसके मन में सांभर की आवाज की नकल करके उसे लुभाने का विचार नहीं आया होगा। मैं केवल वही बता सकता हूँ जो वास्तव में हुआ, जो मैंने अनुभव किया, और यह तथ्य कि जब बाघ बाहर आया, तब उस झाड़ी में कोई सांभर नहीं था। बाकी मैं आपके अनुमान और निष्कर्ष पर छोड़ता हूँ। मैंने इसे स्वयं अपने कानों से सुना है, इसलिए मेरे पास बाघ की इस ध्वनि की नकल करने की क्षमता के बारे में पढ़ी और सुनी पुरानी कहानियों पर विश्वास करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।
जानवर शिकार की ओर बढ़ा और मेरे सामने वाली शाखा के पीछे ओझल हो गया। मैंने इस मौके का फायदा उठाकर अपनी राइफल को निशाना साध लिया। फिर वह मेरे बाईं ओर दोबारा दिखाई दिया और देखते ही देखते उसने शिकार को अपने जबड़ों में जकड़ लिया और उठा लिया। मेरी गोली ठीक उसके बाएं कंधे के पीछे लगी। वह घूमकर मेरी अगली गोली गर्दन में खाने के लिए तैयार हो गया, फिर गिर पड़ा, एक मिनट तक लात मारता और छटपटाता रहा, और अंत में शांत हो गया।
बाघ के मर जाने के बाद, मुझे लगा कि अब गाड़ी तक पैदल जाना सुरक्षित है, बशर्ते मैं अंधेरे में रास्ता ढूंढ सकूँ। तमाम मुश्किलों के बावजूद, मुझे लगा कि पेड़ पर रात भर ठिठुरते और कांपते हुए, ठंडे पेट खाली बैठे रहने से बेहतर यही होगा। अचानक मन बना कर, मैं बाघ के पास जाए बिना पेड़ से नीचे उतरा और अंधेरा होने से पहले कल्याणी नदी का किनारा ढूंढने के लिए तेज़ी से चल पड़ा, क्योंकि मुझे एहसास हुआ कि अंधेरे में भी सूखी नदी के किनारे-किनारे चलते हुए पुलिबोनू और गाड़ी तक पहुंचना मुमकिन होगा, हालांकि नदी के मोड़ों से होते हुए दूरी लगभग छह मील होगी। अंधेरे में मैं संकरे रास्ते, जो एकमात्र दूसरा विकल्प था, को लगभग निश्चित रूप से खो दूंगा और मुझे रात जंगल में ही बितानी पड़ेगी।

अंधेरे में कल्याणी नदी के पथरीले तल को पार करने का प्रयास किसी बुरे सपने से कम नहीं था। नदी के तल में बिखरे हुए गोल-गोल पत्थरों पर कई बार मेरा पैर फिसल गया, और कहीं-कहीं छिपे हुए पेड़ों के ठूंठों और चट्टानों से टकराकर मेरी टांगें छिल गईं। एक से अधिक बार एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर कूदते समय मेरा टखना मुड़ने या शायद टांग टूटने का खतरा मंडरा रहा था, और दो बार तो मैं अपनी कीमती राइफल को चट्टानों से टकराने से बचाने के लिए हवा में उठाए हुए ही गिर पड़ा। इस यात्रा के लिए पूर्ण एकाग्रता की आवश्यकता थी, और पुलिबोनू पहुँचने में मुझे चार घंटे लग गए। मैं रात 11 बजकर 10 मिनट पर गाड़ी में बैठा।
आप शायद सोच रहे होंगे कि नागपतला लौटते समय मैं आदमखोर बाघ को मार गिराने पर खुद को बधाई दे रहा था। लेकिन असल में ऐसा नहीं था, क्योंकि कई बातें मेरे दिमाग में कौंध गईं और मुझे अपनी सफलता पर संदेह होने लगा। पहली बात, बाघ ने भैंस का शिकार किया था; दूसरी बात, जब मैंने उसे देखा तो वह वहीं रुका रहा और फिर आराम से पीछे हट गया, मैं उसके पीछे गया; तीसरी बात, मेरी मौजूदगी का एहसास होते ही वह दुम दबाकर भाग गया; चौथी बात, वह भैंस के पास लौट आया; और आखिर में, उसने सांभर की आवाज की हूबहू नकल की। ये सभी बातें, चाहे अलग-अलग हों या सामूहिक रूप से, किसी आदमखोर बाघ के व्यवहार या हरकतों का संकेत नहीं देतीं, बल्कि एक साधारण बाघ, खासकर एक शिकारी बाघ की ओर इशारा करती हैं। जितना ज्यादा मैं इसके बारे में सोचता गया, उतना ही मुझे शक होता गया कि मैंने आदमखोर बाघ को गोली मारी है या नहीं। यह मेरे मन की शांति के लिए अच्छा था कि कल्याणी नदी के किनारे अंधेरे में अपने संघर्ष पर ध्यान केंद्रित करते समय, मेरे पास इन चीजों के बारे में सोचने का समय नहीं था, या इस बारे में सोचने का समय नहीं था कि अगर वह मुझे उन परिस्थितियों में मिलता तो मैंने खुद को पूरी तरह से असली आदमखोर के हवाले कर दिया होता।
अगली सुबह मैं कुछ आदमियों के साथ लौटा, बाघ को गाड़ी में रखा और नागपतला ले आया, जहाँ आदमखोर बाघ की मौत पर सबने खुशी मनाई। जानवर की खाल उतारने से पहले मैंने उसकी बहुत बारीकी से जांच की और पाया कि वह एक बेदाग वयस्क नर बाघ था, जिसकी खाल सुंदर थी और शारीरिक रूप से वह एकदम स्वस्थ था। इससे मेरा संदेह और भी बढ़ गया कि मैंने सचमुच एक असली आदमखोर बाघ को ही मारा है।
उस शाम मैं बैंगलोर के लिए रवाना हो गया और चित्तूर में कलेक्टर के साथ रात बिताई, जिनसे मैंने अपनी आशंकाओं के बारे में बताया और उनसे यह वादा लिया कि यदि भविष्य में कभी भी किसी इंसान की हत्या की घटना घटती है तो वे मुझे टेलीग्राम द्वारा सूचित करेंगे।
उस तारीख से ग्यारहवें दिन की दोपहर को मुझे उसका तार मिला, जिसमें लिखा था कि चामाला घाटी के आरक्षित वन क्षेत्र की सीमा के भीतर, नागपटला से एक मील की दूरी पर घास काट रही एक महिला को आदमखोर बाघ उठा ले गया है। मैं असफल हो गया था। मैंने गलत बाघ पर गोली चलाई थी, ठीक वैसा ही जैसा मुझे आशंका थी।
अगली सुबह मैं नागपतला वापस जाने के लिए रवाना हुआ और उस दोपहर बाद देर से उस छोटे से वन बंगले में पहुंचा।
अगली सुबह तड़के मुझे वह स्थान दिखाया गया जहाँ बाघ ने अपने नवीनतम शिकार पर हमला किया था। वह महिला घास काट रही थी, जिसे उसने गठ्ठे में बाँधकर अपने सिर पर लादकर ले जाने की तैयारी की थी। उसने उस गठ्ठे को एक पेड़ की छाया के नीचे रखा था और जाहिर तौर पर उसे बाँध ही रही थी कि पास के जंगल से उसका पीछा करते हुए आए बाघ ने उस पर हमला कर दिया। एक अन्य महिला, जो उस समय लगभग सौ गज दूर घास काट रही थी, ने एक तीखी चीख सुनी और ऊपर देखते ही उसने बाघ को अपने साथी को जबड़ों में दबाए जंगल में गायब होते देखा। वह नागपतला भाग गई और उसने सारी कहानी सुनाई, जहाँ से यह खबर रंगमपेट और फिर चंद्रगिरी तक पहुँची, जहाँ तहसीलदार ने तुरंत चित्तूर के कलेक्टर को सूचित करने के लिए कदम उठाए, जिन्होंने बदले में मुझे तार भेजा।
बाघ का पीछा करने या महिला को बचाने का कोई प्रयास नहीं किया गया था। घटना को तीन दिन बीत चुके थे और ज़मीन इतनी सूख चुकी थी कि कोई भी पदचिह्न दिखाई नहीं दे रहे थे। चारों ओर एक बड़े अर्धवृत्त में खोजबीन करने पर हमें महिला की साड़ी मिली, जो उसके नग्न शरीर से खुल कर लगभग एक चौथाई मील दूर ज़मीन पर पड़ी थी। हमें खून के कोई निशान नहीं मिले, जिससे पता चलता है कि बाघ ने महिला के गले पर अपनी

मैं पुलिबोनू की ओर जाने वाली सड़क पर धीरे-धीरे आगे बढ़ा, दोनों ट्रैकर मेरे दोनों तरफ मडगार्ड पर बैठे थे और मैं बहुत धीमी गति से गाड़ी चला रहा था, वे सड़क पर लगातार नज़र रख रहे थे। लेकिन उस रात बाघ सड़क के किसी भी हिस्से से नहीं गुजरा था। पुलिबोनू पहुँचकर, हमने कल्याणी नदी के आसपास दोनों दिशाओं में चक्कर लगाया, साथ ही उत्तर-पश्चिम और उत्तर-पूर्व की ओर जाने वाले रास्तों पर एक-एक मील तक आगे बढ़े, लेकिन फिर भी हमें बाघ के हाल ही में वहाँ से गुजरने का कोई सबूत नहीं मिला।
दोपहर के करीब हम पुलिबोनू लौट आए, जहाँ मैं जंगल के कुएँ के किनारे बैठकर सिगरेट पीने लगा और उस रात के लिए अपनी कार्ययोजना पर विचार करने लगा।
कल्याणी नदी के उस पार, और जहाँ मैं बैठा था, वहाँ से दो फर्लांग की दूरी पर एक इमली का पेड़ था, जहाँ से जंगल के रास्तों के दो भागों में बँटने का दृश्य दिखाई देता था। एक रास्ता पुलिबोनू की ओर जाता था, और दूसरा उत्तर-पूर्व की ओर उम्बालमेरु और ढलान की ओर मुड़ता था। मैंने सुना था कि हाल के वर्षों में इस पेड़ से कई बाघों का शिकार किया गया है; वास्तव में, लगभग अठारह महीने पहले जब मैं उसी पेड़ पर बैठा था, तब मैंने खुद एक छोटे तेंदुए को अपने नीचे से गुजरते हुए मार गिराया था। इसलिए मैंने अंततः अगले कुछ रातों के लिए, कम से कम जब तक चाँद निकला रहे, उसकी छायादार शाखाओं में ही रहने का फैसला किया, क्योंकि ज़मीन पर बैठने का खतरा हमेशा बना रहता था।
निर्णय लेने के बाद, मैंने अपने दोनों आदमियों को उन्हीं शाखाओं पर मचान बनाने का निर्देश दिया जिन पर मैं पहले बैठा था, और जब वे ऐसा कर रहे थे, मैं पेड़ के नीचे गहरी नींद में सो गया। उन आदमियों को पता था कि वे क्या कर रहे हैं, और लगभग तीस मिनट बाद उन्होंने मुझे जगाकर अपने काम की जाँच की और कुछ आवश्यक अंतिम रूप दिए।
मैं हमेशा स्टुडेबेकर की पिछली सीट पर दो हिस्सों में बनी चारपाई का ढांचा रखता हूँ। अनुभव से मुझे पता चला है कि यह सबसे बढ़िया मचान बनता है। यह हल्का लेकिन मजबूत होता है, इस पर हिलने-डुलने पर भी कोई आवाज़ नहीं करता, बेहद आरामदायक होता है, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसे किसी भी पेड़ पर मचान की तरह आसानी से लगाया जा सकता है, पत्तों की आड़ में आसानी से छिपाया जा सकता है, और घर जाने के समय आसानी से हटाया जा सकता है। इसके अलावा, यह सस्ता और पोर्टेबल भी है।
यह चारपाई दो शाखाओं पर टंगी हुई थी, जिन्हें सूती रस्सी से मज़बूती से बांधा गया था, जिसे मैं ऐसे ही कामों के लिए अपने साथ रखता हूँ। पूरी चारपाई को टहनियों से अच्छी तरह छिपाया गया था, जिन्हें किनारों पर इकट्ठा करके मुझे और अधिक छुपने का इंतज़ाम किया गया था। एक छेद बनाया गया था जिससे मैं ठीक अपने नीचे शाखा के निकलने वाली दरार को देख सकता था, और साथ ही पुलिबोनू और उम्बालमेरु दोनों दिशाओं में लगभग 100 गज तक देख सकता था। मेरे पीछे पत्तों की ओट में बने एक ऐसे ही छेद से मैं नागपतला जाने वाली सड़क को लगभग 200 गज तक देख सकता था।
सब कुछ मेरी संतुष्टि के अनुरूप होने पर, मैंने आदमियों को नागपतला वापस पहुँचाया, भरपेट दोपहर का भोजन किया और शाम 4 बजे तक थोड़ी देर और आराम किया। फिर मैंने आवश्यक कंबल, पानी की बोतल, टॉर्च, सैंडविच और चाय इकट्ठा की और अकेले पुलिबोनू लौट आया, जहाँ मैंने कुएँ के पास एक जंगल के खुले मैदान में स्टुडेबेकर कार छिपा दी। पेड़ के पास वापस चलते हुए, मैं शाम 6 बजे से पहले ही रात के लिए आराम करने में लग गया।
जंगल की आवाज़ों से लगभग अविचलित होकर घंटे 11 बजे तक धीरे-धीरे बीतते रहे, तभी उम्बालमेरु पथ की दिशा से एक पैंथर ने आरी चलाने जैसी आवाज़ निकाली। 'आह-हा! आह-हा!' की आवाज़ लकड़ी काटने की लगभग सटीक नकल थी, प्रत्येक दोहरी आवाज़ पर सांस लेना और छोड़ना आरी की आगे-पीछे की गति से हूबहू मेल खाता था।
फिर मोड़ के पास से वह तेज़ी से निकला, एक खूबसूरत 'थेंदू' यानी विशाल वन तेंदुआ, जिसकी खाल पर बने धब्बे चमकदार चांदनी में साफ दिखाई दे रहे थे। वह उस पेड़ की ओर बढ़ा जिस पर मैं बैठा था, उसके नीचे सड़क पार की और दूसरी तरफ जंगल में गायब हो गया।
प्रशंसा से भर कर मैंने उस सुंदर दृश्य को देखा, लेकिन जानवर को जाने दिया, इस डर से कि कहीं बाघ को परेशानी न हो जाए, जो अगर आसपास कहीं भी हो तो मेरी गोली की आवाज सुन सकता है।
उस रात और कुछ भी पता नहीं चला, और अगली रात तो बेहद नीरस रही, क्योंकि उस रात मैंने कुछ भी न तो सुना और न ही देखा।

रहा था, किसी कीड़े की चहचाहट या किसी पक्षी की पुकार! चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था, बस मेरे कदमों की हल्की, कर्कश आवाज़ ही सुनाई दे रही थी, जब मैं रेत पर दबे पांव धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था।
मैं इस तरह लगभग आधा फर्लांग ही आगे बढ़ा था कि नदी ने बाईं ओर हल्का सा मोड़ ले लिया। इस मोड़ पर पहुँचने से पहले ही मैं रुक गया और ध्यान से सुनने लगा, और यह अच्छा ही हुआ कि मैंने ऐसा किया, क्योंकि अगले ही पल, बिना किसी आवाज़ के और बिना किसी आहट के, बाघ अपने शिकार को पीठ पर उठाए हुए, मात्र 25 गज की दूरी पर प्रकट हो गया।
आश्चर्य दोनों तरफ से था। जाहिर है, बाघ को पता चल गया था कि कोई उसका पीछा कर रहा है, और उसने ठीक से भोजन करने से पहले ही उसे नदी के किनारे किसी दूरदराज स्थान पर ले जाने का फैसला कर लिया था। मेरी ओर से, हालांकि मैं हर कदम पर बहुत सावधानी से चल रहा था, मैंने वास्तव में अभी बाघ से मिलने की उम्मीद नहीं की थी।
हम दोनों की निष्क्रियता क्षणिक ही थी। अपने शिकार को छोड़कर, बाघ ने अपना सिर अगले पैरों के बीच दबा लिया, पिछले पैर उसके नीचे सिमट गए, पूंछ सीधी खड़ी थी, छलांग लगाने के लिए तनी हुई। उसी समय राइफल चली, गोली जानवर को लगी, जैसा कि मुझे बाद में पता चला, आँखों के बीच सीधी रेखा के केंद्र से ठीक आधा इंच नीचे। लेकिन यह मामूली चूक उस महत्वपूर्ण मस्तिष्क-गोली को चूकने के लिए पर्याप्त थी जो उसे तुरंत वहीं गिरा देती, और एक गड़गड़ाती दहाड़ के साथ वह आगे बढ़ा, अपने शिकार के ऊपर से लड़खड़ाता हुआ और मुझे पकड़ने के अपने अचेतन प्रयासों में आगे बढ़ता रहा। एक तरफ कूदकर मैंने उस धारीदार जानवर पर लगातार गोलियां चलाईं, जब तक कि मैं अपने पैरों के पास तड़पते हुए राक्षस के सामने खाली मैगज़ीन के साथ खड़ा नहीं हो गया, जिसकी चकनाचूर और क्षत-विक्षत खोपड़ी से खून की एक मोटी लाल धारा बह रही थी।
अगले ही पल मुझे घबराहट और कमजोरी महसूस होने लगी। मैं नदी के किनारे पहुँचा, जहाँ एक पल के लिए मैं लगभग बेहोश हो गया। लेकिन मेरे मजबूत शरीर ने मेरा साथ दिया और मैं कल्याणी नदी की मुख्य धारा पर जिन लोगों को छोड़कर गया था, उनके पास वापस लौट सका; उन्होंने मेरी पाँच गोलियों की आवाज सुनी थी, जिससे उन्हें पता चल गया था कि आदमखोर सांप सचमुच मर चुका है।
आपको यह जानकर शायद दिलचस्पी होगी कि हमने उस बाघ की खाल उतारने से पहले और बाद में बारीकी से जांच की, और शव का पोस्टमार्टम भी किया, फिर भी हमें उसमें कोई भी ऐसी शारीरिक या कार्यात्मक गड़बड़ी या विकार नहीं मिला जिससे वह आदमखोर बन गया हो। वास्तव में, वह एक सुगठित वयस्क जानवर था, जो बाहरी जांच से मिले सभी सबूतों के आधार पर, जंगल के जानवरों का शिकार करके अपना प्राकृतिक भोजन प्राप्त कर सकता था, या गांव के मवेशियों को खाकर भी अपना भोजन बना सकता था। लेकिन उसने जानबूझकर इन दोनों प्रकार के भोजन को त्याग दिया और मानव मांस के प्रति अपनी विकृत लालसा को पूरा किया, जिसके परिणामस्वरूप अंततः उसकी मृत्यु हुई, और संयोग से, मेरी भी मृत्यु होते-होते बची। वह मूल रूप से कहां से आया था, यह कोई नहीं जानता था, लेकिन सभी इस बात से खुश थे कि अब वह उन जंगलों में चला गया है जहां से वापसी नहीं है।

4

होसदुर्गा-होलालकेरे नरभक्षी
ओलल्केरे, चितलद्रूग जिले का दूसरा सबसे बड़ा शहर है। चितलद्रूग जिला स्वयं मैसूर राज्य का सबसे उत्तरी जिला है और उत्तर-पूर्व में मद्रास प्रांत के पड़ोसी बेल्लारी डिवीजन और उत्तर-पश्चिम में बंबई प्रांत से सटा हुआ है। यह लंबे समय से बाघों द्वारा आदमखोरी की छिटपुट घटनाओं का केंद्र रहा है, और इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि यह इलाका उन बाघों का निवास स्थान है जिन्हें मानव मांस खाने की आदत विरासत में मिली है।
लगभग दस साल पहले इस क्षेत्र में मानव हत्याओं की कई घटनाएं सामने आईं थीं, जिसे मैसूर गजट में विज्ञापन के माध्यम से बिना किसी बड़े खेल लाइसेंस की आवश्यकता के बाघों के मुफ्त शिकार के लिए खोल दिया गया था।
उस समय बैंगलोर में एंगस मैकटेविश और उनकी पत्नी नाम का एक बहुत ही उत्साही दंपति रहता था, जो बाघ, विशेष रूप से आदमखोर बाघ को मारने के लिए उत्सुक थे, और उन्होंने मुझे सुझाव दिया कि हम तीन लोगों का एक दल बनाएं और इस प्रयास में लगभग चार सप्ताह बिताएं।
तदनुसार, हम मैकटेविश की कार में बैंगलोर से चितलद्रूग के लिए रवाना हुए, जो उसी नाम के जिले की राजधानी है, जहां हमने जिला वन अधिकारी से मुलाकात कर हाल ही में हुई हत्याओं और उनके घटित होने के स्थानों के बारे में सभी संभावित जानकारी प्राप्त की।

N
Chattakere
Yedavalli River
Hirapur
TIGER KILLED
MARIKAHAVE RESERVOIR
Chitaldroog
Yogimutt
HAMLET
WASHERMAN KILLED
Holalkere
Palmgrove
Hosdurga
TODD KILLED
SOUTHERN RAILWAY

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

विशाल झील है जिसमें बड़ी-बड़ी मछलियाँ और मगरमच्छ रहते हैं। इसके बाद बाघ इस झील के किनारे-किनारे उत्तर की ओर लगभग सीधी रेखा में चितलद्रूग कस्बे तक जाता है। उन्होंने हमें आश्वस्त किया कि वास्तव में, बाघ को एक पुराने किले के खंडहरों के बीच देखा गया था, जो योगी मठ नामक एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर स्थित है, जो कस्बे के दक्षिण में अचानक ऊपर उठती है।
मुझे पता था कि इस पुराने किले के आसपास के इलाके में लंबे समय से आवारा भालू और तेंदुओं का आना- जाना लगा रहता था, और कभी-कभार बाघ भी दिख जाते थे, लेकिन आगे विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि हम होलालकेरे और होसदुर्गा की ओर बढ़ेंगे, जहां हम स्थानीय रिपोर्टों को सुनने के बाद, परिस्थितियों के अनुसार अपना परिचालन केंद्र स्थापित करेंगे।
अगली सुबह जल्दी निकलकर हम एक घंटे के भीतर होलालकेरे पहुँच गए, जहाँ आदमखोर के दिखने पर हमेशा की तरह घबराहट और डर का माहौल बना रहता है। हमें तरह-तरह की कहानियाँ सुनाई गईं, जिनमें से कुछ तो एक-दूसरे के बिल्कुल विपरीत थीं। इन सभी बातों से हम बस इतना ही समझ पाए कि आदमखोर बहुत चालाक जानवर है, जो हर जगह घूमता है और अप्रत्याशित जगहों पर अचानक प्रकट होने में माहिर है। एक प्रचलित अफवाह यह थी कि वह अक्सर खजूर के विशाल बागान में आता-जाता रहता है, जिसके बीच-बीच में लैंटाना की घनी झाड़ियाँ हैं और जो होलालकेरे से होसदुर्गा जाने वाली सड़क के दोनों किनारों पर फैला हुआ है। यह बागान होलालकेरे के बाहरी इलाके से थोड़ा आगे शुरू होता है। हमें बताया गया कि उसके पदचिह्न लगभग हर दिन सड़क पर देखे जा सकते हैं, और हमें सलाह दी गई कि हम रात भर दोनों जगहों को जोड़ने वाले नौ मील के रास्ते पर गाड़ी चलाते रहें, क्योंकि हम निश्चित रूप से आदमखोर से मिलेंगे, खासकर खजूर के बागान से गुजरते समय।
तदनुसार, हम उस रात 7 बजे रवाना हुए और होलालकेरे को एक मील पीछे छोड़ते ही ताड़ के पेड़ों के ऊंचे, फैले हुए पत्ते दिखाई देने लगे। उनके नुकीले तने घनी झाड़ियों से पूरी तरह से छिपे हुए थे, जो नीचे से लैंटाना की घनी और निरंतर फैली हुई वनस्पति से ढके हुए थे। इस बिंदु से हम बहुत धीमी गति से आगे बढ़े, चारों दिशाओं में स्पॉटलाइट चमकाते हुए, जबकि चमकती हुई हेडलाइट्स हमारे सामने सड़क को चीर रही थीं। इस तरह आधा मील चलने के बाद, हमें एक काले, बालों वाले आदमी जैसा दिखने वाला व्यक्ति दिखाई दिया, जो हमारे दाईं ओर लगभग 15 फीट ऊंचे ताड़ के पेड़ पर चढ़ गया था और नुकीले पत्तों के बीच लटके हुए छोटे, पीले अधपके खजूर के गुच्छों को निगलने में व्यस्त था।
हम पास पहुँचे और गाड़ी रोक दी, तभी एक अजनबी नीचे उतरने लगा। आधा उतरकर वह रुक गया और हमारी तरफ देखने लगा। मेरे साथियों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उनका 'अजनबी' खजूर की दावत में खलल पड़ने से परेशान एक सुस्त भालू था। मुझे शुरू से ही पता था कि यह एक भालू है, लेकिन मैं चाहता था कि मेरे साथी खुद इसे देखें। श्रीमती मैकटेविश ने अपनी.3005 स्प्रिंग फील्ड राइफल से गाड़ी से ही सटीक निशाना लगाया और वह जानवर ज़ोरदार आवाज़ के साथ ज़मीन पर गिर पड़ा।
फिर हम बिना कुछ देखे होसदुर्गा की ओर चल पड़े, होलालकेरे लौट आए, और फिर दो बार आगे-पीछे दोनों दिशाओं में चक्कर लगाए, लेकिन अपनी अंतिम वापसी यात्रा में भालू के शव के पास एक लकड़बग्घे के अलावा कुछ नहीं दिखा। इसलिए, हमें डर था कि अगर हमने शव को वहाँ और अधिक देर तक छोड़ दिया तो वह नष्ट हो जाएगा, इसलिए हम तीनों ने बड़ी मुश्किल से उस भारी शरीर को मैक की कार के इंजन और आगे के मडगार्ड के बीच की जगह पर उठाया। भालू के बाल लंबे होते हैं, लेकिन चिकने होते हैं, और जानवर के किसी भी हिस्से को मजबूती से पकड़ना बहुत मुश्किल था, क्योंकि जैसे ही उसका वजन उठाया जाता था, वह उंगलियों से फिसलने लगता था।
अगली सुबह हमने होलालकेरे स्थित ट्रैवलर्स बंगलो में चाय पी, साथ ही गरमागरम दलिया और बेकन-अंडे भी खाए, जिन्हें श्रीमती मैकटेविश ने बेहतरीन तरीके से तैयार किया था। भालू की खाल उतारने के बाद हमने होसदुर्गा जाने का फैसला किया ताकि वहां हुई दो हालिया मानव हत्याओं के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त कर सकें।
दिन के उजाले में खजूर के बागान से गुजरने से हमें चारों ओर फैली घनी, हर तरफ फैली लैंटाना की झाड़ियों की सघनता का पूरी तरह से एहसास हुआ, जिसकी कल्पना पिछली रात करना असंभव था, और साथ ही यह भी कि ऐसी जगह पर बाघ को देखने या उसका शिकार करने की कितनी कम उम्मीद थी।

जमने दिया जाता है, जिसके बाद इसे चार इंच के चौकोर टुकड़ों में काटकर गुड़ या भूरी चीनी बनाई जाती है। दक्षिण भारतीय गाँवों में गुड़ ही चीनी का एकमात्र रूप है, क्योंकि वहाँ सफेद चीनी का कोई नामोनिशान नहीं है। लगभग हर उपजाऊ क्षेत्र के गाँव में गन्ने के बागान होते हैं, जिनमें गन्ने के तवे भी होते हैं। हमने होसदुर्गा में इनमें से कुछ तवे पहले ही देख लिए थे।
कुछ ही देर में हम गाँव से वापस आ गए, हमारे साथ एक तख़्ता था जिसे आधा दर्जन आदमी उठाकर लाए थे, एक तिरपाल का टुकड़ा था जिसे मैक अपनी कार में लाया था, और रात भर रुकने के लिए ज़रूरी बाकी सामान भी था। हमने इस तख़्ते को अपने खोदे हुए उथले गड्ढे के ऊपर उल्टा करके रख दिया और इसे चार जगहों से पत्थरों से ज़मीन से ऊपर उठा दिया, ताकि देखने और हवा आने-जाने के लिए छह इंच का गैप रहे और गोली चलाने के लिए जगह मिल सके। तख़्ते के ऊपर हमने तिरपाल बिछा दिया, फिर उसे उथले गड्ढे से खोदी गई रेत की कुछ बूंदों से ढक दिया, और कुछ कांटे, कटी हुई झाड़ियाँ, पत्ते आदि भी डाल दिए ताकि यह असली लगे। हमने सारा काम अच्छे से किया, ताकि दूर से देखने पर तख़्ता ज़मीन पर एक छोटे से टीले से ज़्यादा कुछ न लगे।
मैक के अंदर जाने ही वाला था कि उसकी पत्नी ने उसके साथ बैठने की ज़िद कर दी, जिससे एक और पेचीदगी खड़ी हो गई। हम दोनों ने उसे समझाने की पूरी कोशिश की, लेकिन वह अपनी बात पर अड़ी रही। आखिरकार, मैंने और बाकी आदमियों ने एक तरफ से तवा उठाया, मैक परिवार को अंदर घुसने दिया और फिर सारा इंतज़ाम ठीक किया। असल में, मुझे अंदर काफी सुरक्षित महसूस हो रहा था, क्योंकि उल्टा तवा एक तरह से कवच का काम कर रहा था। फिर चारा बांधा गया और जिस चट्टान पर मुझे लेटना था, वहाँ जाने से पहले यह तय हुआ कि ज़रूरत पड़ने पर हम एक-दूसरे को तीन तेज़ सीटी बजाकर संकेत देंगे।
मैं शाम 5 बजे तक अपनी चट्टान पर चढ़ गया, आराम से बैठ गया और आगे की घटनाओं का इंतजार करने लगा। मुझे याद है कि दिन भर सीधी धूप में रहने के कारण पत्थर असहनीय रूप से गर्म हो गया था।
जैसे-जैसे घंटे बीतते गए, सन्नाटा पसरा रहा और जंगल में जीवन का कोई नामोनिशान नहीं था। यहाँ तक कि जानी-पहचानी चिड़िया, जो उस समय स्वागत योग्य लगती थी, भी गायब थी। सन्नाटा गहरा और पूर्ण था, और तारे अजीब सी खामोशी में टिमटिमा रहे थे। मैं बेचारे फ्रेड टॉड और उसके साथ जो कुछ हुआ होगा, उसके बारे में सोचने लगा।
आधी रात बीत गई, तभी अचानक मुझे एक तेज़ सीटी की आवाज़ सुनाई दी, जो दो बार दोहराई गई। यह मैक का तय किया हुआ संकेत था, और यह सोचकर कि उसे क्या हुआ है, मैं चट्टान से नीचे उतरा, टॉर्च जलाई और सावधानी से उस जगह की ओर बढ़ा जहाँ वह और उसकी पत्नी मौजूद थे। मैंने उन्हें भैंस के चारे के पास खड़े पाया, जो ज़िंदा था और उसे छुआ भी नहीं गया था। एक तरफ वह बर्तन पड़ा था जो बाहर निकलते समय पलट गया था, और उन्होंने मुझे यही बताया।
आधी रात तक उन्होंने कुछ भी देखा या सुना नहीं था, तभी श्रीमती मैक, जो भैंस की ओर मुंह करके अपने पति के ठीक पीछे बैठी थीं, ने अपने पीछे एक हल्की सी आह या कराहने की आवाज सुनी। धीरे-धीरे चारों ओर देखते हुए और गड्ढे और जमीन के बीच की जगह से देखने की कोशिश करते हुए, उन्होंने पहले तो कुछ भी नहीं देखा। फिर उन्होंने छह फीट की दूरी पर एक चट्टान देखी, जो बाथटब जितनी बड़ी लग रही थी। उन्हें याद आया कि शाम को पहले वहां कोई चट्टान नहीं थी, इसलिए उन्होंने अपना सिर उस छेद के पास ले जाकर देखा और एक बाघ को जमीन पर पेट के बल लेटे हुए, अपने अगले पैर आगे फैलाए हुए, अपनी निगाहें उन पर गड़ाए हुए देखकर भयभीत हो गईं। हैरानी और डर से उनकी सांस अटक गई, लेकिन उन्होंने उसे दबाते हुए अपने पति का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की। मैक ने अपनी जगह से कुछ भी नहीं देखा था, और उनके लिए पीछे मुड़ना लगभग असंभव था, क्योंकि वह गड्ढा, जो मूल रूप से एक व्यक्ति के लिए खोदा गया था, दो लोगों के हिलने- डुलने के लिए बहुत छोटा था।
उसके लगातार इशारों से यह भांपते हुए कि कुछ असामान्य हो रहा है, मैक ने खुद को घुमाने का दृढ़ प्रयास किया, जिसके परिणामस्वरूप उसकी फैली हुई राइफल का मुंह बर्तन के किनारे से टकराया और हल्की सी धातु की खनक सुनाई दी। एक ज़ोरदार 'वूफ़' की आवाज़ आई और धड़ाम से बाघ उस उपकरण के ऊपर से कूद गया। यह जानते हुए कि वे पकड़े जा चुके हैं और अब और देर तक वहाँ रहने का कोई फायदा नहीं है, उन्होंने तय किए गए संकेत से मुझे बुलाया।

वहां ज्यादा देर रुकना बेकार था, इसलिए हमने होसदुर्गा स्थित बंगले में लौटने का फैसला किया और चारा वहीं रात के लिए छोड़ दिया, ताकि किसी अन्य योजना पर निर्णय लिया जा सके।
अगली सुबह मैंने कुछ आदमियों को चारा लाने के लिए भेजा। वे यह चौंकाने वाली खबर लेकर लौटे कि जानवर को मार दिया गया था और पूरी तरह खा लिया गया था। तुरंत मौके पर पहुँचकर हमने पाया कि उनकी बात सच थी। हमारे चारे का लगभग कुछ भी नहीं बचा था, सिवाय उसके सिर और खुरों के। ज़मीन की बारीकी से जाँच करने पर पता चला कि दो बाघों ने उसे खाया था, और वे पास ही पड़े एक उलटे गन्ने के बर्तन और तिरपाल के ढेर के बिल्कुल करीब थे, जो जानवरों को डराने में नाकाम रहे थे।
इस ताजा घटनाक्रम से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हमारा आदमखोर बाघ मौका मिलते ही मवेशियों का भी शिकार करता था। या फिर यह भी संभव था कि आसपास तीन बाघ सक्रिय हों; एक आदमखोर और दो मवेशियों के हत्यारे।
अगली रात हमने उसी योजना पर काम करने का फैसला किया। हमने उसी रास्ते पर एक चौथाई मील आगे एक नया चारा लगाया और पहले की तरह उसके बगल में गन्ने का गड्ढा बनाया। इस बार हमने गड्ढा इतना बड़ा बनाया कि उसमें मैक और मैं दोनों समा सकें। श्रीमती मैक बड़ी अनिच्छा से बंगले में रहने के लिए राजी हुईं। गड्ढे के ऊपर छलावरण वाली तिरपाल बिछाई गई, उसके नीचे ढीली रेत और कंकड़ की एक परत थी, साथ ही घास, कांटे और छोटी कटी हुई झाड़ियाँ भी थीं, जिससे पूरा गड्ढा ज़मीन में एक छोटे से उभार जैसा असली लगे। मैक और मैं पीठ सटाकर बैठे, राइफलें तैयार थीं, मैक का मुंह चारे की ओर था। इस बार हमने गड्ढे का छेद थोड़ा बड़ा रखा ताकि गोली चलाने के लिए ज़्यादा जगह मिल सके। इसके लिए हमने गड्ढे के चारों विपरीत सिरों पर बड़े पत्थर रखे।
मैक और मैं लगातार तीन रातों तक इसी तरह बैठे रहे, लेकिन हमें कुछ भी दिखाई या सुनाई नहीं दिया। लेकिन चौथी सुबह लगभग दस बजे, जब हम बंगले में झपकी ले रहे थे, तब खबर आई कि होलालकेरे से एक मील दूर, उसी खजूर के बाग में, जहाँ हमने कुछ दिन पहले भालू को गोली मारी थी, लगभग उसी जगह पर एक आदमी की हत्या कर दी गई है।
कार से जल्दी से वहाँ पहुँचते हुए, हम दोनों यह देखकर बेहद निराश और नाराज हुए कि इस बीच नवीनतम शिकार के परिजनों ने उसके शरीर को दाह संस्कार के लिए हटा दिया था, जिससे हमें उस मानव शिकार को देखने का मौका नहीं मिला, जिसके पास बाघ संभवतः वापस आ सकता था।
फिर हमने होलालकेरे से एक और भैंस का चारा लिया और उसे उस जगह से पचास गज की दूरी पर बांध दिया जहाँ उस आदमी की हत्या हुई थी। इस जगह पर सड़क के किनारे एक सुविधाजनक पेड़ था, और मैंने उस पेड़ पर एक मचान खड़ा किया। मैक थोड़ा अस्वस्थ महसूस कर रहा था और लगातार चार रातों तक जागने के बाद थका हुआ था, इसलिए उसने उस दिन आराम करने का फैसला किया और मैं अकेला जागता रहा।
फिर भी कुछ नहीं हुआ, और सुबह 6 बजे मैं थकावट, निराशा और घृणा की मिली-जुली भावनाओं के साथ होलालकेरे की ओर एक मील का सफर तय कर रहा था। वहाँ पहुँचकर मैंने कुछ आदमियों को चारा लाने के लिए भेजा। वे आधे घंटे में दौड़ते हुए वापस आए और खबर दी कि जैसे ही वे जानवर को खोलने वाले थे, जंगल में कुछ ही गज की दूरी पर एक बाघ ने दहाड़ मारी। फिर वे भैंस को वहीं छोड़कर तेजी से होलालकेरे वापस भाग गए।
गाड़ी में बैठकर हम तुरंत उस जगह पहुंचे और यह देखकर सचमुच हैरान रह गए कि हमारा चारा अभी भी ज़िंदा था। यह बहुत ही अप्रत्याशित था, क्योंकि हमें पूरा यकीन था कि भागते हुए आदमियों के नज़र से ओझल होते ही बाघ या बाघ भैंस को मार डालेंगे। मैंने जोखिम उठाते हुए तुरंत मचान पर चढ़कर मैक को होलालकेरे लौटने का निर्देश दिया। मुझे लगा कि शायद बाघ आ जाए।
कुछ नहीं हुआ, और दोपहर 1 बजे मुझे भूख और नींद दोनों महसूस होने लगी, तो मैं नीचे उतरा, चारा खोला और उसे लेकर होलालकेरे की ओर चल पड़ा।
उस रात, हमने चारा उसी जगह पर दोबारा बांधा, और मैं एक बार फिर जाग गया। मैक और उसकी पत्नी कार से होसदुर्गा गए, और गन्ने के खेत के नीचे, हमारे द्वारा छोड़े गए चारे के पास, उसी जगह पर एक साथ बैठ गए जहाँ हम दोनों लगातार तीन रातों तक बैठे थे।
फिर कुछ नहीं हुआ, और सुबह 6:30 बजे वे होसदुर्गा से कार में आए, मुझे ले गए और होलालकेरे के बंगले की ओर चल दिए, जहां हम सभी दोपहर के भोजन के बाद सो गए।

huddled

इसी बीच बाघ इधर-उधर घूमता रहा, लेकिन सुबह तड़के वह चला गया, और निराशा भरी एक और रात के बाद हम होसदुर्गा स्थित छोटे बंगले में लौट आए।
अगले दो दिनों तक कुछ भी नहीं हुआ, उन रातों में हमने होसदुर्गा, होलालकेरे और चितलद्रूग के बीच गाड़ी चलाते हुए बिताया, सड़क पर बाघों में से किसी एक से मिलने की उम्मीद में स्पॉटलाइट चमकाते रहे।
तीसरे दिन सुबह तड़के लुंबानी लकड़हारों के एक दल ने सूचना दी कि पिछली रात वे चार मील दूर जंगल में एक विशाल अलाव की आड़ में डेरा डाले हुए थे। उन्होंने अपने पाँचों बैलों को अलाव के चारों ओर एक घेरा बनाकर खड़ा किया था और वे अपने पाँचों बैलों के साथ अलाव के भीतर शरण लिए हुए थे। आधी रात को जब आग धीमी हो गई, तो एक बाघ चुपके से बैलों के पास से गुजरा और एक बैल पर हमला कर दिया। बाकी बैल इधर-उधर भागने लगे, जिससे वे जाग गए। उन्होंने चिल्लाकर बाघ पर जलती हुई लकड़ियाँ फेंकीं। इसके बाद बाघ भाग गया। बैल की गर्दन पर गहरा घाव था और उसे कई जगह खरोंचें भी आई थीं, लेकिन वह जीवित था। भोर होते ही वे चार बैलों और घायल बैल के साथ होसदुर्गा की ओर चल पड़े, पाँचवाँ बैल वहीं छोड़ दिया क्योंकि बैल उसे खींचने में असमर्थ था।
इन लुंबानी लोगों में से एक, जो बचपन से ही इस इलाके में रहता था और जंगल को अपनी हथेली की तरह जानता था, ने बताया कि छह मील दूर, जंगल के बीचोंबीच, एक छोटी सी धारा बहती है जो ढलानदार चट्टानों से घिरे एक साफ पानी के कुंड में जाकर मिलती है, जिसके नीचे विशाल पेड़ हैं। उसने दावा किया कि बाघों का स्थायी निवास इसी स्थान पर है। अब चूंकि गर्मी का मौसम है, इसलिए वे दोपहर की तेज धूप से बचने के लिए इस ठंडी जगह पर आराम करते हैं, और हर शाम शिकार पर निकलने से पहले या शिकार से लौटने के बाद सुबह तड़के, उनमें से कोई न कोई इस कुंड से पानी जरूर पीता है।
यह आदमी ज़ाहिर तौर पर अपने विषय का जानकार था, क्योंकि उससे हुई बातचीत से पता चला कि वह एक शिकारी और अवैध शराब विक्रेता था, जो जंगल के घने इलाकों में बबूल के पेड़ की छाल से 'अराक' नामक एक बहुत ही तेज़ शराब अवैध रूप से बनाकर खूब पैसा कमाता था। ज़ाहिर है, इस जगह के बारे में बहुत कम लोग जानते थे, और जो जानते भी थे, वे बाघों के डर से वहाँ जाने की हिम्मत नहीं करते थे। बातचीत का नतीजा यह निकला कि मैक और मैं उस दिन दोपहर के भोजन के बाद उसके साथ निकलेंगे और शाम, रात और अगली सुबह इसी तालाब पर बिताएंगे।
दोपहर तीन बजे हम उस स्थान पर पहुँचे, और बाघों के लिए इससे अधिक उपयुक्त स्थान मैंने शायद ही कभी देखा हो। तालाब छोटा था, चारों ओर ढलान वाली चट्टानों से घिरा हुआ था, लेकिन उसमें गिरने वाली छोटी सी धारा के किनारे बाघ की उपस्थिति का स्पष्ट संकेत दे रहे थे, क्योंकि बार-बार बने पदचिह्न नीचे की ओर जाते हुए तालाब को पार कर रहे थे। इन पदचिह्नों के मोटे तौर पर निरीक्षण से दो अलग-अलग जानवरों के पदचिह्नों का पता चला - एक बड़ा नर और एक वयस्क मादा। उसके बड़े आकार की बार-बार मिली रिपोर्टों के आधार पर, यह पूरी संभावना थी कि पहला बाघ ही मवेशियों को चुराने वाला था, जिससे अब यह संदेह करने का पुख्ता कारण बन गया था कि उसकी साथी, मादा बाघ, आदमखोर हो सकती है, जब तक कि दल में कोई तीसरा बाघ न हो।
एक जंगली आम का पेड़ तालाब के ठीक ऊपर, जहाँ से नदी का प्रवाह शुरू होता था, झुका हुआ था। इस पेड़ की निचली शाखाओं पर, लगभग पंद्रह फीट की ऊँचाई पर, हमने अपनी पोर्टेबल चारपाई मचान लगाई, जिसे हम इसी तरह के मौके के लिए अपने साथ लाए थे और लुंबानी उसे उठाकर लाया था। शाम 4:30 बजे हम तीनों उस मचान पर बैठे थे, क्योंकि आदमखोर सांप के डर से लुंबानी को अकेले भेजना खतरनाक था।
ऊपर लटके हुए विशाल पेड़ों के कारण, शाम सात बजे तक घोर अंधेरा हो जाता था, और कोई भी जानवर आसपास नहीं आता था; निस्संदेह वे जंगल के राजाओं की आदतन निकटता के कारण इससे बचते थे। घंटे गंभीर सन्नाटे में धीरे-धीरे बीतते गए, कभी-कभार सांभर और काकुर (या भौंकने वाले हिरण) की दूर से आती आवाजों से यह सन्नाटा टूटता था।
सुबह के 4 बज चुके होंगे जब हमें हल्की सी आह भरने और कराहने की आवाज़ सुनाई दी, और फिर हमारे सामने ढलान वाले किनारे पर गिरे हुए बांस के पत्तों के कालीन पर बाघ के भारी लेकिन धीमी, दबी हुई कदमों की आहट साफ सुनाई दी। मिनट बीतते गए, लेकिन उस घोर अंधेरे में हमें कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर हमें अंधेरे में, दाईं ओर, नीचे तालाब के किनारे से पानी की लहरों की दूर से आती आवाज़ सुनाई दी।

तरह, मेरी मदद करने के लिए तुरंत आगे बढ़ गया। लेकिन जब उसने मुझे लंताना झाड़ियों से भागते हुए बुरी तरह घायल, खरोंचों से लथपथ और खून बहता हुआ देखा, तो उसका लाल चेहरा पीला पड़ गया और वह मुझे पकड़ने के लिए दौड़ पड़ा, जैसे उसे लगा कि मुझ पर किसी जानवर ने हमला कर दिया है।
वहाँ बैठकर मैंने उसे सारी घटना बताई, साथ ही अपनी प्रिय पाइप से धुएँ के बादल उड़ाते हुए उसकी हार्दिक शुभकामनाएँ सुनीं। वास्तव में, उस सुकून देने वाले पाइप से तंबाकू पीते हुए मैं यह कहने से खुद को रोक नहीं पाया कि जब मैंने कुछ ही दूरी पर हत्या की लालसा से विकृत उस भयानक चेहरे को देखा था, तो मैंने कभी दोबारा धूम्रपान करने की उम्मीद ही नहीं की थी।
उसी रात हमने बाघ को नीचे उतारा, गाड़ी पर लादा और चितलद्रूग कस्बे ले गए। जैसा कि हमने अनुमान लगाया था, वह मादा निकली और निस्संदेह वही आदमखोर बाघिन थी जिसने लड़के की हत्या की थी। मेरे प्रति उसकी आक्रामकता ने भी इस निष्कर्ष को पुष्ट किया। अगली सुबह, जब हम जानवर की खाल उतार रहे थे, तभी अमिलदार, ज़िला वन अधिकारी और अन्य अधिकारी, तथा सैकड़ों स्थानीय निवासी हमसे मिलने आए। अमिलदार उस बाघ को देखना चाहता था जिसने होसदुर्गा में उसके रिश्तेदार, उस छोटी बच्ची की हत्या की थी। उस शाम काफी देर हो चुकी थी जब हम दो बाघों की खाल लेकर बैंगलोर के लिए रवाना हुए, जिन्होंने एक असाधारण और अनसुना संयोजन बनाया था - मवेशी मारने वाला और आदमखोर एक साथ शिकार कर रहे थे।
संयोगवश, बाघिन की खाल उतारने पर भी उसके आदमखोर बनने का कोई कारण पता नहीं चला। जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, इस जिले का आदमखोर बाघों का लंबा इतिहास रहा है, जो कई पीढ़ियों से चला आ रहा है, और मेरा मानना है कि यह बाघिन भी आदमखोरों की ही वंशज थी। इस व्याख्या से उसके साथी, उस बड़े नर बाघ के बारे में भी पता चलता है जिसे मैक ने गोली मारी थी, जो एक सामान्य पशु-चोर था और जिसने कभी इंसान का मांस नहीं खाया था।
संभवतः बाघिन की इस नर बाघ से मुलाकात प्रजनन काल के दौरान ही हुई थी, जो अभी-अभी समाप्त हुआ है (नवंबर से जनवरी तक चलता है)। वह उसके साथ इतने लंबे समय तक नहीं रही थी कि उसे अपनी नरभक्षी आदतें सिखा सके। यदि वह बच्चे पैदा करती, तो निस्संदेह वह अपने शावकों को भी मानव मांस का स्वाद सिखा देती, ठीक वैसे ही जैसे उसे सिखाया गया था, और इस प्रकार उस क्षेत्र में नरभक्षी बाघिनों की पीढ़ियों को आगे बढ़ा देती।
जिस तीसरे बाघ के अस्तित्व का हमें संदेह था, वह कभी सामने नहीं आया, क्योंकि जाने से पहले हमने सभी अधिकारियों और लोगों को यह संदेश दे दिया था कि अगर किसी तीसरे बाघ के बारे में कोई खबर मिले तो हमें तुरंत सूचित करें। ऐसा इसलिए था क्योंकि हमें हमेशा यह आशंका थी कि तीसरा बाघ भी आदमखोर हो सकता है। लेकिन कई महीने बीत गए और हमें यह खुशखबरी मिली कि तोगी-मठ की चोटी पर उस बाघिन के मारे जाने के बाद पूरे जिले में आदमखोरी की सभी खबरें बंद हो गई थीं। फ्रेड टॉड और उसके बाकी शिकारों का बदला ले लिया गया था।

5

पनापत्ती का दुष्ट हाथी
वह एक छोटा जानवर था, जैसा कि शरारती हाथियों के मामले में होता है, मोज़े पहने हुए लगभग साढ़े सात फुट लंबा। इसका अनुमान उसके अगले पैर के निशानों से लगाया जा सकता था, जिनकी परिधि दोगुनी होने पर भारतीय हाथी की ऊंचाई लगभग दो इंच के अंतर से आ जाती है। लेकिन कद में कमी को उसने साहस, ठंडे दिमाग से की गई चालाकी और मानव जाति के प्रति अटूट घृणा से पूरा किया, जिसे उसने स्पष्ट रूप से अपना लक्ष्य बना लिया था कि जब भी मौका मिलेगा, वह उसे नष्ट कर देगा।
उसके एक दांत की लंबाई लगभग 18 इंच थी, जबकि दूसरा दांत टूटकर छोटा हो गया था। ऐसा कहा जाता था कि यह टूटा था कावेरी नदी के किनारे और सलेम जिले के वोडापत्ती वन क्षेत्र में रहने वाले झुंड के बड़े सरदार ने तोड़ा था। इसी क्षेत्र में पनापत्ती का पशुशाला स्थित था। यह नौजवान, बदमाश बनने से पहले, जाहिर तौर पर महत्वाकांक्षी और सामान्य से अधिक उत्साही था, क्योंकि उसने झुंड के सरदार की आंखों के सामने ही मादाओं पर अपना अवांछित ध्यान केंद्रित किया था। सरदार की गुस्से और आक्रोश भरी चेतावनी भरी चीख का उस पर कोई असर नहीं हुआ और जब उस हाथी ने उसे भगाने की कोशिश की तो नौजवान ने उससे लड़ाई करने का प्रस्ताव रखा।
इसके परिणामस्वरूप एक भीषण संघर्ष हुआ, जिसमें वर्षों के अनुभव और अधिक वजन ने नेता के पक्ष में भारी जीत दर्ज की। अंततः युवा योद्धा बुरी तरह घायल होकर भाग निकला, उसके शरीर के किनारों पर बड़े नर के शक्तिशाली दांतों से गहरे घाव हो गए थे, जबकि उसका अपना एक दांत लड़ाई में टूटकर अलग हो गया था, जिससे उसे आने वाले कई दिनों तक दांत में तेज दर्द होता रहेगा।
वह उदास और चिड़चिड़ा होकर झुंड के आसपास भटकता रहता था, लेकिन कभी उसमें प्रवेश करने की हिम्मत नहीं करता था। एक दिन, जब वह जंगल के एक बैलगाड़ी मार्ग पर चल रहा था, तो एक मोड़ पर उसका सामना अचानक एक भैंसगाड़ी से हुआ, जो ठेकेदार के लिए काटे गए बांसों से लदी हुई थी। उस क्षण उसे अंधाधुंध क्रोध आ लगा, साथ ही बदला लेने की तीव्र इच्छा भी। वह पागलों की तरह बैलगाड़ी की ओर दौड़ा, और चालक किसी तरह कूदकर अपनी जान बचाकर भाग गया। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण भैंसें भारी भरकम बैलगाड़ी से जुती हुई थीं और हमले के सामने असहाय खड़ी रहीं।
वह बदमाश—क्योंकि अब वह सचमुच बदमाश बन चुका था—ने बैलगाड़ी को टुकड़े-टुकड़े कर दिया, फिर भैंसों की ओर मुड़ा। एक भैंस को उसने उसके लंबे, घुमावदार सींग से पकड़ा और उसे रास्ते के किनारे बने टीले से नीचे फेंक दिया, जहाँ वह अगले दिन मिली। उसका सींग जड़ों से उखड़ा हुआ था; उसके एक अगले पैर में गंभीर फ्रैक्चर हो गया था, और टूटी हुई, बाहर निकली हुई हड्डी गिरने के बल से नरम मिट्टी में धंस गई थी, जिससे जानवर के वजन ने उसे वहीं जकड़ लिया था। दूसरी भैंस को उसने अपने एक दांत से घायल कर दिया, लेकिन वह जानवर रास्ते से नीचे भाग गया, बैलगाड़ी के टूटे हुए जुए को अपने पीछे घसीटता हुआ, और इस तरह अपने बदकिस्मत साथी के भाग्य से बच गया।
इसके बाद हाथी की प्रतिष्ठा लगातार बिगड़ती चली गई, और नदी की ओर जाने वाले कई दुर्भाग्यशाली राहगीर या तो उसके विशाल पैरों के नीचे दबकर मर गए या फिर उस भयानक सूंड की चपेट में आकर जंगल के पेड़ के तने से टकराकर चूर-चूर हो गए।
इस जानवर से मेरा पहला सामना संयोगवश हुआ था। मैं सप्ताहांत में महसीर मछली पकड़ने और मौका मिलने पर मगरमच्छ पकड़ने के इरादे से कावेरी नदी के किनारे, पनापत्ती से लगभग चार मील दूर होगेनैकल गया था। अफवाहों के अनुसार, उस समय वह मगरमच्छ उस इलाके में नहीं था, क्योंकि वह ताज़ा चारागाह की तलाश में भटकते हुए हाथियों के झुंड के पीछे-पीछे नदी पार करके कोयंबटूर चला गया था।
दूसरे दिन शाम को, मछली पकड़ने में निराशाजनक अनुभव के बाद, मैं चाय के लिए वन लॉज में लौट आया था, तभी पास ही एक मोर की आवाज ने मुझे उस पक्षी के पीछे जाने के लिए प्रेरित किया, मुझे उम्मीद थी कि वह मुझे उस रात के खाने के लिए एक स्वादिष्ट रोस्ट बना देगा।

मैंने अपनी शॉटगन के ब्रीच में कुछ गोलियां डालीं और जंगल को तिरछे पार करते हुए उस घाटी की ओर बढ़ा जहाँ मोर बोल रहा था। वहाँ पहुँचकर, मैंने अपने शिकार को खोजने के प्रयास में सावधानीपूर्वक आगे कदम बढ़ाया और अंततः चिनार धारा के सूखे तल पर पहुँच गया, जो कावेरी नदी की एक सहायक नदी है और एक मील आगे जाकर उसमें मिल जाती है।
मेरे रबर के तले वाले बूट नरम रेत पर बिल्कुल भी आवाज़ नहीं कर रहे थे। मुझे सामने वाले किनारे पर झाड़ियों के पीछे कहीं मोर के पंखों की सरसराहट सुनाई दे रही थी, जब वह अपनी पूंछ संवार रहा था। मैं दबे पांव नदी पार कर ही रहा था कि एक तीखी, तुरही जैसी आवाज़ ने सन्नाटे को तोड़ दिया, और उसके तुरंत बाद पचास गज दूर झाड़ियों से निकलते हुए एक विशालकाय मोर की गड़गड़ाहट सुनाई दी, जो तेज़ी से मेरी ओर बढ़ा।
भागकर बचने की कोशिश की निरर्थकता को समझते हुए—क्योंकि हाथी अविश्वसनीय गति से दूरी तय कर सकते हैं और मेरे पास उससे आगे निकलने का कोई मौका नहीं था, क्योंकि आसपास के जंगल की नरम रेत और चिपचिपी कांटेदार झाड़ियाँ बाधा बन रही थीं—मैंने अपनी शॉटगन की नज़र में उसकी मुड़ी हुई सूंड को लिया और लगभग तीस गज की दूरी से दोनों बैरल से गोली चला दी।
धमाके की आवाज़ और गोलियों की चुभन ने उसे क्षण भर के लिए रोक दिया, और जब वह क्रोध और विद्रोह से चीख रहा था, मैं अपनी खाली बंदूक लिए उसी रास्ते पर भाग गया जिससे मैं आया था, इतनी तेज़ गति से कि मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं इतनी तेज़ दौड़ पाऊँगा। वन बंगले पर पहुँचकर मैंने अपनी राइफल उठाई और वापस भागा। लेकिन चिनार नदी के सुनसान रेगिस्तान में कुछ भी दिखाई नहीं दिया, और जब मैं उस जगह के पास पहुँचा तो देखा कि वह बदमाश दूसरी तरफ जंगल में चला गया था, जहाँ रात होने वाली थी इसलिए मैंने उसका पीछा करने की ज़हमत नहीं उठाई।
अगले दिन मुझे व्यापारिक उद्देश्य से बैंगलोर लौटना था और मेरे लिए अपना प्रवास बढ़ाना संभव नहीं था, इसलिए मैंने पहले दौर का पूरा जिम्मा पनापत्ती के उस बदमाश पर छोड़ दिया।
अपनी कुख्याति के कारण इस प्राणी को सरकार द्वारा अवांछनीय या 'बदमाश' हाथी घोषित कर दिया गया था, और वन विभाग द्वारा आधिकारिक अधिसूचना प्रिंट माध्यमों और स्थानीय स्तर पर ढोल बजाकर प्रसारित की गई थी, जिसमें इसके विनाश के लिए 500 रुपये (लगभग 34 पाउंड) का सरकारी इनाम देने की पेशकश की गई थी। फिर उस इलाके के एक भारतीय सज्जन ने बड़ी बहादुरी से हाथी को मौत के घाट उतारने और इनाम पाने का निश्चय किया। बाद में मैंने जो जानकारी जुटाई, उसके अनुसार उनके इस प्रयास का विवरण इस प्रकार था। एक जर्जर हालत में मौजूद.500 डबल बैरल वाली ब्लैक-पाउडर एक्सप्रेस राइफल से लैस होकर वह पनापत्ती पहुंचा और उसे बताया गया कि हाथी पास के वोडापत्ती वन ब्लॉक में घूम रहा है। वही चिनार नदी, जिसके तल पर होगेनैकल के पास मैं उस विशालकाय हाथी के पैरों तले लगभग मरते-मरते बचा था, पनापत्ती से होकर खूबसूरती से मुड़ती है और जंगल से होकर बहती है, जिसका उत्तर-पश्चिमी किनारा वोडापत्ती रिजर्व की सीमा बनाता है, और उसका विपरीत किनारा पेन्नाग्राम ब्लॉक की सीमा बनाता है।
जिस भारतीय सज्जन की मैं बात कर रहा हूँ, उन्होंने दो दिन तक उस हाथी से मिलने की असफल कोशिश की, इसलिए तीसरे दिन की रात उन्होंने पेन्नाग्राम ब्लॉक के भीतर लगभग दो मील दूर स्थित अपने तंबू में बिताई। यह तंबू चिनार नदी और वोडापत्ती पर्वतमाला से काफी दूर था, जहाँ से हाथी कभी बाहर नहीं निकलता था। लेकिन एहतियात के तौर पर उन्होंने अपने साथियों से अपने दोनों तंबुओं के चारों ओर आग का घेरा बनवाया और उन्हें निर्देश दिया गया कि रात की पहरेदारी के दौरान आग को जलाने और हवा देने के लिए पर्याप्त मात्रा में लकड़ी बचाकर रखें।
तब सब कुछ शांत होने पर, वह जाहिर तौर पर गहरी नींद में सो गया; और जाहिर है, उसके अनुयायी भी सो गए। भोर होते ही वह दुष्ट हाथी इस शांत दृश्य पर आ पहुँचा। आग शायद धीमी पड़ चुकी थी, बस उसके अंगारे ही सुलग रहे थे। सामान्यतया, कोई हाथी या कोई अन्य जानवर आग के पास नहीं जाता। लेकिन सफेद तंबू को देखकर और उसे नष्ट करने की तीव्र इच्छा ने उस जानवर को इतना उत्तेजित कर दिया कि वह सावधानी से उस जगह से होकर गुजरा जहाँ आग नहीं थी और क्रोध से चीखते हुए तंबू पर टूट पड़ा।
शिविर में मौजूद लोग शोर-शराबे से जाग उठे और जब उन्हें एहसास हुआ कि कोई राक्षस उन पर टूट पड़ा है, तो वे इधर-उधर भागने लगे। सफेद तंबू में रहने वाले उस बदकिस्मत व्यक्ति को अपने पुराने एक्सप्रेस का इस्तेमाल करने का मौका ही नहीं मिला। तंबू उसके सिर के पास गिर पड़ा और हाथी के भारी-भरकम शरीर

दूसरे किनारे से नदी पार करके आया था। मोटे तौर पर नापने पर पता चला कि वे पदचिह्न उस हाथी के पदचिह्नों से मेल खाते थे।
अब पीछा करना आसान हो गया था, क्योंकि हमारे पास अनुसरण करने के लिए एक निश्चित निशान था, और हाथी के पदचिह्न और भारी शरीर ने घास, बांस और झाड़ियों के बीच एक स्पष्ट रास्ता बना दिया था।
पदचिह्न एक छोटी पहाड़ी की ओर ऊपर की ओर जाते हुए हमें गोबर के ढेर तक ले गए, जिसके शिखर के पास हमें गोबर का ढेर मिला। यद्यपि यह काफी ताजा था, फिर भी छूने पर उसमें वह गर्माहट नहीं थी जिससे पता चलता कि इसे अभी हाल ही में निकाला गया था। इसलिए हम आगे बढ़े और एक गहरी घाटी में उतर गए। यहाँ हमें और भी ताजा गोबर मिला, लेकिन छूने पर गर्माहट नहीं थी, जिससे पता चला कि हमारा लक्ष्य अभी कुछ दूरी पर ही था।
हम किसी तरह पास की ढलान पर चढ़े और दो और छोटी पहाड़ियों को पार किया, और फिर हमने देखा कि रास्ते अचानक घूमकर कावेरी नदी की सामान्य दिशा में वापस जाने लगे।
हमें डर सताने लगा कि कहीं जानवर कावेरी नदी पार करके हमसे बच न निकला हो। तेज़ी से आगे बढ़ते हुए, हम गोबर के एक और ढेर के पास पहुँचे, जिस पर पेशाब के निशान थे जो ज़मीन में समा गए थे। लेकिन इस बार रेत में झाग के बारीक निशान दिखाई दे रहे थे और गोबर छूने पर गर्म था। आखिरकार, हमारा शिकार ज़्यादा दूर नहीं था, और न ही कावेरी नदी!
हमारी आगे की यात्रा लगभग एक दौड़ में बदल गई, ताकि हम हाथी के साथ ही नदी तक पहुँच सकें और उसके राइफल की मारक क्षमता से बाहर निकलने से पहले ही वहाँ पहुँच जाएँ। गिरी हुई शाखाओं से, जिनसे ताजा रस रिस रहा था, हम देख सकते थे कि हाथी नदी की ओर बढ़ते हुए आराम से चर रहा था।
अंत में, ज़मीन में एक तेज़ ढलान और एक हल्की सी आवाज़ ने हमें बताया कि हम नदी के किनारे के लगभग पास पहुँच चुके हैं, और जल्द ही पेड़ों के बीच से पानी की चमक ने हमें पुष्टि कर दी कि हम वहाँ पहुँच गए हैं। चुपचाप और सावधानी से हम आगे बढ़े। रेत नरम हो गई। तभी हमने देखा कि हाथी, जैसा कि हमें डर था, नदी पार करने के बजाय अपना इरादा बदल चुका था और नदी के विपरीत दिशा में घास के किनारे पर चला गया था। यहाँ यह स्पष्ट था कि उसके पदचिह्न अभी हाल ही के थे, क्योंकि घास की कोमल पत्तियाँ नम कीचड़ में मजबूती से धँसी हुई थीं, जिसमें से हवा के बुलबुले हमारी आँखों के सामने फूट रहे थे।
हम लगभग 150 गज और आगे बढ़े ही थे कि हमें सामने एक छोटी नदी दिखाई दी, और जैसे ही हम उसके पास पहुँचे, हमें पानी के छपछपाने की आवाज़ और हाथी की सूंड से हवा निकलने की खोखली आवाज़ सुनाई दी। हमारा शिकार नहा रहा था।
सौभाग्य से, जो हल्की हवा चल रही थी वह हमारी दिशा में थी, और जैसे ही हमने बीच में मौजूद घास की टहनियों और तनों को हटाया, हमने पानी में एक हाथी को एक तरफ लेटे हुए देखा, लेकिन उसका चेहरा हमसे दूर था।
इस स्थिति में यह बताना असंभव था कि वह जानवर कोई शरारती हाथी था या नदी के दोनों किनारों पर रहने वाले कई हाथियों के झुंडों में से भटककर आया हुआ हाथी। इसलिए हम बैठकर उसे देखने लगे।
लगभग पाँच मिनट तक ज़ोर-ज़ोर से साँस लेने, फूँकने और पानी उछालने के बाद, जानवर अचानक उठा और धीरे- धीरे नाले के पार चलने लगा। इस पूरे समय में उसने अपना सिर नहीं दिखाया था, और न ही हम यह देख पाए थे कि उसके दो दाँत थे या एक तरफ टूटा हुआ ठूंठ था।
अब स्थिति ऐसी थी कि तुरंत फैसला लेना जरूरी था, क्योंकि एक बार हाथी नाले के दूसरी तरफ घनी हरियाली में पहुँच जाता तो वो नज़रों से ओझल हो जाता। इसलिए मैंने जल्दी से दो बार अंगूठा और उंगली चटकाई। वह आवाज़, चाहे कितनी भी धीमी रही हो, हाथी के तेज़ कानों तक पहुँच गई। पानी के छींटे और भंवर के साथ वो घूमा और हमारे सामने 'पनापत्ती का बदमाश' खड़ा था, उसके टूटे हुए बाएँ दांत का ठूंठ साफ दिखाई दे रहा था, जबकि दायाँ दांत, छोटा होने के बावजूद, ऊपर की ओर गुस्से से मुड़ा हुआ था। एक ही पल में उसकी छोटी आँखों ने हमें देख लिया, उसकी सूंड अंदर की ओर मुड़ी हुई थी, और सिर ऊपर उठाकर और अपनी छोटी पूंछ को बेतुके ढंग से बाहर निकालकर, जीत और नफरत से चीखते हुए, वो बीच के पानी को पार करते हुए एक और शिकार करने के लिए दौड़ पड़ा।
मेरी.405 राइफल से एक ही गोली चली, भारी ठोस गोली सीधे अपने लक्ष्य पर जा लगी, मुड़ी हुई सूंड के नीचे से होते हुए गले में जा लगी। जानवर वहीं रुक गया, और कटी हुई गर्दन की नस से खून की एक धार फूट

पड़ी। भागने की कोशिश में वह एक तरफ मुड़ा, तभी दो और गोलियां लगीं, दोनों ही महत्वपूर्ण अंगों पर, एक कनपटी के कोमल गड्ढे में और दूसरी उसके बड़े कान के पीछे, जब वह आगे की ओर फड़फड़ाया।
वह विशालकाय आकृति स्थिर खड़ी रही, फिर भयंकर बुखार से व्याकुल होकर कांप उठी, और अंत में जैसे किसी ने उसे कुल्हाड़ी से मार डाला हो, वैसे ही नाले के उथले पानी में गिर पड़ी, जो तेजी से खून से लाल हो गया, क्योंकि दोपहर ढलते सूरज की किरणें कोयंबटूर तट पर स्थित माउंट पोनाची मलाई की विशाल चोटी के नीचे गायब हो गईं, जिससे नारंगी आकाश में लाल रंग की लकीरें फैल गईं।

6

सेगुर का नरभक्षी
दक्षिण भारत में प्रसिद्ध नीलगिरी पर्वतमाला (जिसे 'नीली पर्वतमाला' भी कहा जाता है) की उत्तर-पूर्वी ढलानों की तलहटी में सेगुर गांव बसा हुआ है। इस खूबसूरत पर्वतमाला के शिखर पर, समुद्र तल से लगभग 7,500 फीट की ऊंचाई पर, ऊटाकामंड का सुंदर स्वास्थ्य रिसॉर्ट स्थित है। 'पहाड़ी स्टेशनों की रानी' के नाम से मशहूर यह स्थान भारत के कोने-कोने से आने वाले पर्यटकों का आकर्षण केंद्र है। ऊटाकामंड की अपनी एक अलग ही खूबसूरती है, जहां की जलवायु सभी प्रकार के अंग्रेजी फूलों और सब्जियों के उत्तम विकास के लिए अनुकूल है। आस-पास के बागानों से स्टेशन तक फैली ऊंचे नीलगिरी के पेड़ों की सर्वव्यापी सुगंध, देवदार और चीड़ के पेड़ों की सुगंध के साथ मिलकर, ऊटी की यादों को अविस्मरणीय बना देती है, और इसकी ठंडी जलवायु आगंतुकों को नीचे स्थित उमस भरे मैदानी इलाकों की गर्मी और थका देने वाले तापमान से एक सुखद बदलाव प्रदान करती है।
ऊटाकामंड से एक खड़ी ढलान वाली सड़क निकलती है, जिसकी लंबाई 12 मील है। यह सड़क सुंदर, घुमावदार पहाड़ियों से होकर गुजरती है, जहाँ कभी अंग्रेज़ निवासियों का शौक लोमड़ी का शिकार करना हुआ करता था (जहाँ लोमड़ी की जगह स्थानीय सियार का इस्तेमाल होता था)। इसके बाद यह सड़क सेगुर की ओर तेज़ी से नीचे उतरती है, जो पर्वत श्रृंखला की तलहटी में स्थित है और जहाँ घने उष्णकटिबंधीय वन फैले हुए हैं। सड़क कुछ जगहों पर इतनी खड़ी है कि लगभग अनुपयोगी है, केवल उच्च शक्ति वाली मोटर कारों के लिए ही उपयुक्त है। सेगुर में सड़क दो भागों में बँट जाती है। एक शाखा उत्तर-पश्चिम की ओर घने जंगल से होकर, महवनहल्ला और मासिनीगुडी गाँव से गुजरती हुई, तिप्पकाडु की वन चौकी पर मुख्य सड़क से मिलती है, जो बैंगलोर और मैसूर शहरों को ऊटाकामंड से जोड़ती है। दूसरी शाखा पूर्व की ओर, उतने ही घने जंगल से होकर, नीले पहाड़ों की तलहटी के साथ-साथ, नौ मील दूर स्थित अनाइकुट्टी के वन बंगले तक जाती है। इस क्षेत्र में दो बारहमासी नदियाँ बहती हैं: सेगुर नदी और अनाइकुट्टी नदी। दोनों ही नीलगिरी पर्वतमाला से चांदी की तरह चमकते झरनों के रूप में नीचे आती हैं। यहाँ इनका जल विशाल उष्णकटिबंधीय जंगलों से होकर बहता है और लगभग पंद्रह मील दूर स्थित मोयार नदी में मिल जाता है। मोयार नदी, जिसे 'मैसूर खाई' के नाम से भी जाना जाता है, उत्तर में मैसूर राज्य, उत्तर-पूर्व में कोयंबटूर जिले और दक्षिण में नीलगिरी पर्वतमाला और उसकी तलहटी के बीच सीमा बनाती है। कोयंबटूर और नीलगिरी दोनों मद्रास प्रांत का हिस्सा हैं। पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम में मालाबार-वायनाद के सदाबहार वन फैले हुए हैं।
उल्लेखित सभी क्षेत्र घने जंगलों से आच्छादित हैं, मैसूर, मालाबार और नीलगिरी की ओर वन्यजीव अभ्यारण्य हैं, और बड़ी संख्या में जंगली हाथी, बाइसन, बाघ, पैंथर, सांभर, चित्तीदार हिरण और अन्य जानवरों का निवास स्थान हैं।
अनाइकुट्टी का वन-बंगला एक छोटी पहाड़ी पर बना है, जिसके किनारे अनाइकुट्टी नदी का उफनता पानी बहता है। गर्मियों में यह जगह मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों से भरी होने के कारण अस्वस्थ रहती है और कई घातक 'काले पानी' के बुखार का कारण भी बनती है। सर्दियों में यह स्वर्ग समान होता है। सुबह ताज़ी और धूप से भरी होती है, जो जंगल में लंबी पैदल यात्रा के लिए आदर्श है। दोपहर हल्की ठंडी होती है। शामें सर्द होती हैं, और रात होते ही पहाड़ों की चोटियों से बर्फीली ठंडी हवा नीचे आती है और आसपास के जंगलों से उठने वाली गर्म हवा की जगह ले लेती है। रातें इतनी कड़ाके की ठंड से भरी होती हैं कि व्यक्ति को बंगले में ही रहना पड़ता है, जिसके सभी कमरों में चिमनी की व्यवस्था की गई है। यहाँ क्रिसमस का माहौल छा जाता है, जंगल की लकड़ियों की जलती हुई आग के सामने बैठकर लोग 'भयानक हिममानव' की ताज़ा कहानियों पर चर्चा करते हैं या भूत-प्रेतों की कहानियाँ रोंगटे खड़े कर देने वाले विस्तार से सुनाते हैं। इस बंगले के परिसर के भीतर भी हाथी, बाघ और तेंदुआ घूमते हैं, उनकी चीखें, दहाड़ें और गुर्राहटें नींद में डूबे हुए व्यक्ति को, जो दोहरी चादरों के नीचे आराम से लेटा हुआ है

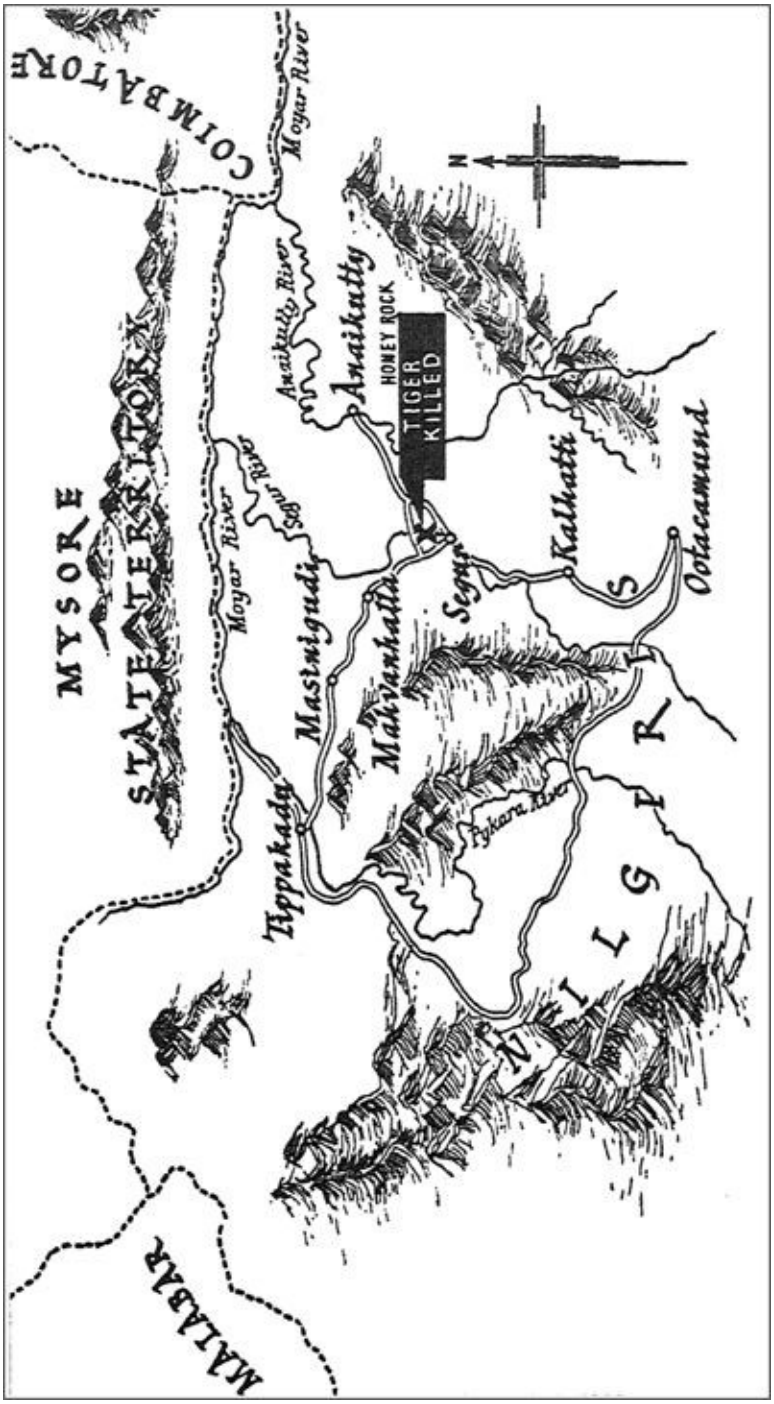
COIMBATORE
Moyar River
MYSORE
STATE TERRITORY
Anaikutty River
Anaikutty
HONEY ROCK
TIGER KILLED
N
Moyar River
Sigur River
Masinigudi
Tippakadu
Mukurthi
Segur
Kalhatti
Ootacamund
Pykara River
NILGIRIS
MALABAR

□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□

□□ □□□, □□□□ 5 □□□, □□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□, □□ □□□□-□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□, □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□, □□□□□□ □□ □□□□-□□□□ □□□□□□□ □□□, □□□□□ □□□-□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □ □□□ □□□, □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□

ऐसा प्रतीत होता है कि घटना का प्रत्यक्षदर्शी कोई नहीं था। महिला पुल के पास एकत्रित लोगों से थोड़ी दूर, सड़क के नीचे से गुजरने से ठीक पहले छोटी सी धारा के मोड़ पर छिपी हुई थी। उसने चीख मारी और उसके बाद सन्नाटा छा गया। शेष पाँच चरवाहे जल्दी से महवनहल्ला गए, वहाँ से छह अन्य लोगों को इकट्ठा किया, जिनमें उस दुर्भाग्यपूर्ण महिला का पति भी शामिल था, और उसकी तलाश में वापस उसी स्थान पर लौट आए। उन्हें वह टोकरी मिली जो वह ले जा रही थी, और पास ही नरम मिट्टी में बाघ के पदचिह्न मिले; फिर पूरा दल महवनहल्ला लौट आया। अगले दिन भोर में, जिन चार लोगों ने अब अपनी पहचान बताई थी, वे पैदल मार्ग से अनाइकुट्टी तक दस मील की दूरी तय करने और मुझे घटना की सूचना देने के लिए निकल पड़े, क्योंकि यह ज्ञात हो गया था कि मैं बाघ का शिकार करने के लिए उस क्षेत्र में था।
हम उस जगह गए जहाँ महिला पर हमला हुआ था, और मेरे करुम्बा ट्रैकर की कुशल सहायता से हम जल्द ही बाघ और उसके शिकार के पदचिह्नों का पता लगाने में सफल रहे। पीछा करने से पहले मैंने महावनहल्ला से दल को विदा किया, साथ ही मृतक के पति को भी, जिसने मुझसे वादा लिया कि मैं उसकी प्रिय पत्नी की कम से कम कुछ हड्डियाँ अवश्य वापस लाऊँगा ताकि अंतिम संस्कार की रस्में पूरी हो सकें।
लगभग बिना रुके, मेरे करुम्बा गाइड ने बाघ द्वारा छोड़े गए उस अदृश्य निशान का पीछा किया जो मुझे बिल्कुल दिखाई नहीं दे रहा था। आदमखोर बाघ स्पष्ट रूप से एक ऊँची पहाड़ी की ओर बढ़ रहा था, जो नीलगिरी पर्वतमाला की एक शाखा थी और पश्चिम में सड़क के समानांतर लगभग दो मील की दूरी पर स्थित थी। वर्षों पहले मैं एक अच्छे बाइसन के सिर की तलाश में इसी पहाड़ी पर आंशिक रूप से चढ़ा था, और जानता था कि इसकी मध्य ढलानें लंबी भाला घास के विशाल आवरण से ढकी हुई थीं, जो ऊपर और अधिक पथरीले स्तरों पर पहुँचने पर धीरे-धीरे कम होती जाती थीं। उस क्षेत्र में, मुझे लगा कि बाघ या उसके शिकार को खोजने की हमारी संभावना बहुत कम थी।
फिर भी, मेरा छोटा सा साहसी मार्गदर्शक बिना किसी गलती के आगे बढ़ता रहा, और पहाड़ी की तलहटी से एक मील की दूरी पर झाड़ियों में फंसी महिला की साड़ी मिली। कुछ ही देर बाद बाघ ने अपना इरादा बदल लिया, क्योंकि उसका रास्ता दाहिनी ओर, पहाड़ी के समानांतर मुड़ गया, जो अब काफी पास थी, और फिर से महावनहल्ला नदी के तल की ओर चला गया। उसका पीछा करते हुए, हम अंततः नदी तक पहुँच गए, जो यहाँ एक गहरी घाटी से होकर बह रही थी। इस ढलान पर बिखरे हुए बांस के झुंडों की संख्या बढ़ती जा रही थी, और गिद्धों की तीखी चीख और उनके पंखों की भारी फड़फड़ाहट ने जल्द ही हमारी खोज के अंत की घोषणा कर दी। महिला के अवशेष बांस के एक झुंड के नीचे पड़े थे, जिन्हें बाघ खा गया था, और गिद्धों ने उसके भोज से बचा हुआ हिस्सा चट कर लिया था। हमें सिर अलग पड़ा मिला, बड़ी चिड़ियों ने उसकी आँखें निकाल ली थीं, और चेहरे का अधिकांश मांस भी खा लिया था। हमने उसके हाथों और पैरों, कांच की चूड़ियों और चांदी की पायल समेत उस भयानक अवशेष को इकट्ठा किया और घास में लपेट दिया। अपने वादे के मुताबिक, करुंबा ने बड़ी अनिच्छा से उस गठ्ठे को अपने पति के पास पहुंचाया। वहीं बैठे रहना समय की बर्बादी लग रहा था, क्योंकि बाघ ऐसे बिखरे हुए अवशेषों के पास वापस नहीं आएगा।
उस रात मैंने कार से शिकार जारी रखा, लेकिन सफलता नहीं मिली। अगले दिन मुझे एक जवान भैंस मिली, जिसे मैंने महवनहल्ला में नदी के मोड़ के पास बांध दिया, जहाँ उस महिला पर हमला हुआ था। बाघ के उसी स्थान पर आने की संभावना बहुत कम थी, इसलिए मैंने जीवित भैंस के पास बैठकर शिकार होने का इंतज़ार करने का फैसला किया।
मेरा यह अनुमान गलत निकला, क्योंकि अगले दिन दोपहर से पहले ही संदेशवाहक अनाइकुट्टी पहुँचकर यह सूचना देने आए कि भैंस को बाघ ने मार डाला है और उसका कुछ हिस्सा खा लिया है। दोपहर 3 बजे तक मेरा मचान तैयार हो गया था और मैं लगभग पंद्रह फीट की ऊँचाई से मृत भैंस को देखते हुए बैठ गया।
नीलगिरी की निचली ढलानों पर रहने वाली नेवले की एक बड़ी प्रजाति, एक विशाल लाल मार्टिन, शिकार स्थल पर सबसे पहले दिखाई दी। वह शाम लगभग 5:30 बजे आई, पहले तो उसने सावधानी से थोड़ा-थोड़ा खाया, और फिर कच्चे मांस के बड़े-बड़े टुकड़े चट करने लगी। शाम 6 बजे तक उसका पेट पूरी तरह भर चुका था, और वह रात भर या तो बिना सपने देखे संतुष्टि से या फिर बदहजमी से जूझते हुए बिताने के लिए चली गई।
जैसे ही शाम ढलने लगी, तीन सियार दबे पांव आगे बढ़े। बड़ी हिम्मत से वे मरे हुए जानवर के पास पहुँचे, उसे सूंघा और चारों ओर आशंका से देखते हुए भाग निकले, लेकिन भूख और तीव्र भूख के कारण वे हर बार लौट

आते थे। लगभग चौथी कोशिश में वे खाने के लिए बैठे, लेकिन कुछ ही निवाले खा पाए थे कि तभी एक हलचल मच गई और वे गायब हो गए।
मुझे लगा कि यह निश्चित रूप से बाघ का आगमन है, और सचमुच एक दबे पांव, भूरे रंग की आकृति खुले में प्रकट हुई और सावधानी से अपने शिकार की ओर बढ़ी। हालांकि, कोई बाघ इतनी शर्मिंदगी से अपने ही शिकार के पास नहीं जाता, और लकड़बग्घा—आखिरकार वह लकड़बग्घा ही था—अपने छोटे चचेरे भाइयों, सियार की तरह सतर्क और भयभीत होकर शिकार के पास जाने लगा।
कई बार उसने मांस को सूंघा, और साथ ही इधर-उधर चुपके से देखता रहा। कई बार वह लड़खड़ाते हुए दूर चला गया, चारों ओर चक्कर लगाकर यह देखने के लिए कि आसपास कोई है या नहीं, फिर सावधानी से वापस आकर जल्दी से एक निवाला भर लेता। फिर वह एक और चक्कर लगाता ताकि यह सुनिश्चित कर सके कि शिकार का असली मालिक आसपास तो नहीं है और उसे रंगे हाथों पकड़ न ले। यह सिलसिला लगभग आधे घंटे तक चलता रहा, फिर लकड़बग्घा गंभीरता से भोजन करने बैठ गया।
वह दस मिनट से खाना खा रहा था कि पास ही एक बाघ ने पुकारा, 'आ-ऊंघ, आउंघ-हा, उगा-उघ, ओ-ओ-ओ-न-ओ-ओ-न', यह आवाज शांत रात की हवा में चार बार दोहराई गई, और लकड़बग्घा मानो जादू से उड़ गया और वापस नहीं लौटा। मैं तल्लीन बैठा रहा, पल भर के लिए जंगल के राजा के आने की उम्मीद कर रहा था। लेकिन घंटे बीतते गए और वह नहीं आया। कारण चाहे जो भी रहा हो, उस रात उस बाघ ने अपने शिकार से दूरी बनाए रखी, और सुबह होते ही मैं भीषण ठंड से कांपने लगा, जो गर्मी के मौसम के बावजूद शुरू हो चुकी थी। मैं सुबह होने तक वहीं बैठा रहा, फिर अपनी मचान से नीचे उतरा, जकड़ा हुआ और अकड़ा हुआ, दुनिया से और खासकर उस बाघ से पूरी तरह निराश और हताश। उस रात वह अपने शिकार के इतने करीब आकर भी क्यों नहीं आया, यह हमेशा एक रहस्य ही रहेगा।
अगले दिन मैंने आराम किया और अपनी रोज़ की रात की दिनचर्या के अनुसार तिप्पाकाडु जाने और वापस आने के लिए गाड़ी चलाई, लेकिन बाघ का कोई निशान नहीं दिखा। इस बार अनाइकुट्टी जाने वाली सड़क के मोड़ पर ही एक छोटा सा पैंथर सड़क किनारे बने पुलिया से कूद गया और खाई में दुबक गया। गाड़ी के गुजरते समय उसकी चमकीली आँखें स्पॉटलाइट की ओर टकटकी लगाए देख रही थीं। मैंने उस नन्हे जानवर को अकेला छोड़ दिया, ताकि वह उन खूबसूरत जंगलों में खुशी से अपने दिन बिता सके जहाँ वह सही मायने में रहता था। अगला सप्ताह बिना किसी घटना के बीत गया, और मैंने खोज छोड़ कर बैंगलोर लौटने का विचार करना शुरू कर दिया, लेकिन अंततः मैंने प्रस्थान करने से पहले तीन और दिन रुकने का फैसला किया। इन तीन दिनों में से एक दिन बिना किसी घटना के बीता, जब दूसरे दिन दोपहर के समय, सेगुर के एक धनी पशुपालक के बेटे, बडागा लड़के को, जो अपने पिता के लिए दोपहर का भोजन लेकर जा रहा था, बाघ उठाकर ले गया। उसके पिता मवेशियों और अन्य केशव चरवाहों के साथ थे।
मैं अपने करुम्बा (एक प्रकार का चाकू) के साथ तुरंत उस स्थान पर पहुँच गया, ताकि बाघ के निशानों का पीछा कर सकूँ। बाघ लड़के को सेगुर नदी के पार उत्तर की ओर जंगल में ले गया था। हमने फिर बिना देर किए उसका पीछा किया और इस बार हमें नाले में छिपा हुआ, आधा खाया हुआ शव मिला। दुर्भाग्य से, पिता वहाँ पहुँच गया और शव को हटाना चाहता था, और उसे शव को वहीं रहने देने और मुझे थोड़ा आराम करने का मौका देने के लिए मनाने में एक घंटा बर्बाद हो गया।
शव के आसपास कोई उपयुक्त पेड़ या चट्टान नहीं थी जिसमें मैं छिप सकूँ, इसलिए अंततः शव को लगभग पचास फीट दूर बाँस के झुंड की ओर ले जाने का निर्णय लिया गया, जिसके ऊपर एक अस्थिर मचान खड़ा था। वहाँ पहुँचने के लिए मुझे बाँस के कटे हुए तनों पर चढ़ना पड़ा, और मैंने पाया कि वह मचान मेरे जीवन में अब तक के सबसे खराब मचानों में से एक था। हवा के हर झोंके से वह बुरी तरह हिल रहा था, और मेरे जरा से हिलने पर भी बाँस नीचे से कर्कश आवाज कर रहे थे। इसके अलावा, मुझे शव ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था, जो तीस गज से अधिक दूर था। मेरे चारों ओर उग रहे बाँस के तनों ने पास से देखने में पूरी तरह बाधा डाल रखी थी।
मेरी निगरानी की शुरुआत बेहद नीरस थी, और एक मोर के अलावा कोई भी जीवित प्राणी नज़र नहीं आया। वह मोर उस जगह से थोड़ा ऊपर नाले के किनारे पर आकर बैठा जहाँ शव पड़ा था। वहाँ से वह धीरे-धीरे नीचे की ओर चलने लगा, जब तक कि अचानक उसकी नज़र नाले में पड़े उस मानव शरीर पर नहीं पड़ी जहाँ हमने उसे छोड़ा

अपनी यात्रा फिर से शुरू की। मैं सुबह अनाइकुट्टी के आसपास के जंगल में बाघ से अचानक मुलाक़ात की उम्मीद में घूमता था और फिर कार से तिप्पाकाडु जाकर रात को वापस आता था।
दो दिन बाद, पिछले तीन हफ्तों से चल रही मेरी बदकिस्मती अचानक बदल गई। उस सुबह, मैंने कुछ मील नीचे की ओर सेगुर नदी के किनारे चलने का फैसला किया; अपने करुम्बा बैग के साथ सेगुर गाँव तक गाड़ी चलाते हुए, मैंने एक बड़े केले के बागान में गाड़ी खड़ी की और अपनी योजना पर अमल करना शुरू कर दिया।
नदी के बहाव की दिशा में लगभग एक मील नीचे दलदली इलाका है, जहाँ वर्षों पहले बाइसन बड़ी संख्या में रहते थे और जिसे आज भी स्थानीय लोग 'बाइसन दलदल' के नाम से जानते हैं। इससे आधा मील आगे, नदी के दोनों किनारों पर घने बांस के जंगल का एक बड़ा हिस्सा फैला हुआ है। ये बांस हमेशा से हाथी और सांभर का पसंदीदा ठिकाना रहे हैं, और बाघ कभी-कभी पहाड़ियों से नीचे आते समय यहाँ से गुजरते हैं।
सुबह के 8:30 बज रहे थे और हम अभी-अभी बांस के जंगल में दाखिल ही हुए थे कि नदी के दूसरी ओर से एक हिरणी ने ज़ोर से आवाज़ लगाई, और उसके तुरंत बाद ही एक नर हिरण की कर्कश आवाज़ सुनाई दी। करुम्बा परिवार और मैं नदी के किनारे उगने वाली घनी सरकंडों के बीच ज़मीन पर बैठ गए। दोनों सांभरों ने जल्दी-जल्दी आवाज़ें निकालीं, और यह स्पष्ट था कि किसी बात ने उन्हें डरा दिया था।
पहले तो मुझे लगा कि उन्होंने हमें देख लिया है या हमारी आहट सुन ली है, लेकिन यह सोचकर मैंने यह विचार त्याग दिया कि जो भी हवा चल रही थी वह सांभर से हमारी ओर, ऊपर की ओर बह रही थी। साथ ही, वे हमें देख भी नहीं सकते थे, क्योंकि वे बांस के घने जंगल में काफी दूरी पर थे, जहाँ से हम बिल्कुल ओझल थे। हमारी यात्रा बहुत शांत और सतर्कता से चल रही थी, इसलिए सांभर की लगातार तेज आवाजों से यही निष्कर्ष निकाला जा सकता था कि उन्होंने किसी बाघ या तेंदुआ को देख लिया है या उसकी आहट सुन ली है, क्योंकि आदमखोर जानवर के डर से इतने सुनसान इलाके में कोई और इंसान मौजूद नहीं होगा।
हम लगभग दस मिनट तक सरकंडों में लेटे रहे, तभी नदी के तल में बिखरे पत्थरों पर तेज आवाज के साथ एक सांभर हिरण, जिसके पीछे एक हिरणी भी थी, तेजी से नदी पार करके उसी किनारे पर मौजूद बांसों के बीच गायब हो गया, जहां हम छिपे हुए थे।
चिंता भरे क्षणों के बीतने के दौरान हममें से कोई भी हिल नहीं सका, और फिर चुपचाप, शालीनता और साहस के साथ, एक बाघ सामने के बाँसों की आड़ से निकला और नदी के ढलान पर सरकते हुए नदी के किनारे तक पहुँच गया। बिना किसी झिझक के वह नदी में उतर गया, पत्थरों की परवाह किए बिना, और जब पानी उसके सीने तक पहुँच गया, तो वह रुक गया और पानी चाटने लगा।
मैंने सावधानीपूर्वक निशाना साधते हुए उसके बाएं कंधे के पीछे गोली चलाई। वह खांसते हुए पीछे की ओर उछला और फिर करवट लेकर एक तरफ लेट गया, उसका चेहरा मुझसे दूर उस किनारे की ओर था जहाँ से वह अभी आया था। छिपने की जगह से बाहर निकलकर मैं लगभग चालीस गज आगे बढ़ा, जहाँ से मुझे उसके चेहरे का एक हिस्सा ही दिखाई दे रहा था, बाकी का हिस्सा पानी में डूब चुका था। यहाँ मैं पूरे पंद्रह मिनट तक रुका रहा, ज़रूरत पड़ने पर एक और गोली चलाने के लिए, लेकिन इसकी ज़रूरत नहीं पड़ी, क्योंकि बाघ मर चुका था।
मैंने पहले भी बताया है कि मैंने आदमखोर सांप के पंजों का सावधानीपूर्वक माप लिया था, जिसकी तुलना मैंने अपने सामने मौजूद सांप के पंजों से की और पाया कि वे बिल्कुल मेल खाते हैं। इस प्रकार मुझे पता चला कि अंततः, कई थका देने वाले प्रयासों और निराशाजनक असफलताओं के बाद, मैंने सेगुर के आदमखोर सांप को मार गिराया था।
उसके नरभक्षी स्वभाव का कारण भी स्पष्ट हो गया, क्योंकि उस जानवर की केवल एक ही आँख थी। बची हुई आँख की पुतली सिकुड़कर लगभग गायब हो गई थी। इस बाघ की खाल उतारते समय मैंने उस आँख के गायब होने के कारण की जाँच करने में विशेष सावधानी बरती, और चाकू से आँख के बचे हुए हिस्से को खोदकर निकालते समय मुझे सॉकेट में एक गोली का छर्रा धँसा हुआ मिला।
इस बात का स्पष्ट कारण था कि वह जानवर आदमखोर क्यों बन गया था। संभवतः किसी शिकारी ने, जो बंदूक से लैस था, मालाबार-वायनाद की सुदूर शांत घाटी में उस जानवर के चेहरे पर गोली चलाई थी। गोली उसकी आंख में घुस गई और उसे अंधा कर दिया। दर्द से कराहते और आंख खोने से लाचार होकर, बाघ को अपने सामान्य शिकार का शिकार करने में कठिनाई हो रही थी, इसलिए उसने उसी प्रजाति से बदला लिया जिसने उसकी आंख छीन ली थी।

7

येम्मैदोद्दी का नरभक्षी
एम्मेदोड्डी दक्षिण भारत के मैसूर जिले के कादुर में स्थित एक वन क्षेत्र है। यह पहाड़ियों की एक श्रृंखला से घिरा हुआ है, जिनमें से सबसे ऊँची पहाड़ी का नाम होगर खान है। ये पहाड़ियाँ बाबा बुदंस नामक विशाल पर्वत श्रृंखला की पूर्वी शाखा का निर्माण करती हैं, जिसकी ऊँचाई 6,500 फीट तक है। 'मडक' नामक एक भव्य झील, जो पूरी तरह से वन से ढकी पहाड़ियों से घिरी हुई है, इस क्षेत्र की दक्षिणी सीमा बनाती है। इस झील से एक संकरी जलधारा, जिसके समानांतर एक संकरी वन सड़क है, दस मील उत्तर-पूर्व की ओर बहती है, और बिरूर नामक छोटे कस्बे से लगभग तीन मील उत्तर में स्थित एक छोटी झील में मिल जाती है। यह क्षेत्र वन्यजीवों से समृद्ध है, और उससे भी अधिक समृद्ध है मवेशियों के विशाल झुंडों से, जिन्हें दिन के समय चरने के लिए जंगल में ले जाया जाता है और प्रत्येक शाम को बिरूर वापस लाया जाता है।
इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि आसपास के इलाके बाघों से भरे पड़े हैं। ये बाघ सबसे पहले शिकार करने के लिए आते हैं, ताकि प्रचुर मात्रा में पाए जाने वाले सांभर, चित्तीदार हिरण और जंगली सूअर का शिकार कर सकें, लेकिन जल्द ही वे मवेशी चुराने लगते हैं, क्योंकि मवेशियों को मारना बहुत आसान होता है और स्थानीय चरवाहे अपने पशुओं की देखभाल में पूरी तरह से लापरवाह और उदासीन रहते हैं। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि शायद ही कोई दिन ऐसा गुजरता हो जब किसी बाघ के जबड़ों में कोई अच्छी गाय या बैल न मर जाए, जबकि बिरूर के बाहरी इलाकों में पैंथर द्वारा बछड़ों, बकरियों और गांव के कुत्तों का शिकार करना भी लगभग उतना ही आम है।

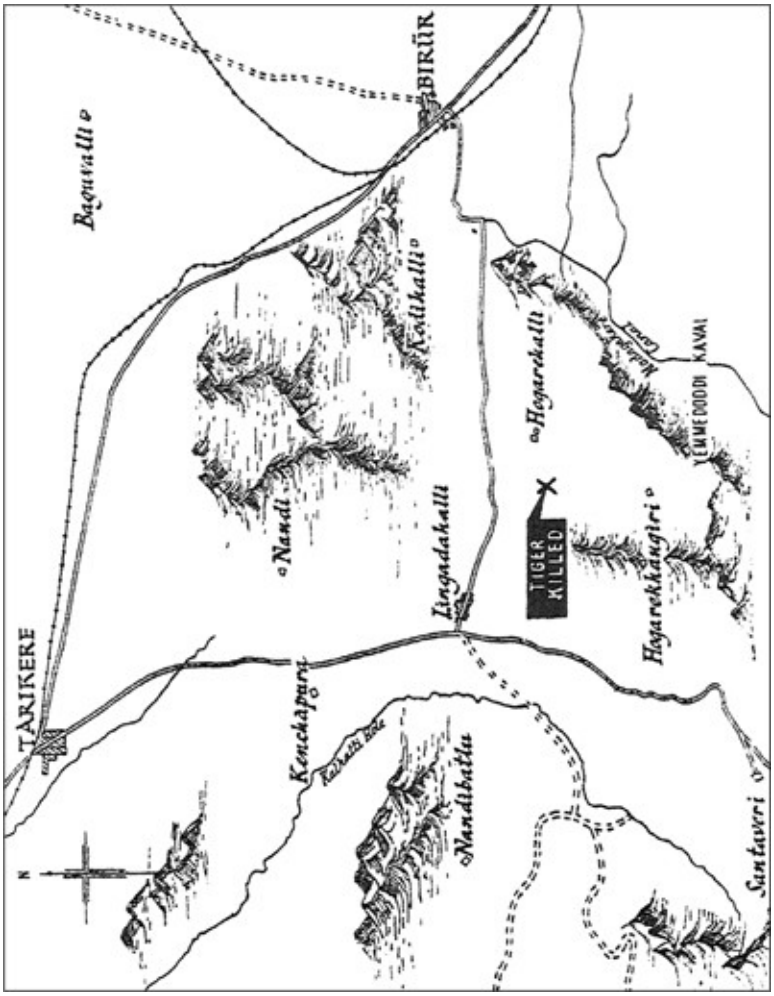

येम्मैदोद्दी के आदमखोर की कहानी में उल्लिखित स्थानों का रेखाचित्र बनाइए।

दरअसल, ये छोटे मांसाहारी जानवर अपने बड़े चचेरे भाइयों की तुलना में संख्या में कम हैं, और खुद को शहर के बाहरी इलाकों तक ही सीमित रखते हैं, बाघों के क्षेत्र से काफी दूर, क्योंकि वे उस बड़े जानवर से डरते हैं जिसके वे कभी-कभी शिकार बन जाते हैं।
सन् 1946 की शुरुआत में, इस इलाके में एक छोटा नर बाघ प्रकट हुआ, जिसकी आदतें बिल्कुल अलग थीं। उसने बिरूर के बाहरी इलाके के पास, शाम के समय लौट रहे झुंडों से बछड़ों और बकरियों को छीनकर मारना शुरू किया। उसके शिकार को पहले तो किसी तेंदुआ का शिकार समझा गया, सिवाय इसके कि वह बड़े बछड़ों की गर्दन तोड़ देता था। शिकार करने का यह तरीका लगभग हमेशा बाघों द्वारा ही अपनाया जाता है, और कभी-कभी जंगल के बड़े तेंदुओं द्वारा भी, जिन्हें हिंदुस्तानी में 'थेंदू' कहा जाता है। इसलिए, हमलावर को उनमें से एक समझने की काफी संभावना थी, जब तक कि एक बार एक डरे हुए चरवाहे ने सचमुच एक छोटी गाय को मरते हुए नहीं देखा, जिसके बाद संदेह दूर हो गया।
यह युवा जानवर इलाके में तेजी से वयस्क हो गया, चमत्कारिक रूप से विभिन्न शिकारी जानवरों, चाहे वे स्थानीय हों या विदेशी, के हमलों से बचता रहा, और चालाक और साहसी भी होता चला गया, यहाँ तक कि अठारह महीनों में यह मवेशी चराने वालों के लिए एक बड़ा खतरा बन गया, सप्ताह में दो बार, और कभी-कभी तीन बार भी शिकार करता था, और हमेशा हर बार एक विशेष रूप से बढ़िया नमूने का चयन करता था।
1948 के अंत में, मैं अपने कुछ मित्रों के साथ येम्मैदोड्डी गया, ताकि उनमें से एक, अल्फी रॉबर्टसन के लिए एक ट्रॉफी प्राप्त कर सकूँ, जो जल्द ही इंग्लैंड लौटने वाला था। मुझे बाघ के बारे में कई बार

खबरें मिली थीं और मुझे पूरा विश्वास था कि मेरे साथी के लिए उस जानवर का शिकार करना काफी आसान होगा, बशर्ते हम बिरूर में कुछ दिनों तक डेरा डाले रहें और फिर शिकार की खबर प्राप्त करें।
हम बैंगलोर से 134 मील की दूरी तय करने के लिए निकले थे। दुर्भाग्यवश, मुझे अपने कार्यालय में रुकना पड़ा और हम देर शाम को निकले। सड़कें बेहद खराब थीं और बैंगलोर से 86 मील दूर टिपटूर नामक स्थान के पास हमारा एक्सीडेंट हो गया। हम अपने दोस्त की कार का इस्तेमाल कर रहे थे और वही गाड़ी चला रहा था। पिछला पहिया एक दिखने में सपाट पत्थर पर चढ़ गया, जो पहिया के एक सिरे से गुजरने पर अपने किनारे पर खड़ा हो गया, और दूसरे सिरे ने कार के पीछे स्थित पेट्रोल टैंक में नौ इंच का छेद कर दिया। इसके परिणामस्वरूप आठ गैलन पेट्रोल सड़क पर फैल गया और गाड़ी रुक गई।
हमारे पास अतिरिक्त पेट्रोल नहीं था, लेकिन हमारे पास प्राइमस स्टोव था, जिसके लिए हम पैराफिन तेल की दो बोतलें लाए थे। हमने फुट पंप के रबर लीड के एक सिरे को पैराफिन की बोतल में डाला और साइफन फीड शुरू करने के बाद दूसरे सिरे को कार्बोरेटर में जाने वाले पाइप से जोड़ दिया। इस तरह हम टिपटूर तक की बची हुई थोड़ी दूरी तय करने में कामयाब रहे। वहां हमने कस्बे के इकलौते मैकेनिक को जगाया, ईंधन टैंक खोला और किसी सोए हुए निवासी के घर के बाहर मिले पैराफिन के डिब्बे के एक हिस्से से उस छेद को किसी तरह ठीक कर दिया।
इसके बाद आगे की यात्रा के लिए ईंधन की बड़ी समस्या सामने आई। हम गाड़ी को शहर के एकमात्र पेट्रोल पंप तक धकेलते हुए ले गए, लेकिन हमें बताया गया कि पेट्रोल का स्टॉक पिछले दिन ही खत्म हो गया था और अगले दिन दोपहर तक, या उससे भी कम समय में, इसकी आपूर्ति नहीं हो पाएगी।
ऐसा लग रहा था कि हमें टिपटूर में लंबे समय तक रुकना ही पड़ेगा। कस्बे में एक-दो ट्रक खड़े थे। हमने सो रहे ड्राइवरों को जगाया और उन्हें एक गैलन पेट्रोल के लिए बहुत कम दाम की पेशकश की ताकि हम सोलह मील दूर अगले कस्बे अरसिकेरे तक पहुँच सकें, जहाँ बर्मा शेल का पेट्रोल पंप था और हमें उम्मीद थी कि वहाँ से हमें पेट्रोल मिल जाएगा। लेकिन सभी ड्राइवरों ने यही कहा कि उनका पेट्रोल खत्म हो गया है और वे अगले दिन दोपहर तक आने वाले नए स्टॉक का इंतज़ार कर रहे हैं।
हालात बेहद निराशाजनक थे, जब तक कि मैंने कुछ सख्त कदम उठाने का फैसला नहीं किया। सुबह के करीब 3:30 बज रहे थे, और नैतिकता और विवेक, टिपटूर शहर की तरह, बहुत पहले ही सो चुके थे। मैंने अल्फी को पैराफिन का डिब्बा लाने के लिए कहा, जिसमें से हमने ईंधन टैंक के लिए पैच काटा था, और खुद फुट-पंप का रबर का तार लेकर, हम टिपटूर की सुनसान गलियों में चुपके से आगे बढ़ने लगे। एक गली में हमें एक जर्जर 'ए' मॉडल फोर्ड दिखाई दी। मैंने अल्फी को निर्देश दिया कि वह मालिक के जागने से पहले उस पर कड़ी नजर रखे। मैं गाड़ी के दूसरी तरफ से धीरे-धीरे आगे बढ़ा। बोनट तक पहुँचकर, मैंने इंजन के पीछे ईंधन टैंक का ढक्कन हटाया, रबर की नली का एक सिरा टैंक में डाला, और कीमती ईंधन का एक चौथाई से थोड़ा अधिक हिस्सा उस डिब्बे में निकाल लिया, जिसे मैंने अपने घुटनों के बीच संतुलित कर रखा था। दूसरी बार कोशिश करने पर हमें एक और चौथाई ईंधन मिल गया। बचे हुए पैराफिन तेल की बोतल में ईंधन मिलाकर, हम जल्दी से अरसिकेरे के लिए रवाना हुए, जहाँ से हमें तेल की एक नई आपूर्ति मिली।
नतीजतन, हम सुबह करीब 7:30 बजे तक अपने गंतव्य, बिरूर नामक छोटे कस्बे में नहीं पहुँच पाए। हम कस्बे से गुज़रे और जंगल की ओर लगभग दो मील आगे बढ़े ही थे कि हमें एक खुला मैदान दिखाई दिया जहाँ कई गिद्ध जमा थे। मेरे दोस्त ने एक तस्वीर खींची, जबकि मैं इस जमावड़े का कारण जानने के लिए नीचे उतरा और यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि जिस सड़क से हम अभी गुज़रे थे, उसके किनारे लगी बाड़ के ठीक पास एक अधेड़ बैल पड़ा था, जिसे एक पैंथर ने मार डाला था।
इसमें कोई शक नहीं था कि शिकार एक पैंथर ने किया था, क्योंकि मृत जानवर के गले पर मौजूद दांतों के निशान से पता चलता था कि उसे गला घोंटकर मारा गया था। गर्दन की हड्डियां साबुत थीं और टूटी नहीं थीं, जबकि अगर हत्यारा बाघ होता तो ऐसा नहीं होता। इसके अलावा, जानवर का निचला हिस्सा खाया जा चुका था, जबकि आंतें अभी भी शव के अंदर थीं, जिससे यह बात पक्के तौर पर साबित होती है कि यह काम एक पैंथर ने ही किया था। बाघ साफ-सफाई का ध्यान रखता है और भोजन शुरू करने से पहले अपने शिकार के पिछले हिस्से में एक छेद बनाता है, जिसके जरिए वह आंतों और पेट को दस फीट दूर फेंक देता है, ताकि उसका भोजन मल-मूत्र से दूषित न हो।

हमें शुरुआती सफलता से बेहद खुशी हुई, और शिकार को गिद्धों से बचाने के लिए हमने झाड़ी से कुछ दूरी पर शाखाएँ तोड़ दीं। फिर मैंने झाड़ी में ही एक छिपने की जगह बनाई, जहाँ से शिकार पर सीधी नज़र रखी जा सकती थी। हमने यह छिपने की जगह बहुत अच्छी तरह बनाई, और अल्फी को लगा कि पिछली रात उसकी कार के साथ हुई परेशानी का उसे पूरा मुआवज़ा मिल गया है, क्योंकि उसे पूरा यकीन था कि शाम को जब पैंथर अपने शिकार के पास लौटेगा तो हम उसे मार गिराएँगे।
फिर हम कुछ दूर चले गए, खाना खाया और रात के रोमांच के लिए तैयार होने के लिए सो गए। शाम 5 बजे तक, हम शिकार और अपने छिपने की जगह पर लौट आए, उस आवरण को हटा दिया जिसने प्रभावी रूप से गिद्धों को मृत जानवर से दूर रखा था। अल्फी राइफल, टॉर्च, कंबल और पानी की बोतल के साथ छिपने की जगह पर बैठ गया, और मैं कार से बिरूर वापस जाने की तैयारी कर रहा था, तभी एक हांफता हुआ चरवाहा दौड़कर आया और हमें बताया कि उसकी एक बड़ी दुधारू गाय को अभी-अभी एक बाघ ने मार डाला है, लगभग आधा घंटा पहले और एक मील से भी कम दूरी पर।
मैंने फैसला अल्फी पर छोड़ दिया। क्या वह पैंथर को निश्चित शिकार के रूप में पसंद करेगा, या बाघ को संभावित शिकार के रूप में? मेरे अपने फैसले के अनुरूप, उसने बाघ पर हमला करने का विकल्प चुना। तदनुसार, हमने सारा सामान छुपने की जगह से निकालकर कार में रखा, आधा मील तक तेज़ी से गाड़ी चलाई, जब तक कि चरवाहे ने हमें रुकने के लिए नहीं कहा, फिर हमने सामान बाहर निकाला और उसके पीछे जंगल में शिकार की ओर चल पड़े।
हमें ज्यादा दूर नहीं चलना पड़ा, और तीन फर्लांग चलने के भीतर ही हमें मृत जानवर मिल गया - एक सुंदर काली दुधारू गाय। उसकी गर्दन स्पष्ट रूप से टूटी हुई थी और नाक से अभी भी झाग निकल रहा था। लेकिन बाघ ने एक निवाला भी नहीं खाया था, जाहिर है कि चरवाहे ने उसे परेशान किया था, या शायद भैंसों ने, जो मवेशियों के साथ चर रही थीं।
शाम के छह बज चुके थे और अंधेरा तेजी से बढ़ रहा था। दुर्भाग्यवश, उस स्थान पर कोई पेड़ नहीं था, और कुछ मिनटों की खोज के बाद यह स्पष्ट हो गया कि हमें या तो शिकार को छोड़ना होगा या बाघ के लौटने पर उस पर गोली चलाने का जोखिम उठाना होगा।
अल्फी शिकार को छोड़ने की बात सुनने के लिए भी बहुत उत्सुक था, इसलिए चरवाहे की मदद से मैंने पास की झाड़ियों से कुछ शाखाएँ तोड़ीं और एक बहुत ही कच्ची सी छिपने की जगह बनाई, जिसमें हम सभी शाम 6.30 बजे के कुछ ही देर बाद घुस गए।
अब लगभग अंधेरा हो चुका था, और पंद्रह मिनट के भीतर पच्चीस गज दूर पड़ी मृत गाय की आकृति धुंधली पड़ गई। हालांकि चांद नहीं था, लेकिन तारों की रोशनी से इतना प्रकाश छनकर आ रहा था कि हम आस-पास देख पा रहे थे, लेकिन शिकार हमारी पहुंच से थोड़ा बाहर था।
एक घंटा बीत गया, और फिर लगभग आधा मील दूर से मुझे अकेले सियार की अजीब सी आवाज़ सुनाई दी। जंगलों में पाए जाने वाले इस अनोखे सियार के बारे में बहुत कुछ लिखा जा चुका है और कई सिद्धांत प्रतिपादित किए गए हैं। सियार आमतौर पर कस्बों और गांवों के बाहरी इलाकों के पास झुंड में घूमते हैं, जिनके इलाकों में वे रात में जानवरों के अवशेषों की तलाश में घुस जाते हैं। उनका सामूहिक स्वर, जिसका नेतृत्व एक नेता करता है, विशिष्ट है, भारत के लोगों के लिए परिचित है, और कुछ इस तरह सुनाई देता है: ‘ऊऊऊऊह! ऊऊ-कहाँ? ऊऊ-कहाँ? ऊऊ-कहाँ-कहाँ-कहाँ? यहाँ! यहाँ। यहाँ। यहाँ! यहाँ! यहाँ। यहाँ। यहाँ। यहाँ। यहाँ। यहाँ। यहाँ। यहाँ। यहाँ। यहाँ। यहाँ।
हालांकि अकेला सियार, हर मायने में उसी प्रजाति का सियार होते हुए भी, एक बिल्कुल अलग आवाज निकालता है। उसकी एकाकी, लंबी, 'बा-लू-आह! बा-ऊऊऊ-आह!' आवाज ने उसे एक खास पहचान दिलाई है, साथ ही अनगिनत अंधविश्वास, लोककथाएं और जंगल के किस्से भी उससे जुड़े हुए हैं। लेकिन अटकलों के इस जाल से दो सिद्धांत प्रमुखता से सामने आते हैं। पहला यह है कि यह सियार किसी बाघ या तेंदुआ, आमतौर पर बाघ, के साथ रहता है, जिसे वह अपनी अजीबोगरीब आवाज से शिकार तक ले जाता है, और इस अनोखी साझेदारी में अपना हिस्सा मांगता है कि असली मालिक के पेट भरने के बाद बचे हुए मांस में से उसे भी एक टुकड़ा मिले।

अगली सुबह मैं फिर से वापस आ गया, इस बार मेरे साथ एक टोकरी थी जिसमें मेरा रात का खाना, गर्म चाय की थर्मस, कंबल, पानी की बोतल, टॉर्च और अन्य सामान थे जो रात में पेड़ पर लंबे, तंग घंटों तक पहरा देने वाले व्यक्ति के पास होते हैं। मैं अपने साथ बेंजेड्रिन की तीन गोलियां भी लाया था ताकि मुझे नींद न आ जाए।
मैंने दोपहर भर वही काम दोहराया, बार-बार थपथपाता रहा और देर रात तक करता रहा। जंगल में सन्नाटा छाया हुआ था, सिवाय एक सींग वाले उल्लू की आवाज़ और दूर से आती हुई काकर या जंगली भेड़ की भौंकने की आवाज़ के। रात 1:30 बजे चाँद डूब गया और चारों तरफ़ घना अंधेरा छा गया और बहुत ठंड भी हो गई। लगभग 3 बजे मुझे नींद आने लगी और मैंने बेंजेड्रिन की तीन में से दो गोलियाँ निगल लीं। आधे घंटे बाद मुझे सरसराहट सुनाई दी, और फिर एक लकड़बग्घे की उत्तेजित हंसी सुनाई दी, जैसे उसने मुझे सूंघा हो या देखा हो। 'हा! हा! हा! हा! हा! ये क्या है यहाँ? हा! हा!' उसने कहा और फिर अंधेरे में अपने रास्ते चला गया। फिर सन्नाटा छा गया, जब तक कि झूठी सुबह की हल्की रोशनी ने सूर्योदय से एक घंटा पहले का संकेत नहीं दिया। वह घंटा बीत गया, और फिर, 'व्ही-ई-ई-ईव! कुक-काया-काया-खुक्कम', भूरे रंग के जंगली मुर्गे ने उगते सूरज का स्वागत करते हुए बांग दी, और मैं थका हुआ अपने ठिकाने से नीचे उतरा, होगारेहल्ली वापस जाने के लिए संघर्ष कर रहा था ताकि चार घंटे की नींद ले सकूँ।
सुबह ग्यारह बजे मैं थका देने वाली निगरानी जारी रखने के लिए फिर से पेड़ पर लौट आया। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँच चुका था कि अब मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकता। दोपहर हमेशा की तरह गर्म रही, हरे बारबेट की ‘टोक-टोक-टोक-टोक’ और कोयल परिवार से संबंधित भारतीय क्वील की ‘को-एल! को-येल’ की आवाज़ें ही सुनाई दे रही थीं। शाम ढलने लगी और पास की एक झाड़ी के नीचे सूखे पत्तों में से कुछ चुनता हुआ एक स्पूरफाउल ‘कुकुर्रुकावाक। कुकुर्रुका-वाक’ चिल्लाया। पक्षियों का एक समूह, जिसे बोलचाल में ‘सात बहनें’ कहा जाता है, रात के लिए अपने घोंसले में जाने की तैयारी कर रहा था, उनकी चहचहाहट सुनाई दी, और जैसे ही सूरज होगर खान की ढलानों के नीचे डूबा, एक मोर ने अपनी विदाई की आवाज़ निकाली, ‘मिया-आ-ऊ- आहू-आओ-आह-ह-ओ-ओ-तार-ह-ऊ’।
फिर रात के पक्षियों ने चहचहाना शुरू किया। 'चीसे-चीसे!' नाइटजार चहचहाते हुए ऊपर उड़ते रहे, और फिर पास के पेड़ों की शाखाओं या जमीन पर बैठते ही उनकी आवाज बदलकर 'चुकू-चुकू-चुकू' हो गई।
दस बज गए, और कुछ ही देर बाद चित्तीदार हिरणों के झुंड से लगातार 'आओ! आओ! आओ!' की आवाजें सुनाई देने लगीं। वे चेतावनी देते हुए लगातार 'आओ! आओ!' दोहरा रहे थे।
निस्संदेह कोई मांसाहारी जानवर हरकत में था, और चौकस हिरणियों ने उसे देख लिया था या उसकी गंध महसूस कर ली थी, लेकिन क्या वह पैंथर था, साधारण बाघ था, या खुद आदमखोर बाघ था, यह सवाल अनुत्तरित था। मैंने लकड़ी को और ज़ोर से और बलपूर्वक थपथपाना शुरू कर दिया, इस उम्मीद में कि बाघ यह न सोचे कि यह रहस्यमय लकड़हारा रात में काम करने कैसे आया।
मिनट धीरे-धीरे बीतते गए, और फिर अचानक आधे मील से भी कम दूरी पर एक भयभीत सांभर हिरण की तीखी आवाज सुनाई दी: 'पोंक!-व्ही-ओंक!-व्ही-ओंक!' वह बार-बार दोहराता हुआ होगर खान की ओर बढ़ रहा था।
फिर सन्नाटा छा गया! मैंने झाड़ियों को थपथपाना जारी रखा और अर्धचंद्र में दिखाई देने वाली हर झाड़ी को ध्यान से देखा, मन ही मन उन विभिन्न आवरण रेखाओं की समीक्षा की जिनका उपयोग बाघ पेड़ का पीछा करते समय कर सकता था। इनमें से किसी भी रेखा पर कुछ भी नहीं हिला, और सब कुछ स्थिर था, सिवाय दूर से सांभर की एक आखिरी 'पोंक!' की आवाज के।
मुझे अजीब सा एहसास होने लगा कि किसी भी पल कुछ हो सकता है, और मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मुझे देख रहा हो, फिर भी सन्नाटे में कोई आवाज़ या खड़खड़ाहट नहीं हुई। मैं धीरे-धीरे पैर थपथपाते हुए खाँसा, फिर हिला और आखिर में अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ, बिल्कुल भारतीय अंदाज़ में खाँसते और थूकते हुए। फिर भी कोई आवाज़ नहीं हुई, और फिर, जैसे आसमान से बिजली गिरी हो, वह आ गया!
‘वूफ़! वूफ़!’ वह दहाड़ा, और एक विशालकाय भूरा जीव, जो पंखों वाले शेटलैंड टट्टू जितना बड़ा था, लगभग दस गज दूर एक झाड़ी के पीछे से जादू की तरह प्रकट हुआ, और पेड़ के तने पर झपटा और मेरे नीचे की ओर बढ़ गया।
मेरे ठीक नीचे, महज तीन गज की दूरी पर एक विशाल भूरे रंग का सिर दिखाई दिया; मैंने टॉर्च का स्विच दबाया और उसकी चमकती आँखों के बीचोंबीच गोली चला दी। राइफल की धमाके के साथ ही बाघ एक भयानक दहाड़

मारते हुए पीछे की ओर ज़मीन पर गिर पड़ा। मैंने दूसरी गोली चलाई। उसने एक और दहाड़ के साथ इसका भी जवाब दिया, और अगले ही पल वह गायब हो गया। सौ गज दूर झाड़ियों से मुझे आखिरी बार 'वर्र-उफ़!' की आवाज़ सुनाई दी और फिर सन्नाटा छा गया।
मुझे पता था कि मेरे दोनों निशाने चूके नहीं थे, फिर भी मैंने खुद को कोसते हुए कहा कि कम से कम दूसरे निशाने से ही जानवर को न गिरा पाया। फिर भी मुझे यकीन था कि वह बुरी तरह घायल हो गया था और ज्यादा दूर नहीं जा सकता था। मैंने रात भर झपकी ली और सूरज उगते ही सावधानी से होगारेहल्ली लौट आया, ताकि घायल जानवर का पीछा करने की योजना बना सकूँ।
मूडलागिरी गौड़ा ने शानदार तरीके से खुद को संभाला, और जब मैंने थोड़ी देर आराम किया, जिसके बाद गर्म चाय, टोस्ट और बेकन का आनंद लिया, तो उन्होंने भैंसों के झुंड के मालिक के साथ व्यवस्था की कि वह घायल बाघ के पीछे झाड़ियों के बीच से अपने जानवरों को ले जाए, इस उम्मीद में कि जब भैंसें पास आएंगी तो वह अपना ठिकाना बता देगा।
सुबह 9 बजे तक मैं मूडलागिरी, दो स्काउट्स, पंद्रह भैंसों और उनके मालिक के साथ अपने पेड़ पर वापस आ गया था। सबसे पहले मैं पेड़ की चोटी पर चढ़ा और बाघ को खोजने की कोशिश की, लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया। पेड़ के नीचे, छाल पर, उसके चेहरे या सिर से खून के छींटे पड़े थे, क्योंकि मेरी पहली गोली उसे लगी थी। झाड़ी के पीछे, जहाँ वह छिप गया था, हमें खून के कई निशान मिले, जिससे पता चला कि मेरी दूसरी गोली भी उस पर लगी थी।
इसके बाद हमने भैंसों को धीरे-धीरे उस दिशा में ले जाना शुरू किया जिधर बाघ पीछे हट रहा था, और उन्हें यथासंभव दूर-दूर तक एक सीधी रेखा में फैला दिया। मैं भैंसों के पीछे-पीछे चल रहा था, और दोनों स्काउट मेरे ठीक पीछे थे। मूडलागिरी और भैंसों का मालिक उसी पेड़ पर बैठे रहे जहाँ मैं बैठा था।
हम लगभग 200 गज ही आगे बढ़े थे कि हमें एक गहरी गुर्राहट सुनाई दी। उसी समय भैंसों का झुंड रुक गया और उन्होंने अपने सिर नीचे कर लिए, सींग फैलाकर उस दिशा की ओर मुँह कर लिया जहाँ से गुर्राहट आई थी। मेरे बाईं ओर थोड़ी दूर एक पेड़ उगा था, और मैंने एक जासूस से फुसफुसाकर कहा कि वह उस पर चढ़कर देखे कि क्या उसे बाघ दिखाई देता है। उसने ऐसा किया, लेकिन मुझे इशारा करके बताया कि उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। इस बीच भैंसें उस जगह से पीछे हट गई थीं, और हम उन्हें आगे नहीं बढ़ा पा रहे थे। उन्हें वहीं छोड़कर, और उस जासूस को पेड़ पर ही छोड़कर, मैं और बाकी जासूस चुपके से मूडलागिरी वापस गए और उसे निर्देश दिया कि वह गाँव लौटकर कुछ गाँव के कुत्तों को हमारे लिए लाने की कोशिश करे। वह इसके लिए तैयार हो गया, लेकिन डेढ़ घंटे बाद वह लौटा, और अपने साथ केवल दो आवारा कुत्ते लेकर आया, और कहा कि वह केवल इतने ही कुत्ते ला पाया है। अब हमने भैंसों को आगे बढ़ाने के लिए कुत्तों को उन पर छोड़ दिया, और पच्चीस गज आगे बढ़े ही थे कि बाघ ने भयानक गुर्राहट शुरू कर दी। भैंसें तुरंत रुक गईं, जबकि कुत्ते ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगे।
आगे चल रही दो भैंसों के पीछे छिपने के लिए रेंगते हुए, मैंने उनके पैरों के बीच से झाँकने की कोशिश की ताकि झाड़ियों को भेदकर बाघ की एक झलक पा सकूँ, लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर मैंने जानवरों को आगे बढ़ने के लिए उकसाने का प्रयास किया, लेकिन उनमें से एक अचानक मुझ पर झपटा और मैं बाल-बाल उसके लंबे सींगों के वार से बच गया।
मेरी स्थिति बेहद नाजुक थी, मेरे सामने एक घायल बाघ था जो किसी भी क्षण हमला कर सकता था, और आसपास घबराई हुई भैंसें थीं जो बाघ या मुझ पर, जो भी उन्हें पहले उकसाता, अपने सींगों से हमला करके अपना बचाव करतीं। कुछ कदम पीछे हटकर, मैंने पेड़ पर मौजूद स्काउट को नीचे उतरने का इशारा किया। उसकी और अन्य स्काउटों की मदद से, मैंने भैंसों के ऊपर से झाड़ियों में उस जगह पर पत्थर फेंकना शुरू किया जहाँ से गुर्राहट की आवाज आ रही थी। इस पर बाघ ने फिर से गुर्राहट की, लेकिन हम कुछ भी कर लें, वह बाहर नहीं निकला और न ही पीछे हटा, और इससे संकेत मिला कि उसकी हालत खराब थी।
आगे पत्थरबाजी बेकार साबित होने पर, मैंने दोनों जासूसों को वापस बुला लिया और भैंसों को वहीं छोड़ दिया। उनकी मदद से और दो कुत्तों के साथ, मैंने जंगल का लंबा चक्कर लगाया और बाघ के पीछे, लगभग 300 गज आगे पहुँच गया। यहाँ से हम बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़े। मेरे निर्देशों पर जासूस हर पेड़ और ऊँची जगह पर चढ़ते गए, ताकि बाघ को देख सकें। इस तरह हमने लगभग 200 गज की दूरी तय की, तभी एक जासूस ने

8

जलाहल्ली का हत्यारा
यह कहानी न तो आदमखोर बाघ की है, न ही आदमखोर तेंदुआ की, बल्कि एक साधारण, औसत आकार के तेंदुए की है, जिसने अपने जीवन की रक्षा में बहादुरी से लड़ाई लड़ी, चतुराई और प्रभावी ढंग से लड़ते हुए तीन लोगों को मार डाला और ग्यारह अन्य को घायल कर दिया, और अंत में कई दिनों की पीड़ा के बाद, अजेय रहते हुए, साहसपूर्वक मर गया।
सन् 1938 में, द्वितीय विश्व युद्ध के शुरू होने से पहले, बैंगलोर से लगभग सात मील उत्तर-पश्चिम में, तुमकुर जाने वाली सड़क के पास स्थित जलाहल्ली गाँव एक छोटा सा कस्बा था, जिसमें शायद 150 घर थे, जिनमें से कुछ ईंटों के और कुछ फूस के बने थे। बैंगलोर शहर मैसूर सरकार का मुख्यालय होने के कारण, उस राज्य का वन विभाग, जो सदाबहार और मानसूनी दोनों प्रकार के वनों से समृद्ध है, का मुख्यालय बैंगलोर में था। कीटों और अन्य कीटों द्वारा विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक वनों के व्यवस्थित विनाश और नुकसान पर सरकार का विशेष ध्यान था, और जलाहल्ली से एक मील के दायरे में लगभग चार वर्ग मील भूमि पर वन पौधों का एक वृक्षारोपण किया गया था, जिसमें चंदन, गुलाब की लकड़ी, लाल गुलाब की लकड़ी और अन्य वृक्षों को प्राकृतिक क्रम में उगाया गया था, ताकि बैंगलोर की प्रयोगशालाओं के निकट विभिन्न कीटों (जिन्हें वहाँ लाया गया था) की क्रिया का अध्ययन किया जा सके। ये पौधे औसतन दस फीट की ऊंचाई तक बढ़ गए थे, जबकि भाला घास, लैंटाना और कभी-कभार वेट-ए-बिट कांटेदार झाड़ियों की सामान्य निचली वनस्पति ने जमीन को घनी तरह से ढक लिया था, जिससे घनी झाड़ियाँ बन गई थीं जो अनगिनत साँपों, काफी संख्या में खरगोशों, कभी-कभार दिखने वाले मोर और निश्चित रूप से काफी मात्रा में तीतर और बटेरों का घर बन गई थीं।
एक दिन भटकता हुआ तेंदुआ बीस मील दूर स्थित मगदी की पथरीली पहाड़ियों से इस इलाके में आ पहुँचा। उसने अपना जीवन खरगोशों, चूहों और जंगल के अन्य छोटे जीवों को खाकर शुरू किया, लेकिन जल्द ही उसे पता चल गया कि पास के जलाहल्ली गाँव में बकरियों और गाँव के कुत्तों के रूप में उसका भरपूर भोजन उपलब्ध है, जिन्हें वह लगातार और कष्टदायक तरीके से खाने लगा।
सब कुछ ठीक चल रहा था, जब तक कि एक दिन तेंदुए ने जलाहल्ली के मोटे पुलिस-दफ्फेदार (या सार्जेंट) की बकरी को मार डाला। इस कृत्य को उस अधिकारी ने अपने मान-सम्मान और पद का अपमान समझा और उसने तेंदुए को मारकर बदला लेने की कसम खाई।
स्थानीय पुलिस बल को.303 राइफलें दी गई थीं, जिनमें से मैगज़ीन हटा दी गई थीं, ताकि एक बार में केवल एक ही गोली चलाई जा सके। यह एहतियाती उपाय के तौर पर किया गया था ताकि स्थानीय दंगों के दौरान, जो कभी-कभी मामूली उकसावे पर भी आम हो जाते हैं, अति उत्साही पुलिसकर्मियों द्वारा भीड़ पर अंधाधुंध गोलियां न चलाई जाएं।
तो दाफेदार अपनी मरी हुई बकरी के ऊपर एक पेड़ पर बैठ गया, उसके पास एक सिंगल-शॉट.303 पिस्तौल थी। सूर्यास्त के समय, अचानक एक तेंदुआ आया और उसके बाएं अगले पैर में घाव हो गया, क्योंकि दाफेदार का निशाना अजीब तरह से कांपते हाथों के कारण अस्थिर हो गया था।
पैंथर गुर्राते हुए भाग गया, मोटा दाफेदार रात भर अपने पेड़ पर कांपता रहा, अगली सुबह नीचे उतरा, ज़मीन पर खून के निशान देखे लेकिन कुछ नहीं मिला, और उसने निष्कर्ष निकाला कि वह बड़े सौभाग्य से तेंदुए से बच गया था। खैर, उसने सोचा कि उसे सबक मिल गया है और भविष्य में वह उसकी बकरियों को बिल्कुल अकेला छोड़ देगा।
यह घटना शुक्रवार की रात को घटी। अगला दिन, शनिवार, शांतिपूर्वक बीता और उसी शाम ग्रामीणों ने अगले दिन सुबह बड़े पैमाने पर खरगोश पकड़ने का अभियान चलाने का फैसला किया। वन विभाग के बागान के किनारे और उससे सटे लगभग तीन एकड़ में फैले कैसुरिना के पेड़ों के चारों ओर दो फुट ऊंचे खरगोश पकड़ने के जाल बिछा दिए गए। अगले दिन सुबह लगभग सौ ग्रामीणों को कुत्तों के साथ मिलकर और लकड़ी के छोटे डंडों

अगली सुबह—सोमवार को—ये दोनों भाई बड़ी हिम्मत से, हालांकि थोड़ी नादानी से, तेंदुए का पीछा करने का निश्चय कर बैठे। बड़े भाई, कलाइयाह के पास पुराने डिज़ाइन की.12 बोर की पिस्तौल थी। छोटे भाई, पापाइयाह के पास एक बैरल वाली मजल-लोडर पिस्तौल थी।
सामान लादकर, ये दोनों बहादुर आदमी कंधे से कंधा मिलाकर, खून के निशानों का पीछा करते हुए बागान की झाड़ियों में घुस गए।
इस तरह भटकते-भटकते वे अलग हो गए, और पलक झपकते ही तेंदुए ने कलाइया पर झपट्टा मारा, उसे ज़मीन पर पटक दिया और बेरहमी से उसके मूत्राशय और अंडकोष को नोंच डाला। हमले की ज़ोर से उसकी.12 बैरल की पिस्तौल उसके हाथों से गिर गई, और जब वह जानवर के ऊपर पड़ा चीख रहा था, तभी उसका छोटा भाई मदद के लिए दौड़ा और कलाइया के ऊपर पड़े तेंदुए पर अपनी पिस्तौल से गोलियां चला दीं। यह एक रहस्य ही है कि उसने अपने भाई को गोली क्यों नहीं मारी।
और भी बुरी तरह घायल तेंदुआ, कलाइयाह को छोड़कर पापाइयाह पर झपटा। पापाइयाह मुंह के बल गिर पड़ा, उसके दांत पीठ को चीरते हुए फेफड़े तक पहुंच गए, जबकि पिछले पैरों के पंजे उस बेचारे आदमी के नितंबों और जांघों के पिछले हिस्से को खरोंचते रहे। फिर जानवर भाग गया।
उस दिन मैं दोपहर का खाना खा रहा था कि पसीने से तरबतर एक आदमी मेरे दरवाजे पर खबर देने आया। मैंने झटपट राइफल, शॉटगन और टॉर्च उठाई और गाड़ी में बैठ गया। मेरी पत्नी भी आखिरी समय में पीछे न रहने के इरादे से मेरे साथ आने को तैयार हो गई। जैसे ही मैं अपने बंगले के गेट से निकलकर मुख्य सड़क पर आया, मेरी मुलाकात स्थानीय पुलिस बल के एरिक न्यूकोम्ब से हुई, जो मुझसे मिलने आ रहे थे। मैंने उन्हें सारी घटना बताई और माफी मांगते हुए वहां से जाने की कोशिश की, लेकिन एरिक भी पीछे नहीं रहना चाहते थे और गाड़ी में बैठ गए।
हमें जलाहल्ली पहुँचने में ज़्यादा समय नहीं लगा, और वहाँ का नज़ारा बेहद हास्यास्पद था। सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े तक, हर निवासी बाहर आ चुका था। तेंदुए की एक झलक पाने की उम्मीद में लोगों की भारी भीड़ बागान के किनारे तक पहुँच गई थी। ये सभी अपनी जान बचाने के लिए पेड़ों की शाखाओं पर चढ़ गए थे, यहाँ तक कि आसपास के पेड़ इतने भार से लगभग टूट ही गए थे। लेकिन कोई भी कलैया और पापायाह को बचाने के लिए आगे नहीं आया, जो चार घंटे पहले जहाँ गिरे थे, वहीं बागान में पड़े मदद के लिए धीमी आवाज़ में चिल्ला रहे थे।
सबसे पहला काम तो ज़ाहिर तौर पर इन लोगों की मदद करना था, इसलिए हमने एक दर्जन सामान ढोने वालों को भर्ती किया और जंगल में प्रवेश किया। हमें कलाइयाह बहुत बुरी हालत में और असहनीय पीड़ा में मिला। पापायाह के फटे फेफड़े से खून के बुलबुले निकल रहे थे।
हमने उन्हें गाड़ी तक पहुँचाया, और मैंने उन्हें अस्पताल ले जाने के लिए इंजन चालू कर दिया था, तभी एक ग्रामीण दौड़ता हुआ आया, जिसके हाथ में अब तक का सबसे लंबा भाला था जो मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा था (बारह फीट से अधिक लंबा होने के कारण इसका व्यावहारिक उपयोग कहना असंभव है) और उसने बताया कि उसने अभी-अभी 300 गज दूर एक बड़ी झाड़ी में पैंथर को छिपते हुए देखा है, जहाँ अगर हम उसके साथ चलें तो हम उसे आसानी से मार सकते हैं।
मुझे पता है कि इसके बाद जो कुछ भी हुआ, वह मेरी ही गलती थी, क्योंकि मैं घायलों को अस्पताल पहुंचाने के अपने कर्तव्य में विफल रहा। हालांकि, मैं यह स्वीकार करता हूं कि उस समय की उत्तेजना और पैंथर को आसानी से पकड़ने के इस अवसर के लालच ने मेरे विवेक पर हावी होकर मुझे जानवर के पीछे जाने के लिए मजबूर कर दिया। एरिक न्यूकोम्ब ने मेरे साथ चलने की जिद की, इसलिए मैंने उसे अपनी.12 बोर की शॉटगन दे दी, जिसके बाएं बैरल में एल.जी. और दाएं में घातक कारतूस भरे थे, साथ ही कुछ अतिरिक्त कारतूस भी दे दिए, जबकि.405 राइफल मैंने अपने इस्तेमाल के लिए रख ली। यह भी एक और गलती थी, जैसा कि आगे की घटनाओं से साबित हुआ। मुझे शॉटगन से लैस होना चाहिए था। हमारे साथ केवल वह व्यक्ति था जिसके पास एक बड़ा सा भाला था, बाकी सभी लोग गायब हो गए थे। मेरी पत्नी एक दर्शक के रूप में, कुछ दूरी पर पीछे- पीछे चल रही थी।
हम झाड़ियों के उस बड़े हिस्से से पच्चीस गज की दूरी तक पहुँच गए, न कि उस खास झाड़ी तक जैसा कि भालाधारी ने बताया था, जिसमें पैंथर को रेंगते हुए देखा गया था। मैंने एरिक को अपने दाहिनी ओर लगभग तीस गज आगे बढ़ने को कहा, ताकि हम एक-दूसरे की गोलीबारी की चपेट में न आएँ और जानवर के भागने के हर

पाँचवें दिन, बुधवार की सुबह, मैं उस जगह पर था जहाँ चरवाहे की हत्या हुई थी। हमने घायल जानवर का पीछा करने की पूरी कोशिश की, जो बुरी तरह घायल होने के बावजूद, खून जमने के कारण, कम से कम बाहरी तौर पर, अब तक बहना बंद हो चुका था। मैं घनी घास और लैंटाना में भटक रहा था, जो ढलान पर उतरते ही और घनी हो गई थी। ढलान के आधे रास्ते में, तेंदुए ने मुझे आते हुए सुना या देखा और आगे न बढ़ने की चेतावनी देते हुए गुर्राना शुरू कर दिया। यह सौभाग्य की बात थी, वरना शायद मैं आज आपको यह कहानी सुनाने के लिए यहाँ नहीं होता। घनी झाड़ियाँ लगभग अभेद्य होने के कारण, मैंने आगे बढ़ना रोक दिया, जो आत्मघाती होता, और आगे बढ़ने का इंतज़ार करने का फैसला किया, जिसके बारे में मुझे लगभग यकीन था कि एक-दो दिन में तेंदुए की उसके कई गंभीर घावों से मौत हो जाएगी।
उसी दिन बाद में एक रोचक घटना घटी। बेंगलुरु से भारी संख्या में पुलिस बल तैनात था। लगभग तीस पुलिसकर्मी, सिंगल-शॉट सर्विस राइफलों से लैस, एक पुलिस वैन में ठूंस-ठूंस कर भरे हुए थे। वैन को चारों ओर से धातु की जाली से सुरक्षित किया गया था ताकि दंगे के समय भीड़ द्वारा पत्थरबाजी से बचा जा सके। इस अस्थायी बख्तरबंद गाड़ी के चालक को निर्देश दिया गया था कि वह बागान में तब तक खोजबीन करे जब तक कि राइफलधारियों द्वारा दुश्मन का पता लगाकर उसे पकड़ न लिया जाए। उसने अपनी पूरी क्षमता से ऐसा करने का प्रयास किया, लेकिन घनी झाड़ियों और उलझी हुई घास में रास्ता न जानते हुए, अंततः उसने गाड़ी को एक छिपी हुई, झाड़ियों से भरी खाई में आधा पलट दिया। चालक और उसके साथी अंदर फंस गए और मदद के लिए जोर-जोर से चिल्लाने लगे। उनमें से कोई भी बाहर निकलने की हिम्मत नहीं कर रहा था, क्योंकि क्या वहाँ कोई खूंखार तेंदुआ खुला नहीं घूम रहा था जो सबसे पहले उतरने वाले को मार कर खा जाता?
दूर से चीखने की आवाज़ सुनकर हम मौके पर पहुँचे और कानून के बंधक प्रतिनिधियों को रिहा कर दिया। उन्होंने किसी तरह अपनी गाड़ी को सीधा खड़ा किया और अपने बैरक में लौट आए। इस घटना से उन्हें ज़रा भी नुकसान नहीं हुआ था। जाने से पहले उन्होंने बताया कि झाड़ियों में से उन्हें गुर्राहट की आवाज़ें सुनाई दी थीं, लेकिन मैंने इसे सामूहिक घबराहट का नतीजा मान लिया।
मैंने तय कर लिया था कि मैं प्रतिदिन सुबह 7 बजे से सूर्यास्त तक बागान में रहूंगा, और छठे दिन, जो गुरुवार था, दोपहर के आसपास मैंने आकाश में गिद्धों को इकट्ठा होते देखा। दूरबीन से देखते हुए, मैंने उन्हें बागान को विभाजित करने वाली छोटी घाटी के बीचोंबीच उतरते देखा, वास्तव में वही घाटी जिसमें मैंने पिछले दिन जबरदस्ती घुसने की कोशिश की थी।
मुझे पता था कि इन समझदार पक्षियों को कुछ मरा हुआ मिला है। या तो वह खुद पैंथर था, या फिर पैंथर द्वारा मारा गया कोई जीव। सावधानी से मैं घनी लैंटाना और काँटेदार झाड़ियों से होते हुए आगे बढ़ा, इस उम्मीद में कि किसी भी क्षण तेंदुए की कर्कश खाँसी सुनाई देगी और वह मुझ पर हमला कर देगा। लेकिन कुछ नहीं हुआ, और आखिरकार, काँटों से घायल होकर मैं घाटी में पहुँचा। मैं लगभग पचास गज ही चला था कि चार गिद्ध अपने पंख फड़फड़ाते हुए ज़मीन से उड़ उठे। आगे बढ़ते हुए, मैं एक छोटे से पानी के कुंड के पास पहुँचा, जिसके किनारे पैंथर मरा पड़ा था, पानी पी रहा था।
उस बेचारे जानवर के शरीर में बहुत खून बह गया था और वह प्यास और बुखार से तड़प रहा था। पानी तक रेंगने और पीने की कोशिश में खून बहना और बढ़ गया होगा, क्योंकि मरने से पहले उसने पानी में गाढ़ा खून उगल दिया था, जिससे तालाब का आधा हिस्सा गहरे लाल रंग का हो गया था। मेरे पहुँचने पर गिद्ध वहाँ बैठ ही गए थे और सौभाग्य से उन्हें उसकी खाल को नष्ट करने का समय नहीं मिला था।
जलाहल्ली लौटकर, मुझे जल्द ही कुछ लोग मिल गए जो मृत जानवर को एक खंभे से बांधकर मेरी कार तक ले गए। मैंने उसे यशवंतपुर पुलिस स्टेशन ले जाकर आधिकारिक रिपोर्ट दर्ज कराई। यहाँ मुझे आवश्यक अधिकारियों के आने का तीन घंटे तक इंतज़ार करना पड़ा, जिससे मुझे बहुत झुंझलाहट हुई, क्योंकि मुझे डर था कि शव से खाल न उतारे जाने के कारण वह खराब हो सकती है।
अंततः मुझे मृत जानवर को ले जाने की अनुमति मिल गई, और आप निश्चिंत रहें कि मैंने ऐसा करने में जरा भी देर नहीं की। खाल उतारते समय मुझे उन घटनाओं के क्रम को समझने का भरपूर अवसर मिला जिनके कारण तीन व्यक्तियों की मृत्यु हुई और कई लोगों पर हमला हुआ।
तेंदुए के बाएं अगले पैर में, मोटे पुलिस वाले की.303 कैलिबर की गोली से लगा घाव, कीड़ों से भरा हुआ था और पूरी तरह से गैंग्रीन से ग्रस्त था। ह्यूगी प्लंकेट की शॉटगन की गोली जानवर के आर-पार निकल गई

थी, पेट को चीरते हुए, लेकिन तुरंत जानलेवा घाव नहीं किया। दूसरे बैरल से निकली एक एल.जी. गोली माथे की हड्डी में धंस गई थी, और जाहिर तौर पर जानवर को पूरी तरह से बेहोश कर दिया था, जिससे प्लंकेट उसके पास जाकर उसे छू सका। पापायाह की मस्कट से निकली पांच गोलियां उसकी बगल में धंस गई थीं, लेकिन इतनी पीछे थीं कि तुरंत असर नहीं कर सकीं। अंत में, जब जानवर न्यूकॉम्ब से दूर भाग रहा था, तब मेरी राइफल की गोली पूरी तरह से बेअसर रही, और उसने जानवर की गर्दन के पिछले हिस्से पर सिर्फ एक गहरी लकीर बनाई।
मैंने कलाइया के परिवार द्वारा अपने परिवार के मुखिया की मृत्यु के कारण हुए नुकसान की भरपाई के लिए और उनके भरण-पोषण के लिए एक भूखंड दान में देने की मांग के समर्थन में अदालत में यह चमड़ा प्रस्तुत किया था। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि समय के साथ, उस मृत व्यक्ति के साहस को मान्यता मिली।
द्वितीय विश्व युद्ध के आगमन के साथ, जलाहल्ली में आमूलचूल परिवर्तन हुआ। वन विभाग के वृक्षारोपण और कैसुरिना के पेड़ काट दिए गए और हजारों इमारतें खड़ी हो गईं, पहले इतालवी युद्धबंदियों को रखने के लिए, फिर बर्मा और मलेशिया पर संभावित आक्रमण के लिए सबसे बड़े अस्पताल अड्डों में से एक के रूप में, और बाद में वायु सेना कर्मियों को रखने के लिए, जो भारत में उसकी तेजी से विस्तारित हो रही वायु सेना के मुख्य प्रशिक्षण अड्डों में से एक था।
इस पैंथर की खाल अब मेरे बंगले के हॉल की शोभा बढ़ा रही है। मैं इस जानवर के प्रति अपने गहरे आदर और प्रशंसा को व्यक्त किए बिना नहीं रह सकता। क्योंकि जहाँ दूसरे तेंदुए छुपकर, अचानक शिकार को पकड़ लेते हैं, वहीं इस तेंदुए ने गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद, विपरीत परिस्थितियों में भी, अपनी जान बचाने के लिए बहादुरी और साहस से लड़ाई लड़ी।

9

देवरायनदुर्गा का साधु
उन्हें 'सन्यासी' कहा जाता था, क्योंकि वे कई मायनों में एक साधु से मिलते-जुलते थे, चाहे वह उनके निवास स्थान का चुनाव हो या उनकी विलक्षण आदतें।
वह एक असाधारण बाघ था। हालाँकि वह आदमखोर नहीं था और न ही उसने कभी इंसान का मांस खाया था, फिर भी उसका स्वभाव बेहद क्रूर और मानव जाति के प्रति घोर शत्रुतापूर्ण था। उसने पाँच दिनों के भीतर तीन लोगों—दो पुरुषों और एक महिला—को मार डाला, और वह भी क्षणिक आवेश और आक्रामकता में आकर। इसके अलावा, उसकी आदतें बाघों से बिल्कुल अलग थीं, क्योंकि वह बकरियों और गाँव के कुत्तों को खाता था, जो बाघ, विशेषकर कुत्तों को, बहुत कम खाते हैं। फिर अचानक वह तुमकुर कस्बे से छह मील दूर और बैंगलोर शहर से पचास मील की दूरी पर स्थित देवरायंदुर्गा पहाड़ी की झाड़ियों में प्रकट हुआ। देवरायंदुर्गा में कई दशकों से कोई बाघ नहीं था, वहाँ केवल कुछ जंगली सूअर और मोर ही पाए जाते थे। उस क्षेत्र में कोई घना जंगल नहीं था, बल्कि लैंटाना और वेट-ए-बिट कंटीली झाड़ियों से ढका हुआ था। इसके अलावा, पहाड़ी की चोटी बहुत पथरीली थी और उसमें कुछ छोटी गुफाएँ भी थीं। इन गुफाओं में कभी- कभार कोई छोटा पैंथर अपना डेरा जमा लेता था और पहले रहने वाले जीव, आमतौर पर साही, को खाकर उसे भगा देता था। लेकिन ये गुफाएँ बाघ जैसे बड़े जानवर के लिए पर्याप्त आश्रय तो दूर, छिपने की जगह भी नहीं देती थीं। पूरा इलाका समतल, खेती वाले खेतों के बीच झाड़ियों का एक छोटा सा द्वीप मात्र था, जिसे कोई भी सामान्य बाघ दिन हो या रात, पार करने का जोखिम नहीं उठाता था।
लेकिन ठीक यही वह काम था जो 'सन्यासी' ने किया, क्योंकि उसे इन खेतों को पार करना पड़ा होगा, ताकि वह देवरायंदुर्गा पहाड़ी द्वारा प्रदान किए गए संदिग्ध और सीमित आश्रय तक पहुंच सके।
पहले तो किसी को पता ही नहीं चला कि कोई बाघ प्रकट हुआ है। आस-पास बिखरे हुए कुछ गांवों में बकरियों और कुत्तों की असामान्य रूप से बड़ी संख्या में कमी आने लगी। इसका कारण एक तेंदुआ माना गया, जब तक कि एक सुबह इन्हीं गांवों में से एक के पास एक जोते हुए खेत में बाघ के पदचिह्न नहीं मिले। अगले दो दिनों के भीतर एक बड़ी गाय मारी गई, जिसे रात भर गांव के अब तक सुरक्षित बाहरी इलाके में चरने के लिए छोड़ा गया था। इस गाय की मालकिन, एक बूढ़ी औरत, अपने जानवर से बहुत लगाव रखती थी। अगली सुबह जब उसे पता चला कि गाय मारी गई है, तो वह घटनास्थल पर पहुंची, जो एक चौथाई मील दूर था। वहां वह अपनी मरी हुई गाय के पास बैठ गई और जोर-जोर से रोने लगी, मानो ईश्वर को अपने गहरे दुख और अपनी प्यारी गाय की मृत्यु से हुए गहरे नुकसान का साक्षी बना रही हो। परिवार के अन्य सदस्य भी उस बूढ़ी औरत के साथ घटनास्थल पर गए थे और कुछ देर चुपचाप बैठकर उसके रोने-धोने को सुनते रहे। लेकिन जल्द ही वे इससे ऊब गए, इसके अलावा उनके पास करने के लिए और भी काम थे, और एक-एक करके वे गांव लौट गए, बूढ़ी औरत को उसकी मरी हुई गाय के पास अकेला छोड़ दिया, जो अभी भी पूरे जोश से रो रही थी।
सुबह के 11 बज रहे थे और तेज़ धूप पड़ रही थी। कोई साधारण बाघ इतनी तेज़ धूप और गर्मी में, और इतनी शोरगुल भरी जगह पर अपने शिकार के पास वापस नहीं आता, लेकिन 'सन्यासी' बाघ साधारण नहीं था। यह बाघ वापस आया और उसने बूढ़ी औरत को शिकार के पास देखा, जो ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए खुद को हिला रही थी। जानवर ने सोचा कि यह शोर असहनीय है और इसे रोकना होगा। इसलिए वह बूढ़ी औरत पर झपटा और अपने पंजे के एक ही वार से उसकी जान ले ली। फिर वह गाय को कुछ गज दूर घसीटकर ले गया और भरपेट खाया। बूढ़ी औरत का शरीर अछूता था, और बाघ मानो उसे भूल ही गया था।
जब वह शाम चार बजे तक नहीं लौटी, तो उसके परिवार ने यह सोचकर कि वह रोते-रोते थक गई होगी और सो गई होगी, उसे घर ले जाने के लिए वहाँ पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्हें यह देखकर गहरा सदमा और भय हुआ कि उसकी हत्या कर दी गई थी, जबकि बाघ ने मरी हुई गाय को बड़े चाव से खा लिया था और झाड़ियों में वापस चला गया था। वे हड़बड़ी में गाँव की ओर भागे और सबको यह दुखद खबर सुनाई। कुछ ही देर में मुखिया, एक भारी बंदूक से लैस और अपने साथ लगभग दो दर्जन बहादुर सैनिकों को लेकर वहाँ पहुँचा। उन्होंने बाघ के पदचिह्नों का पीछा करने का प्रयास किया, लेकिन ज़्यादा देर तक नहीं, क्योंकि जानवर पास ही घनी

हड्डी का वह टुकड़ा निकल गया जो हमें मिला था, लेकिन साथ ही वह जानवर के सिर में इतनी गहराई तक नहीं घुसी थी कि उसे मार सके। दरअसल, गोली उछलकर वापस आ गई थी और हड्डी का टुकड़ा अपने साथ ले गई थी, इसलिए यह संभव था कि इतनी अधिक मात्रा में खून बहने के बावजूद वह बूढ़ी बाघिन ठीक हो जाती, अगर उसने पेड़ पर चढ़ते समय मेरे साथी पर हमला करके खुद को उजागर न किया होता।

10

बायरा, पूजारी
जब मैं उनसे मिला तो उन्होंने केवल एक लुंगोटी पहन रखी थी, जो लगभग तीन इंच चौड़ी कपड़े की एक पट्टी होती है जो जांघों के बीच से गुजरती है और आगे और पीछे एक गंदी गांठदार डोरी से जुड़ी होती है जो कमर को घेरे रहती है; लेकिन वे दिल से एक सज्जन व्यक्ति थे, और वे मेरे मित्र थे, और हैं।
बायरा से मेरी पहली मुलाकात को पच्चीस साल बीत चुके हैं, और यह मुलाकात इस तरह हुई।
मुथुरमलाई की ऊँची पहाड़ी की तलहटी में बसे मुथुर के छोटे से वन बंगले को घेरने वाली पहाड़ियों के ऊपर पूर्वी आकाश में भोर की हल्की रोशनी फैल रही थी। इस रोशनी के कारण चिनार नदी नामक घुमावदार वनधारा घने जंगल से होकर धीरे-धीरे बहती हुई अपना रास्ता बदलकर दक्षिण की ओर एक तीखा मोड़ ले लेती है और होगेनैकल में चट्टानी जलप्रपात में कावेरी नदी से मिलने से पहले अपने अंतिम सात मील का सफर निर्जन क्षेत्र से पूरा करती है। ग्रीष्म ऋतु का मध्य था और उस समय चिनार नदी पूरी तरह सूखी थी। मैं सुबह जल्दी निकल आया था और चिनार की सुनहरी रेत पर चुपचाप दबे पांव चल रहा था, इस उम्मीद में कि शायद मुझे कोई भालू दिख जाए। उस समय बड़ी संख्या में भालू नदी के किनारे आते थे और जुमलम के पेड़ के रसीले, बैंगनी, लेकिन थोड़े कसैले फल को जी भरकर खाते थे, जो उस इलाके में बहुतायत में उगता था। अगर भालू नहीं मिला, तो मुझे उम्मीद थी कि रात भर शिकार करने के बाद घर लौटते हुए किसी तेंदुआ से मुलाकात हो जाएगी। मैं जानता था कि ये जानवर नदी के किनारे झाड़ियों में छिपकर शिकार की तलाश में रहते हैं, जो नदी पार कर सकता है। उन दिनों में सांभर, जंगली भेड़ और खूबसूरत चीतल जैसे हिरण काफी संख्या में पाए जाते थे, लेकिन उस सुबह मेरा लक्ष्य ऐसे सुंदर शिकार करना नहीं था।
मैं बंगले से लगभग एक मील दूर चला गया था, और भोर की झूठी रोशनी तेजी से अंधेरे के उस नए दौर में फीकी पड़ रही थी, इससे पहले कि असली भोर जंगली मुर्गे की आवाज और मोर की कर्कश आवाज से घोषित हो, तभी अचानक मुझे अपने बाईं ओर धारा के किनारे उगी मेहंदी की झाड़ियों के एक झुंड से एक दबी हुई लेकिन स्पष्ट सरसराहट सुनाई दी।
उस दिन मेरे पास टॉर्च नहीं थी, इसलिए मैं सावधानी से मेहंदी के पास लगभग दस फीट की दूरी तक गया और रुक गया। तभी मैंने देखा कि मेरे ठीक सामने लगभग तीन फीट व्यास और उतनी ही गहराई का एक बड़ा गड्ढा खोदा गया था, जिसमें लगभग एक फीट पानी सूखी रेत से रिसकर नीचे की मिट्टी से बह रहा था। मैं समझ गया कि यह किसी शिकारी का काम था, प्यासे हिरणों को अपनी प्यास बुझाने के लिए आकर्षित करने का, ताकि एक सटीक गोली या बंदूक से दागी गई गोलियों की बौछार से उनकी जान जा सके। और जो आवाज़ मैंने सुनी थी, वह निस्संदेह उसी शिकारी की थी, शायद मुझे देखकर, या शायद रात भर जागने के बाद नींद में करवट बदलते हुए।
मैंने तमिल में उस आदमी को बाहर आने के लिए पुकारा, वरना मैं गोली मार दूंगा, लेकिन पहले तो मुझे कोई जवाब नहीं मिला। कुछ कदम आगे बढ़ने पर, झाड़ियों से एक छोटा सा व्यक्ति उठा और नदी की रेत पर कदम रखते हुए मेरे सामने लेट गया, और तीन अलग-अलग तरह से प्रणाम करते हुए अपना माथा ज़मीन से छुआ।
उसे खड़े होने के लिए कहकर मैंने पूछा कि वह कौन है। उसने सीधा-सादा जवाब दिया, 'बायरा, एक पुजारी।' मैंने पूछा, 'तुम्हारी बंदूक कहाँ है?' उसने कहा, 'बंदूक, कैसी बंदूक? मुझ जैसे गरीब, सीधे-सादे आदमी के पास बंदूक कैसे हो सकती है? मुझे तो गोली चलाना भी नहीं आता, मालिक। मैं एक मुसाफिर हूँ और कल रात रास्ता भटक गया था, और बहुत थका हुआ होने के कारण इन झाड़ियों में सो गया था। महाराज, अभी आपने मुझे आवाज़ दी, जिससे मेरी नींद खुली, और आप मेरी बंदूक माँग रहे हैं! मैंने तो ऐसी चीज़ कभी देखी भी नहीं।' मैंने आदेश दिया, 'उसे उठाओ और यहाँ लाओ।' वह कुछ पल झिझका, फिर नीचे झुका और एक पुरानी सी बंदूक ले आया, जो कुछ गज लंबी थी, और जिसका बट सबसे चौड़े हिस्से पर मुश्किल से तीन इंच चौड़ा था। और इसी तरह मेरी मुलाकात बायरा से हुई, जो पुजारी थीं और पच्चीस वर्षों से मेरी दोस्त हैं, जिन्होंने मुझे जंगल और उसके जंगली, बेफिक्र, उग्र, लेकिन प्यारे और सबसे अद्भुत जीव-जंतुओं के बारे में वह सब कुछ सिखाया है जो मैं अब जानता हूं।

मैंने उससे पूछा, ‘तुमने क्या मारा?’ उसने जवाब दिया, ‘कुछ नहीं। कल रात कोई जानवर पानी के पास नहीं आया।’ मैंने और सख्त स्वर में पूछा, ‘तुमने क्या मारा?’ उसने मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया और नदी के विपरीत किनारे की ओर तिरछे चलने लगा। मैंने नदी की रेत पर एक काला ढेर देखा, जो पास जाने पर एक सांभर हिरणी निकली, जिसकी गर्दन में एक बड़ा सा छेद था, जिससे खून बहकर साफ सफेद रेत को रंग रहा था।
मैंने बायरा को गुस्से और आक्रोश से भरी निगाहों से देखा। उसने सरल शब्दों में कहा, 'मालिक, हम भूखे हैं, और अगर मैं शिकार नहीं करूंगा तो हम खा नहीं पाएंगे, और अगर हम नहीं खाएंगे तो हम मर जाएंगे।' कुछ गज की दूरी पर रेत पर बैठकर, मैंने बायरा को अपने पास बैठने के लिए आमंत्रित किया और अपनी थैली से कुछ पाइप-तंबाकू निकालकर उसे दे दिया। उसने हथेली पर मुझसे तंबाकू लेकर उसे संदेह भरी नजरों से सूंघा और फिर खुशी और संतुष्टि से झूमते हुए, अपना सिर पीछे झुकाकर उसे मुंह में डाल लिया। अगले कुछ मिनट खामोशी में बीते, बायरा मेरी तंबाकू चबाने में इतना मग्न था!
फिर उसने घबराते हुए कहा, ‘मालिक वन रक्षक को मेरी बंदूक के बारे में नहीं बताएंगे। यही मेरी आजीविका का एकमात्र साधन है, और अगर रक्षक को पता चल गया तो वह आकर इसे छीन लेगा। साथ ही मुझे जेल भेज दिया जाएगा, और मेरी पत्नी और चार बच्चे भूखे मरेंगे।’
मेरे सामने एक जटिल समस्या खड़ी हो गई थी। वन लाइसेंस धारक होने के नाते मेरा कर्तव्य था कि मैं शिकारियों को अधिकारियों के हवाले कर दूं। दरअसल, लाइसेंस की शर्तों के अनुसार मुझे ऐसे व्यक्तियों की गिरफ्तारी में सहायता करने का अधिकार भी था। इसके अलावा, मेरा अंतरात्मा मुझे इस बदमाश के प्रति कोई सहानुभूति न रखने के लिए कह रही थी, जो गर्मी के महीनों में प्यास बुझाने के लिए आने वाली मादा हिरणों को बेरहमी से, सबसे निर्दयी तरीके से मार रहा था। फिर भी, उस छोटे से जीव में कुछ तो अच्छा था, और हमारी संक्षिप्त जान-पहचान के बाद वह मुझ पर जो भरोसा जताने लगा था, वह भी सराहनीय था। या शायद मेरे तेज तंबाकू के सेवन ने ही उसके इस भरोसे को बढ़ाया था।
सवाल और सीधे जवाब से बचते हुए, मैंने उससे पूछा कि वह कहाँ रहता है। उसने जवाब दिया, ‘हमारे पास न घर है, न झोपड़ी, न खेत। हम दिनभर जंगल में मधुमक्खी के छत्ते की तलाश में भटकते रहते हैं। अगर हमें एक छत्ता मिल जाता है, तो हम खुद को भाग्यशाली समझते हैं, क्योंकि हम उससे कीमती शहद इकट्ठा करते हैं और उसे सात मील दूर पेन्नाग्राम गाँव के बाज़ार में ले जाते हैं। शहद के एक छोटे बर्तन के लिए हमें शायद एक रुपया मिलता है। इससे हम रागी (एक अनाज) खरीदते हैं, जिससे शायद हमारा चार दिन का पेट भर जाए। अगर हमें शहद नहीं मिलता, तो हम शायद एक ‘ऊडुम्बु’ (एक बड़ी साँप-छिपकली) पकड़ लें। यह और भी बड़ा सौभाग्य है, क्योंकि हम न केवल ‘ऊडुम्बु’ खाएँगे, जिसका मांस हमारी ताकत के लिए बहुत अच्छा होता है, बल्कि हम उसकी पूंछ पेन्नाग्राम के स्थानीय वैद्य को बेच देंगे। वह वैद्य बहुत ही अद्भुत व्यक्ति है। वह पूंछ को पकाकर उसमें कोई अद्भुत औषधि मिलाता है। फिर वह पूरे मिश्रण को बारीक पीसकर पाउडर बना लेता है, जिसे वह कागज़ के पैकेटों में बाँटकर आठ आना प्रति पैकेट के हिसाब से बेचता है।’ ये पैकेट प्रेमियों को बेचे जाते हैं और बेहद कारगर होते हैं। अगर कोई पुरुष अपनी प्रेमिका के बाएं कंधे पर इस पाउडर की एक चुटकी छिड़क दे, तो वह उसका विरोध नहीं कर पाएगी।
यहाँ उसने तिरछी नज़र से मेरी ओर देखा। ‘यदि महाराज अपनी प्रेमिका का दिल नहीं जीत सकते,’ उसने विश्वासपूर्वक कहा, ‘तो मैं इस देसी वैद्य से आपके लिए यह पाउडर निःशुल्क मंगवा दूँगा, क्योंकि वह मेरा घनिष्ठ मित्र है और साथ ही ओडुम्बु की पूंछें निरंतर पहुँचाने के लिए मेरा ऋणी भी है। आपको बस इतना करना है कि अपनी प्रेमिका के बाएँ कंधे पर थोड़ा सा पाउडर छिड़क दें, और वह हमेशा के लिए आपकी हो जाएगी।’
मैंने जल्दी से उसे बताया कि मैं उस समय इतना प्यार में नहीं थी कि मुझे ओडुम्बु की पूंछों का सहारा लेना पड़े, और मैंने उसे अपने काम जारी रखने के लिए कहा।
कभी-कभी, जब हमें बहुत भूख लगती है, तो हम जंगली शकरकंद की जड़ें खोदते हैं, जो इन इलाकों में तीन शाखाओं वाले पत्तों वाली लता के रूप में उगती है। ये शकरकंद, या जड़ें, आग में भूनने पर या नमक-पानी और करी पाउडर के साथ उबालने पर बहुत स्वादिष्ट और खाने में अच्छी लगती हैं। रात में मैं, मेरी पत्नी और बच्चे अन्नाइबिद्दाहल्ला नदी के किनारे खोदे गए एक गड्ढे में सोते हैं, जो चिनार नदी की एक छोटी सहायक नदी है, जैसा कि आप जानते होंगे, महोदय। गर्मी के मौसम में मैं शिकार करने जाता हूँ, जैसा कि

नहीं लगा, जहाँ से जानवर भागा था। यह देखकर हौसला बढ़ा कि कम से कम मेरी कुछ एल.जी. गोलियाँ निशाने पर लगी थीं, मैंने राइफल लेकर आगे बढ़ना शुरू किया, बायरा मेरे ठीक पीछे चल रहा था और मुझे निशानों का मार्गदर्शन कर रहा था। इस स्थिति में, मेरा काम जानवर पर पैनी नज़र रखना और हमला होने पर उससे निपटना था, जबकि बायरा, जो मेरे पीछे थोड़ी सुरक्षित स्थिति में था, अपने पीछा करने पर ध्यान केंद्रित कर सकता था।
पहले सौ गज के भीतर ही हम उस स्थान पर पहुँच गए जहाँ जानवर लेटा हुआ था, घास पर फैले गहरे लाल धब्बे और शरीर की स्पष्ट आकृति से यह पता चल रहा था। यहाँ से जानवर एक संकरे नाले के किनारे रेंगता हुआ चला गया, जिसके दोनों ओर घनी झाड़ियाँ उगी हुई थीं, और वहाँ उसका पीछा करना बेहद मुश्किल और खतरनाक हो गया।
हम दबे पांव आगे बढ़ते रहे, बीच-बीच में रुककर सुनते रहे। मैंने अपने सामने की हर झाड़ी को गौर से देखा, उसकी गहराई में धब्बेदार खाल की झलक पाने की कोशिश की, चाहे वो ज़िंदा हो या मरी हुई, हमें पता नहीं था। मैंने झाड़ियों के बीच उगी घनी जंगली घास को भेदने की कोशिश की, और पेड़ों और चट्टानों के तनों के पीछे देखने का प्रयास किया, जो सौभाग्य से वहाँ बहुत कम थे। इस तरह हम कुछ ही कदम आगे बढ़े थे कि अचानक, मेरे सामने ज़मीन में बने एक छेद से एक काली, घनी आकृति उठी, और उसके बगल में एक छोटी सी वैसी ही आकृति लुढ़कती हुई दिखाई दी। हम एक मादा भालू और उसके बच्चे के सामने आ गए, जो रात भर में नाले के तल में खोदे गए छेद में सो रही थी, जड़ों की तलाश में!
जैसे ही वह आधी उठी, मुझे उसकी छाती पर बना सफेद V का निशान साफ दिखाई दिया। उसकी छोटी-छोटी काली आँखों में हैरानी और फिर गुस्सा झलक रहा था। वह फिर से चारों पैरों पर नीचे झुक गई और सीधे हमारी ओर बढ़ने लगी। मैंने विंचेस्टर राइफल का मुंह लगभग उसके मुंह के पास लाकर ट्रिगर दबा दिया। तभी वह निर्णायक क्षण आया, जो शिकारी के जीवन और अपमानजनक मृत्यु का फैसला करता है: गोली चूक गई!
मादा भालू ने अपने जबड़े मेरे थूथन पर कसकर बंद कर लिए, और अपने लंबे पंजों वाले अगले पंजे से एक ही झटके में हथियार को मेरे हाथ से छीन लिया, जिससे वह कुछ पल के लिए उसके मुंह से हास्यास्पद रूप से लटका रहा, फिर उसने उसे ज़मीन पर गिरा दिया। अनजाने में ही मैं पीछे की ओर लड़खड़ा गया, और जैसे ही भालू मेरे चेहरे पर हमला करने के लिए उठी—जो कि मानव शरीर का वह हिस्सा है जिसे ये जानवर सबसे पहले काटते हैं—बायरा ने अपनी जान की कुर्बानी देने का प्रयास किया।
उसने फुर्ती से खुद को मेरे और उस क्रोधित जानवर के बीच में डाल दिया और आखिरी क्षण में उसके हमले को रोकने के लिए पूरी ताकत से चिल्लाया। वह केवल इतना ही सफल हुआ कि जानवर ने अपना ध्यान उसकी ओर मोड़ लिया, मानो कुछ पल के लिए वह मेरी मौजूदगी को भूल गया हो।
जैसे ही उसने आखिरी समय में अपना सिर झुकाया, भालू ने अपने नुकीले दांत बायरा के दाहिने कंधे में गाड़ दिए, जबकि उसके अगले पैरों के लंबे पंजे उसकी छाती, बगल और पीठ पर बुरी तरह से घायल हो गए। बायरा भालू के साथ नीचे गिर पड़ा। मैं गिरी हुई राइफल की ओर दौड़ा। मिसफायर कारतूस को निकालने के लिए नीचे वाले लीवर को चलाते हुए, मैंने देखा कि गिरने की वजह से राइफल का एक्शन जाम हो गया था। यह सब कुछ ही सेकंड में हो गया। बायरा दर्द से चीख रहा था, जबकि भालू बेरहमी से गुर्रा रहा था। लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ते हुए और राइफल को लाठी की तरह इस्तेमाल करते हुए, मैंने पूरी ताकत से जानवर के सिर के पिछले हिस्से पर वार किया। सौभाग्य से मेरा निशाना सही लगा, क्योंकि भालू ने बायरा को छोड़ दिया और बिजली की गति से राइफल को अपने मुंह में पकड़ लिया, इस बार बट से, और फिर से मेरे हाथ से हथियार छीन लिया। फिर वह बेरहमी से राइफल के बट को काटने लगा। ईश्वर की कृपा से, वह शावक, जो इतने समय तक पृष्ठभूमि में एक आश्चर्यचकित और स्पष्ट रूप से भयभीत गवाह के रूप में मौजूद था, अचानक डर के मारे सिसकियाँ और चीखें निकालने लगा। मानो जादू से, गुस्सैल माँ का ध्यान अपने बच्चे पर केंद्रित हो गया, क्योंकि उसने राइफल छोड़ दी और उसके पास दौड़ पड़ी। वहाँ उसने उसे सूंघकर यह सुनिश्चित किया कि सब ठीक है, और जिस अचानक से यह अवांछित जोड़ा वहाँ प्रकट हुआ था, उसी अचानक से वे गायब हो गए। अब आश्वस्त हो चुके उस शावक की कुछ अंतिम सिसकियाँ उस भयावह दृश्य की अंतिम ध्वनि बन गईं, जिससे उबरने में मुझे कई दिन लग गए।
बायरा घुटनों के बल ज़मीन पर पड़ा था, उसके शरीर से खून बह रहा था और वह ज़ाहिर तौर पर बहुत दर्द में था। मैं उसके पास गया, अपना कोट और कमीज़ उतारी, कमीज़ को फाड़कर उसके ज़्यादा गंभीर ज़ख्मों पर

पट्टी बाँधने और खून बहना रोकने की कोशिश की। फिर, उसे अपनी पीठ पर लादकर और अपनी क्षतिग्रस्त राइफल को साथ लेकर, मैं लड़खड़ाते हुए मवेशी बाड़े तक पहुँचा, जहाँ मैंने उसे एक चारपाई पर लिटाया। चार चरवाहे उसे मेरे शिविर तक ले गए, जहाँ मैंने उसके ज़ख्मों पर कच्ची आयोडीन डाली। शिविर में पहुँचकर कुछ ही पलों में मेरी गाड़ी 15 मील का सफ़र तय करते हुए पेन्नाग्राम गाँव के लिए रवाना हो गई, जहाँ औषधालय में उसे प्राथमिक उपचार दिया गया। तब तक बेचारा खून की कमी से कमज़ोर हो चुका था और लगभग बेहोश हो गया था। उसे वापस गाड़ी में बिठाकर, मैंने 61 मील का सफ़र लगभग रिकॉर्ड समय में तय किया, जहाँ एक बेहतरीन अस्पताल था।
उन पुराने दिनों में पेनिसिलिन का कोई नामोनिशान नहीं था, और बायरा ने अस्पताल में जो पहला हफ्ता बिताया, जब वह जीवन और मृत्यु के बीच जूझ रहा था और मैं उसके साथ था, वह बहुत चिंताजनक समय था। लेकिन उसके मजबूत शरीर ने उसका साथ दिया और पहले कुछ दिनों के बाद डॉक्टरों ने उसे पूरी तरह से खतरे से बाहर घोषित कर दिया। मैं पेन्नाग्राम लौट आया, जहाँ बायरा की पत्नी और बच्चे आए हुए थे और बेसब्री से खबर का इंतजार कर रहे थे। उन्हें कुछ आर्थिक सहायता देने के साथ ही मुझे एक आश्चर्य भी हुआ जब मुझे उस पैंथर की कीड़े लगी खाल सौंपी गई, जिसे मैं बाद की घटनाओं के उत्साह और दबाव में पूरी तरह से भूल गया था। ऐसा प्रतीत हुआ कि एक शव पर गिद्धों को देखकर तलवाड़ी के मवेशी बाड़े के कुछ चरवाहे आकर्षित हुए थे, जिन्होंने भालू के साथ हुई घटना स्थल से 200 गज के भीतर जानवर का शव पाया था। बताया गया कि वह एक विशाल नमूना था, लेकिन जैसा कि मैंने कहा, खाल कीड़े लगी हुई थी और उसे संरक्षित करना संभव नहीं था।
सलेम लौटते समय, मैंने बायरा के इलाज, खर्चों और मुथुर में उसके पैतृक स्थानों पर अंतिम वापसी के लिए पर्याप्त धन छोड़ दिया था, लेकिन क्षतिग्रस्त मांसपेशी के सिकुड़ने के कारण उसके दाहिने पैर में एक हल्का स्थायी लंगड़ापन रह जाने और घटना की याद दिलाने वाले कई स्थायी निशानों के साथ, उसे अपने परिवार के पास वापस जाने में दो महीने से अधिक समय लग गया।
मेरी राइफल को एक नए बट की ज़रूरत थी, और आज भी, उसके मुंह से छह इंच की दूरी पर, उस पर मादा भालू के दांतों के निशान मौजूद हैं। इस तरह उस साहसिक यात्रा का अंत हुआ जिसने बायरा और मेरे बीच एक तरह से रक्त-भाईचारा स्थापित किया, जो उसके द्वारा किए गए प्रसन्नतापूर्ण बलिदान और 'इससे बड़ा प्रेम किसी के पास नहीं हो सकता कि वह किसी दूसरे के लिए अपना प्राण न्योछावर कर दे' शब्दों की लगभग शाब्दिक पूर्ति पर आधारित था।
इस घटना के कई वर्षों बाद मेरी अगली कहानी, मुंडाचिपल्लम के आदमखोर बाघ की कहानी, लिखने का अवसर आया।
मुंडाचिपल्लम, जिसका तमिल में शाब्दिक अनुवाद मुंडाची की घाटी या धारा है, घाट खंड के निचले हिस्से से होकर बहने वाली एक छोटी सी नदी मात्र है। यह नदी पेन्नाग्राम गांव के 2,000 फुट ऊंचे पठार और कावेरी नदी के तल के बीचोंबीच स्थित है, जो समुद्र तल से लगभग 700 फुट ऊपर है। यह नदी घाट रोड को पार करती है, जो पेन्नाग्राम से कावेरी नदी तक खड़ी ढलान पर उतरती है। सड़क के अंत में लगभग चार मील की दूरी पर ऊतैमलाई का मछली पकड़ने वाला गांव है, जो होगेनैकल के प्रसिद्ध झरनों के ऊपर स्थित है। वन विभाग ने सड़क के किनारे मुंडाचिपल्लम के तट पर एक कुआं बनवाया है, ताकि मवेशियों, विशेष रूप से भैंसों और बैलों को पानी पिलाया जा सके। ये बैल लकड़ी और बांस से लदे भारी डिब्बों को खींचते हुए पेन्नाग्राम तक छह मील की खड़ी चढ़ाई शुरू करने से पहले पानी पीते हैं।
यह छोटा सा कुआँ, जो घने जंगल से घिरा हुआ है, सिवाय सड़क की संकरी पट्टी और मुंडाचिपल्लम की छोटी चौड़ाई के, जो समकोण पर एक दूसरे को काटते हैं, वह स्थान है जहाँ मेरी कहानी शुरू होती है और, अजीब बात है, समाप्त भी होती है, हालांकि कई मौतों के बाद, और मेरे शिकारी रंगा के बाल-बाल बचने के बाद। सुबह के लगभग 7:30 बजे थे, और ओस की बूँदें घास पर ऐसे टिमटिमा रही थीं मानो अनगिनत हीरे दूर-दूर तक बिखरे हों, जैसे वे आपस में मिल रही हों, झिलमिला रही हों और नवउदित सूर्य की किरणों को प्रतिबिंबित कर रही हों, जो विशाल 'मुथी' वृक्षों की पत्तीदार शाखाओं और जंगली कपास के पेड़ों के लंबे सीधे तनों से छनकर आ रही थीं, जो मुंडाचिपल्लम के उथले किनारों पर स्थित थे।
एक पुरुष और दो स्त्रियाँ, कावेरी नदी में रात भर पकड़ी गई मछलियों से भरी गोल बाँहों को लिए हुए, कुएँ के पास पहुँचे और अपना भारी बोझ कुएँ के चारों ओर बनी नीची दीवार पर रख दिया। पुरुष ने अपनी

उस दिन सुबह मैंने एक मोर का शिकार किया था, और हमने उसे जंगल के पारंपरिक तरीके से तैयार करके रात के खाने में खाया। सारे पंख, आंतें, सिर और गर्दन निकाल दिए जाते हैं। चाकू से पक्षी के मांस में चीरे लगाए जाते हैं, जिनमें स्वादानुसार नमक, मसाले, लौंग और करी पाउडर डाला जाता है। फिर पूरे शरीर पर नदी के किनारे से लाई गई ताज़ी, साफ़ मिट्टी की एक इंच से ज़्यादा मोटी परत चढ़ा दी जाती है, जिससे वह अंत में गीली मिट्टी के गोले जैसा दिखता है। अंगारों की आग जलाई जाती है, गोले को उस पर रखा जाता है, और चारों ओर और ऊपर से और भी अंगारे डाल दिए जाते हैं। लकड़ी डालकर आग को लगातार जलता रखा जाता है, लेकिन उद्देश्य धधकती आग के बजाय सुलगते अंगारे रखना होता है। कुछ समय बाद मिट्टी चटकने लगती है, और अंत में टुकड़ों में गिर जाती है। तब पक्षी को जलने से पहले निकालने का समय आ जाता है। मिट्टी में भूनने की कला में थोड़ा अभ्यास करने से, रात के खाने के लिए एक शानदार भुना हुआ मोर या जंगली मुर्गा तैयार किया जा सकता है, जो कई गृहिणियों को शर्मिंदा कर सकता है।

11

टैगार्थी के बाघ
मैसूर राज्य के शिमोगा जिले की पश्चिमी सीमा की यात्रा करने पर, आपको बैंगलोर और राज्य के पूर्वी हिस्सों के दृश्यों से बिल्कुल अलग दृश्य देखने को मिलेगा। यहाँ आप सदाबहार वनों के घने क्षेत्र में हैं, जो मूसलाधार मानसूनी वर्षा से पोषित होते हैं। शिमोगा शहर के पश्चिम में औसतन 120 इंच से अधिक वार्षिक वर्षा होती है और पश्चिमी घाट पर स्थित मैसूर राज्य की अंतिम सीमा, अगुम्बे गाँव में यह वर्षा 250 इंच से भी अधिक हो जाती है। विशाल वृक्ष, जिनकी पत्तियाँ आकाश तक पहुँचती हैं, और बड़े-बड़े वृक्ष-फर्न, जंगल और घाटियों से निकलने वाली असंख्य धाराओं के किनारे उगते हैं, जो सड़क के किनारे ताजे पानी का बारहमासी स्रोत हैं। यहाँ हर जगह घनी वनस्पति दिखाई देती है, जिसमें मध्य और पूर्वी दक्षिण भारत के जंगलों की कंटीली किस्में बिल्कुल नहीं पाई जातीं। इन जंगलों में घूमना- फिरना मुश्किल है, क्योंकि यहाँ पगडंडियाँ नहीं हैं। घनी झाड़ियाँ हर खुली जगह को ढके रहती हैं और सूरज की किरण पाने के लिए ऊपर की ओर बढ़ती रहती हैं। ऊँचे-ऊँचे पेड़ों के नीचे सब कुछ नम और अँधेरा है; आपको सिर्फ़ जंगली झींगुर की चहचाहट और मेंढक की टर्राहट ही सुनाई देगी। पत्तियों के नीचे चिपकी हुई जोंकें लचीली होकर फैलती हैं और पास से गुज़रने वाले किसी भी जीव को जकड़ लेती हैं। वे आपके कपड़ों में घुस जाएँगी, आपके जूतों, मोज़ों या मोज़ों के बीच से अपना रास्ता बना लेंगी और आपको पता भी नहीं चलेगा कि वे आपको दर्द दे रही हैं, जब तक कि आप नीचे न देखें और आपको अपने शरीर के किसी हिस्से से खून रिसता हुआ न दिखे। उन्हें हटाने की कोशिश करने पर वे एक भयंकर घाव छोड़ जाएँगी जो आमतौर पर मवाद बनकर बड़ा हो जाता है। इन इलाकों में हमेशा अपने पास रखने वाले साधारण नमक की थोड़ी सी मात्रा या तंबाकू का रस लगाने से वे अपने आप मुड़कर गिर जाएँगी। इसके बाद घाव बिना किसी देखभाल के अपने आप ठीक हो जाएगा।
यह हमद्र्याद या किंग कोबरा का घर है, जिसे 'नाया हन्ना' के नाम से जाना जाता है। यह कोबरा परिवार का एक विशालकाय सांप है जिसकी लंबाई पंद्रह फीट या उससे भी अधिक होती है। गहरे जैतून हरे रंग का, जिसके शरीर पर हल्के पीले-सफेद घेरे होते हैं, उसके काले, अंडाकार फन पर कोई स्पष्ट निशान नहीं होता। अपनी विशाल लंबाई के बावजूद, यह अविश्वसनीय रूप से तेज गति से चलता है और अन्य सांपों का शिकार करता है। यह आक्रामक होता है और कहा जाता है कि देखते ही हमला कर देता है। अपने बच्चों की रक्षा करने वाली मादा कोबरा विशेष रूप से गुस्सैल स्वभाव की मानी जाती है। मैं दो बार किंग कोबरा से उसके इलाके में मिला हूँ, एक बार जब मैं अगंबे के बाहर जंगल की धाराओं में रहने वाली सुंदर लाल और हरे रंग की चित्तीदार मछलियों के नमूने एकत्र कर रहा था; और दूसरी बार जब मैं ऑर्किड इकट्ठा कर रहा था। लेकिन दोनों ही बार उन्होंने आक्रामक व्यवहार नहीं किया। दोनों ही सांप मुझे देखकर रुक गए, अपना सिर जमीन से लगभग चार फीट ऊपर उठाया और अपने अंडाकार फन को थोड़ा फैलाकर अपनी चमकीली काली आँखों से मुझे ध्यान से और जिज्ञासा से देखते रहे। फिर वे बिना किसी नुकसान के अपने रास्ते चले गए।
ऊंचे वृक्षों की चोटियाँ सुंदर ऑर्किडों का घर हैं, जिनमें डेंड्रोबियम परिवार की छड़ी के आकार की शाखाएँ विशेष रूप से पाई जाती हैं। गर्मियों में उनके गुलाबी, पीले, सफेद या बैंगनी रंग के फूलों के गुच्छे ऊपरी छतों को रंग-बिरंगे ढंग से सजा देते हैं।
यह जिला शिरावती नदी से घिरा हुआ है, जिसका जल चार अलग-अलग धाराओं में भव्यतापूर्वक बहता है, और गेरसप्पा या जोग जलप्रपात में 950 फीट की सीधी ऊंचाई से गिरता है। यहां, चांदनी रात में, जल की भाप से बनी फुहारों के बीच इंद्रधनुष का दुर्लभ नजारा देखा जा सकता है।
सागर नामक छोटे कस्बे से ग्यारह मील दक्षिण-पूर्व में स्थित टैगार्थी गाँव सदाबहार वनों की पूर्वी सीमा पर बसा है, जहाँ वनों की कटाई करके खेती की जाती है। भारी वर्षा और उपजाऊ मिट्टी के कारण इस क्षेत्र में कृषि कार्य अत्यंत लाभदायक है। खुले मैदानों में घास भी खूब उगती है और प्रचुर चराई के कारण आसपास के गाँवों और बस्तियों में मवेशियों के विशाल झुंड पाले जाते हैं।

उसी समय कहानी का एक मनोरंजक अगला भाग घटित हुआ, जिसका अंत अप्रिय हो सकता था, लेकिन सौभाग्य से ऐसा नहीं हुआ। अँधेरे में अकेला रह गया बेचारा बैलगाड़ीवाला, बाघिन की म्याऊँ और उसके साथी की दहाड़ सुनकर चौंक गया। शायद उसके बैलों ने उनकी गंध पहचान ली हो, या उन्हें देख भी लिया हो, क्योंकि अचानक वे बैलगाड़ी लेकर भागे और नदी के किनारे की ओर दौड़ पड़े, जहाँ पहिए नरम रेत और पानी में फंस गए। बैलगाड़ीवाले की चीखें सुनकर, और यह सोचकर कि उस पर या उसके बैलों पर हमला हुआ है, हम मौके पर दौड़े, तो पाया कि सब ठीक था, सिवाय इसके कि वह बुरी तरह डर गया था। हम दोनों इस बात से खुश थे कि हालात ने हमें उस खुशहाल परिवार के किसी भी सदस्य को नुकसान पहुँचाने के लिए मजबूर नहीं किया।
कुछ समय के लिए मेरे मित्र, मैसूर चिकित्सा सेवा के डॉ. स्टेनली, अपने विभाग द्वारा टैगार्थी में तैनात थे, मुख्य रूप से मलेरिया के प्रकोप को रोकने के प्रयास में, जो वहां व्यापक रूप से फैला हुआ था और लगभग सभी निवासियों को प्रभावित कर रहा था। डॉक्टर एक उद्यमी व्यक्ति थे, जिन्हें शिकार का बहुत शौक था, और उन्होंने अपनी सेवा के दौरान कई बाघों का शिकार किया था।
एक रात देर से उन्हें बेलंदुर नामक एक छोटे से गाँव से प्रसूति संबंधी सूचना मिली, जो लगभग छह मील दूर था। अपने पेशे के अनुरूप, वे बैलगाड़ी से निकल पड़े, अपने साथ दवाइयों, इंजेक्शनों और पट्टियों से भरा थैला लिए हुए; उनकी 'गेको' स्मूथ बोर राइफल और एक पाँच सेल वाली टॉर्च ने उनके कर्तव्य में शिकार का स्पर्श जोड़ दिया।
वे एक घाटी से गुजर रहे थे तभी एक बाघ अचानक रास्ते के पार कूद पड़ा और किनारे पर अपने पिछले पैरों पर बैठकर गुजरती हुई गाड़ी को देखने लगा। स्टैनली ने जानवर पर गोली चलाई, जिसने जोर से दहाड़ मारी और गायब हो गया।
वह शांति से अपने गंतव्य की ओर बढ़ा, माँ को उसके बच्चे से मुक्त कराया और बाकी रात मरीज के साथ बिताई, अगली सुबह अपने एक परिचित छोटे लड़के के साथ लौटा ताकि वह और गाड़ीवान उस बाघ का पीछा करने में उसकी मदद कर सकें जिसे उसने पिछली रात घायल किया था।
मौके पर पहुँचकर उन्हें खून के निशान दिखाई दिए, जिनका पीछा करते हुए वे आगे बढ़ने लगे। गाड़ीवान ने यह बहाना बनाकर अपनी गाड़ी की ओर रुख किया कि वह अपने बैलों को अकेला नहीं छोड़ सकता। स्टेनली और लड़का कुछ दूर जाकर एक खोखले स्थान में प्रवेश कर गए, तभी अचानक उन्हें एक बाघ अपने सामने एक तरफ लेटा हुआ मिला। यह सोचकर कि वह मर गया है, लेकिन निश्चित होने के लिए स्टेनली ने उसकी पीठ पर एक एल.जी. (लॉन्ग-लेवल गन) से गोली चलाई। तभी बाघ उछल पड़ा, पलटकर उन पर हमला कर दिया। जैसे ही वह कूदा, स्टेनली ने अपनी बची हुई कारतूस की गोली, इस बार एक छोटी गोली, बाघ के मुंह में मार दी। तभी बाघ उस पर टूट पड़ा, उसे गिरा दिया और उसकी खोपड़ी का एक हिस्सा क्षतिग्रस्त कर दिया। उसी क्षण लड़का चीखता हुआ भाग गया, जिससे निस्संदेह स्टेनली की जान बच गई, क्योंकि बाघ ने उसे छोड़कर लड़के का पीछा किया और उस पर झपट्टा मारकर उसकी बगल में काट लिया। सिर में लगे घाव से बेसुध स्टेनली किसी तरह उठा और अपनी बंदूक में गोलियां भरने की कोशिश करने लगा, तभी अचानक बाघ लड़के को छोड़कर जंगल में कूद गया।
उस युवक की पीठ और बगल में गंभीर चोटें आई थीं, और उसके दो बड़े दांतों से बने गहरे घावों से खून बह रहा था। इसके अलावा, उसकी तीन पसलियां भी टूट गई थीं। स्टेनली ने अपनी फटी हुई कमीज को पट्टी की तरह इस्तेमाल करते हुए उसे जितना हो सके ठीक किया और बैलगाड़ी तक ले गया। फिर सत्रह मील की लंबी यात्रा सागर कस्बे के लिए शुरू हुई, और डॉक्टर की खुद की हालत लगातार खराब होती जा रही थी। वहां से वे शिमोगा के लिए ट्रेन में सवार हुए, जो लगभग पैंतीस मील दूर था, जहां एक जिला अस्पताल था।
यह बताना ही पर्याप्त होगा कि दोनों अपने इस साहसिक कार्य से उबर गए, हालांकि स्टेनली को अपने वरिष्ठ चिकित्सक से कड़ी फटकार मिली, जिन्होंने उसे याद दिलाया कि उसे टैगार्थी में एक डॉक्टर के रूप में तैनात किया गया था, न कि बाघों का शिकार करने के लिए।
उनकी जान बच जाना निस्संदेह इस तथ्य के कारण था कि बाघ बुरी तरह घायल हो गया था। स्टैनली द्वारा उसके मुंह में मारी गई आखिरी गोली ने संभवतः उसके निचले जबड़े को चकनाचूर कर दिया था, क्योंकि यह स्पष्ट था कि इसके बाद के दोनों हमलों में उसने केवल अपने ऊपरी नुकीले दांतों का ही इस्तेमाल किया था। यदि उसका निचला जबड़ा सही सलामत होता, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्टैनली और लड़का दोनों अगली सुबह देखने के लिए जीवित नहीं रहते।

फिर, जैसा कि मनुष्यों के साथ होता है, निरंतर सफलता ने अधिक दुस्साहस, परिणामों की अवहेलना और अंततः उस घोर लापरवाही और अति आत्मविश्वास को जन्म दिया जो बाघों और मनुष्यों दोनों के लिए विनाशकारी साबित होता है।
हमारा बाघ अभी तक इस अंतिम चरण तक नहीं पहुँचा था, हालाँकि वह उस ओर तेज़ी से बढ़ रहा था, क्योंकि वह करादिबेट्टा के सुरक्षित गढ़ों से दूर भटकता चला गया और दिन के समय वहाँ लौटने से इनकार कर दिया, जैसा कि वह अब तक करता आया था। इस तरह वह गौजा पहुँचा, जहाँ उसने गाँव से लगभग डेढ़ मील दूर स्थित एक गहरे नाले के किनारे अपना अस्थायी ठिकाना बनाया। इस आश्रय से वह मवेशियों के झुंडों पर हमला करता, उन्हें सुबह-शाम परेशान करता और हर हफ्ते कम से कम दो मोटे-ताज़े मवेशियों को मार डालता।
मुझे इस शिकारी के बारे में चिट्ठियाँ लिखी गई थीं, लेकिन मैंने उसकी गतिविधियों पर कभी ज़्यादा ध्यान नहीं दिया, क्योंकि आख़िरकार बाघों को जीने के लिए खाना तो चाहिए ही और यह बूढ़ा बाघ इंसानों को कोई नुकसान नहीं पहुँचा रहा था। कुछ कम मवेशियों से उन विशाल झुंडों को कोई फ़र्क नहीं पड़ता था।
समय बीतने के साथ-साथ उसकी हिम्मत और भी बढ़ती गई, और आखिरी रिपोर्टों से पता चला कि वह अपने शिकार को छोड़ने को तैयार नहीं था। जब चरवाहे उसे भगाने की कोशिश करते, तो वह जोर-जोर से दहाड़ता और उन पर झपट्टा मारता। यह सच था कि अब तक उसने किसी को चोट नहीं पहुंचाई थी, लेकिन शुरुआती संकेतों से मुझे पता चल गया था कि ऐसा किसी भी दिन हो सकता है। देर-सवेर कोई दूसरा आदमखोर ज़रूर सामने आएगा।
एक सुबह 9:30 बजे, मैं बैंगलोर से आने वाली मालगाड़ी से अदेरी के रेलवे स्टेशन पर उतरा। यहाँ से साढ़े तीन मील पैदल चलकर मैं टैगार्थी पहुँचा। वहाँ पुराने मित्रों ने मेरा स्वागत किया और मुझे बड़े सत्कार के साथ कॉफ़ी पिलाई, जबकि मेरे लिए गरमागरम भोजन तैयार किया जा रहा था। मैंने जितना हो सके उतनी खबरें इकट्ठा करने में समय बिताया, लेकिन इससे मुझे बाघों की मौजूदगी के सामान्य विवरण के अलावा कुछ खास जानकारी नहीं मिली; गौजा के साहसी बूढ़े बाघ ने विशेष प्रसिद्धि हासिल कर ली थी। भोजन के बाद मैं कार से गौजा के लिए लगभग छह मील की दूरी तय करने के लिए निकला, जहाँ सड़क की खराब हालत के कारण हम शाम 6 बजे तक नहीं पहुँच पाए। निवासियों से बातचीत करते हुए, मैंने अपना तम्बू लगभग तीन फर्लांग दूर, मुख्य धारा में मिलने वाले एक छोटे नाले के किनारे लगाया। बाघ लगभग एक मील आगे रहता था।
मुझे बताया गया था कि बाघ ने दो दिन पहले शिकार किया था। उसके बाद से कुछ नहीं हुआ था, लेकिन अगले अड़तालीस घंटों के भीतर अगला शिकार निश्चित रूप से होने वाला था।
अगले दिन दोपहर 1 बजे खबर आई कि बाघ ने एक और शिकार कर लिया है। मैं तुरंत मौके पर पहुँचा और पाया कि बाघ ने खुले मैदान के बीचोंबीच, सबसे नज़दीकी आश्रय से लगभग 300 गज दूर, एक गाय पर हमला किया था, उसे मार डाला और अपने छिपने की जगह पर ले गया, जो वही नाला निकला जिसमें मेरा तंबू लगा था। नाले की नरम रेत में बाघ के रेंगने के निशान थे, जहाँ से वह किनारे से कूदकर गाय की ओर भागा था। गाय ने बचने की कोशिश में थोड़ी दूर तक दौड़ लगाई, लेकिन बाघ ने उसे पकड़ लिया और मार डाला। फिर बाघ ने गाय को अपनी पीठ पर उठाया और नाले में लौट गया, जैसा कि घसीटने के निशान न होने से स्पष्ट था, हालाँकि वजन के कारण बाघ के पंजे मजबूत हो गए थे और जुते हुए खेत की खुरदरी मिट्टी में गहरे धंस गए थे।
मैंने जानवर या उसके शिकार को देखने की उम्मीद में सावधानीपूर्वक पदचिह्नों का पीछा किया। आखिरकार मुझे वह मिल भी गया, लेकिन उसने मेरी उम्मीद के मुताबिक खुद को प्रकट नहीं किया। जंगल के जीवों को ऐन समय पर चेतावनी देने वाली उस अवर्णनीय छठी इंद्री ने स्पष्ट रूप से इस बाघ को यह एहसास दिलाया कि यहाँ एक इंसान है जिसे उसे खुद को नहीं दिखाना चाहिए। जब वह अभी भी कुछ गज की दूरी पर झाड़ियों में छिपा हुआ था और मुझे दिखाई नहीं दे रहा था, तभी उसे मेरी उपस्थिति का एहसास हुआ, उसने धीमी आवाज में गुर्राया और खिसक गया।
पास ही एक उपयुक्त पेड़ था और मैंने अपनी चारपाई मचान लगा ली। मैं शाम चार बजे तक वहाँ पहुँच गया था। बाघ आठ बजे आया, लेकिन सीधे मेरी मचान के नीचे और उस पेड़ के पास खड़ा हो गया जिस पर मैं बैठा था। मुझे उसके कदमों की हल्की आहट से उसके आने का आभास हो गया। सूखे पत्तों की सरसराहट से उसके आने का पता नहीं चला, लेकिन खामोश रात की शांति में उसके कोमल, भारी कदमों की आहट साफ सुनाई दे रही थी। वह खुद को चाटने लगा, उसकी खुरदरी जीभ उसके चमकदार फर पर फिर रही थी, जिससे हल्की सी खरखराहट की आवाज

आ रही थी। फिर वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हुआ और पेड़ के तने पर अपने अगले पंजों के पंजों को साफ और तेज करने लगा। ऐसा करते हुए, उसने ऊपर मचान देखी। एक धीमी सी गुर्राहट के साथ वह चला गया, और उस रात फिर कभी नहीं लौटा।
अगले दिन कुछ नहीं हुआ, इसलिए दोपहर में मैंने एक बछिया को मुख्य नाले के तल में बांध दिया, जहाँ माना जाता था कि वह रहती थी, और नाले के ऊपर 60 डिग्री के कोण पर झुके हुए एक पेड़ पर बने मचान पर बैठ गया।
मैं दोपहर 3 बजे अपनी जगह पर तैनात था। शाम 5:30 बजे मुझे घसीटने की आवाज़ सुनाई दी और मैंने देखा कि बाघ झुंड से एक और गाय को खींचकर किनारे पर ला रहा था। वह लगभग 80 गज दूर था। मैंने उसकी गर्दन पर निशाना साधकर गोली चलाई, लेकिन जैसे ही मैंने गोली चलाई, बाघ आगे बढ़ गया और गोली उसे जानलेवा चोट के लिए ज़रूरी दूरी से काफी पीछे लगी। गोली लगने पर उसने खांसते हुए गुर्राया और उछलकर नाले की तलहटी में जा गिरा। मैं पेड़ से नीचे उतरा, अपना चारा डाला और विपरीत दिशा में गौजा की ओर लौट गया। मुझे पूरा भरोसा था कि अगली सुबह मैं उसे बिना किसी परेशानी के ढूंढकर मार डालूंगा। लेकिन मैं बुरी तरह गलत था, जैसा कि आगे होने वाली घटनाओं से पता चला।
भोर होते ही मैं गाँव के दो भरोसेमंद स्थानीय लोगों के साथ घटनास्थल पर वापस पहुँच गया। हमने नाले के तल पर बाघ के खून के निशान देखे, जो नाले के तल पर काफी दूर तक फैले हुए थे और फिर दूसरी तरफ चढ़ गए थे। हमने पूरी सावधानी से उनका पीछा किया, लेकिन जल्द ही पता चला कि जानवर आगे बढ़ता रहा, क्योंकि इस बात का कोई सबूत नहीं था कि वह अपने घाव से आराम करने के लिए बैठा था। लगभग दो मील चलने के बाद वह पहली बार रुका, गोली का असर महसूस करते हुए। फिर वह उठा और आगे बढ़ गया, और मैंने अनुमान लगाया कि वह अमलीगोला और उसके आगे बाघ अभ्यारण्य की ओर जा रहा था। वहाँ पहुँचते ही मुझे पता चल गया कि वह रास्ता भटक गया है, क्योंकि अभ्यारण्य में हथियार ले जाना, यहाँ तक कि घायल बाघ का पीछा करते समय भी, सख्त मना था। वह हमसे पूरी रात आगे निकल चुका था, और अपने घाव के बावजूद ऐसा लग रहा था कि वह आखिरकार अभ्यारण्य की शरण में पहुँच जाएगा।
आगे बढ़ते हुए, हमें दो और स्थान मिले जहाँ उसने विश्राम किया था। इनमें से पहले स्थान पर काफी खून था, और जहाँ वह लेटा था वहाँ घास दबी हुई थी। दूसरे स्थान पर खून काफी कम था, और उसके बाद निशान का पीछा करना कठिन हो गया। स्पष्ट रूप से खून का बहाव रुक रहा था; शायद बाहरी त्वचा के नीचे की वसा की परत गोली के छेद में समा गई थी और अत्यधिक रक्तस्राव को रोक दिया था।
हम जल्द ही अमलिगोला के इलाके में पहुँच गए और मुझे पता था कि बाघ को अभयारण्य की पश्चिमी सीमा पर बनी जंगल की आग की रेखा तक पहुँचने में अब बस एक मील का ही रास्ता बचा है। यहाँ हमारा भाग्य साथ दिया, क्योंकि हमें एक धारा मिली, जिसमें उस समय पानी के कुंड भरे हुए थे। नरम रेत पर बाघ के पैरों के निशान बता रहे थे कि उसने अभयारण्य की ओर जाने का इरादा बदल दिया था और पानी की तलाश में धारा के विपरीत दिशा में चला गया था। हमने उसका पीछा किया और पहले कुंड पर पहुँचे, जहाँ उसने पानी पिया था और उसके बाद काफी देर तक वहीं पड़ा रहा था, क्योंकि उस जगह से निकलने वाले पैरों के निशान अपेक्षाकृत ताज़े थे और एक घंटे के भीतर ही बने थे। इस तथ्य ने हमारी कम होती उम्मीदों को फिर से जगा दिया और हम एक फर्लांग आगे बढ़े, फिर हमें दूसरा कुंड मिला, जहाँ बाघ भी रुका हुआ था। पैरों के निशानों से अभी भी पानी रिस रहा था, और अब यह स्पष्ट था कि वह बस थोड़ी ही दूरी पर आगे था। हो सकता है उसने हमें आते हुए सुन लिया हो और बस आगे बढ़ गया हो।
मैंने उसके पीछे-पीछे चलने के बजाय रणनीति अपनाने का निश्चय किया, क्योंकि मुझे बहुत डर था कि वह दुम दबाकर पास ही स्थित अभयारण्य की ओर भाग जाएगा। मैंने अपने दोनों साथियों को पेड़ पर चढ़ने का इशारा किया और चुपचाप नाले के किनारे चढ़ गया। फिर मैं नाले के आधे मील आगे जाकर उससे मिला और बाघ को चौंकाने की उम्मीद में दबे पांव पीछे हटने लगा। पर मेरी यह कोशिश नाकाम रही, क्योंकि उसने मुझे देख लिया या सुन लिया और मेरी आशंका के मुताबिक वह किनारे से होते हुए अभयारण्य की ओर भाग गया। मैंने उसके खून के निशान का पीछा करते हुए उस जगह तक पहुँचा जहाँ वह घनी झाड़ियों के एक हिस्से में घुस गया था। मैंने उस हिस्से का चक्कर लगाया और दूसरे छोर पर एक पेड़ के तने के पीछे रुक गया। मैं वहाँ इंतज़ार करता रहा, लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया। अगर मैं अपने आदमियों को बुलाने की कोशिश करता तो बाघ सतर्क हो जाता, और मैं दुविधा में था कि आगे क्या करूँ। तभी उसने बड़ी मेहरबानी से

फिर मैंने पीछे मुड़कर देखा। दो झाड़ियों के बीच घायल बाघ था, अपने ही खून से लथपथ, वह पेट के बल रेंगता हुआ अपनी आखिरी छलांग से मुझे चौंकाने के लिए आगे बढ़ रहा था। हमारी नज़रें मिलीं, वह दहाड़ा और हवा में उछल पड़ा, तभी विंचेस्टर राइफल से दो बार गोलियां चलीं और उसकी शक्तिशाली गोलियां सीधे उस भयंकर बाघ के चेहरे पर जा लगीं। जैसे ही उसका भारी शरीर मेरे सामने गिरा, मैं एक तरफ हट गया, वह हवा में बेतहाशा उछला और फिर शांत हो गया, तभी मैंने एक और गोली बिल्कुल करीब से उसके दिल में दाग दी।
गौजा का वह उपद्रवी बूढ़ा बाघ करादिबेट्टा अभयारण्य तक पहुंचने में असफल रहा और अब वह मर चुका है।